A Daily News Magazine
भोपाल
गुरुवार, 7 नवंबर, 2024

सुबह सवेरे

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष -22 अंक-68 नगर संस्करण, पृष्ठ -8, मूल्य रू.- 2 (डाक पंजीयन संख्याः म.प्र./भोपाल/4-391/2018-20)

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

प्रसंगवश

ऐसे यूएनओ का क्या मतलब जो टूल की तरह इस्तेमाल हो

एन.के. सिंह

वर्तमान स्थितियों के मद्देनज़र यह ज़रूरी हो गया है कि या तो एक नयी ऐसी वैश्विक संस्था बने जो दक्षिणी दुनिया (गरीब देशों) को केंद्र में रखे या फिर यूएन में ही आमूल-चूल सुधार किया जाये। लेकिन क्या इतनी ईमानदारी से ऐसा संगठन बनाने को दुनिया के बड़े मुल्क आगे आयेंगे?

इजराइल-अरब संघर्ष और उसके पहले से चल रही रूस-यूक्रेन जंग के मद्देनज़र यूएनओ की ख़त्म या नगण्य होती भूमिका दुनिया के लिए चिंता का सबब है। यह वही दुनिया है जो अभूतपूर्व संकट-कोविड महामारी से निकल कर आ रही है और अब धीरे-धीरे आर्थिक अवसान से भी उबारना संभव हो पा रहा है। आखिर क्यों ढाई साल से चल रहे रूस-यूक्रेन युद्ध या वर्तमान में इजराइल-फिलस्तीन जंग का ख़तरनाक पश्चिम एशियाई विस्तार के बावजूद यह संगठन मूकदर्शक बना रहा? कोविड के संकट के दौरान इसकी भूमिका मात्र महामारी से मरने वालों के आँकड़े देने से ज़्यादा नहीं थी। वैक्सीन की खोज भी देशों ने अपने दम पर किया। यहाँ तक कि महामारी के लिए चीन प्रयोगशाला को दोषी ठहराने में भी यह आनाकानी करता रहा।

रूस-यूक्रेन युद्ध में यह पश्चिमी दुनिया के इशारे पर काम करता रहा। इजराइल-फिलस्तीन युद्ध में तो संगठन प्रमुख को इजराइली सरकार ने अपने देश में प्रवेश पर पाबन्दी लगा दी और उन्हें 'आतंकवादियों' का समर्थक करार दिया। किसी ने सोचा भी न था कि इजराइली हिमाकत इस कदर निडर होगी कि लेबनान में यूएन की शांति बहाली सेना पर ही हमला कर देगी। भारत के विदेश मंत्री ने ठीक ही कहा कि वीटो-शक्ति संपन्न पांच देशों ने इस संगठन को अपने हित-साधन का टूल मान लिया है। उनका मानना था कि यह स्थिति बदलनी होगी ताकि संगठन को उपादेय बनाया जा सके।

लेकिन यहाँ यह भी सोचना होगा कि आज इस संगठन को मूकदर्शक किसने बनाया। यह संगठन तो दूसरे विश्व युद्ध की विभीषिका से उपजी सामूहिक सकारात्मक सोच की उपज थी। इसे दुनिया के सभी देशों ने अपना 'पंच' माना था। फिर आखिर क्यों इसे बड़े मुल्कों ने अपने हित-साधन का टूल बनाया? इसकी सबसे ताक़तवर इकाई-सुरक्षा परिषद्–हर बार क्यों पांच देशों की वीटो शक्ति पक्षपाती प्रयोग से बाँझ होती गयी?

फिर संगठन के लगभग आठ दशक के अस्तित्व में दुनिया में जबरदस्त आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक बदलाव आये। ऐसे में केवल पांच देशों का चौधरापन कोई ऐसा देश कैसे बर्दाश्त करेगा जो अपने बूते पर उभरा। दक्षिण कोरिया 25 साल में कहाँ से कहाँ पहुंचा जबकि तानाशाह उत्तरी कोरिया उसे धमकाता रहा। भारत पांचवीं अर्थ-व्यवस्था बना जबकि कभी अमेरिका, तो कभी चीन पाकिस्तान को भारत के खिलाफ उकसा कर युद्ध करवाते रहे। यूएन को पुनर्जीवित करना है तो नए 'ग्लोबल प्लेयर्स' को भी सुरक्षा परिषद का स्थाई सदस्य बनाना होगा।

ब्रेटन वुड्स संस्थाएं- अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ़) और वर्ल्ड बैंक- भी अपने मूल उद्देश्यों की जगह अमेरिका और पश्चिमी देशों के हाथों की कठपुतली बनते गये। भारत की वित्तमंत्री निर्मला सीतारमण ने अमेरिका में एक पैनल डिस्कशन में बदलती मार्केट इकॉनमी के मद्देनज़र दोनों संस्थाओं से अपनी कार्यप्रणाली में सुधार लाने को कहा। इन दोनों संस्थाओं का जन्म 80 वर्ष पहले अमेरिका के ब्रेटन वुड्स शहर में 44 देशों की सहमति से बहुपक्षीय आर्थिक संस्थाओं के रूप में हुआ था।

आखिर क्यों रीजनल ग्रुप्स बन रहे हैं, क्यों ब्रिक्स या तमाम क्षेत्रीय संगठन द्वि-पक्षीय, त्रि-पक्षीय या बहु-पक्षीय आर्थिक ही नहीं, सामरिक समझौते कर रहे हैं? अगर यूएन समान भाव से सब को देखते हुए समस्याओं के निपटारे का फोरम बनाता तो परस्पर द्वंद्वात्मक संगठन क्यों खड़े होते?

यूएन के पास तो दुनिया में शिक्षा, स्वास्थ्य, ट्रेड, श्रम और शांति के लिए अलग-अलग उप-संगठन हैं। विकास के लिए समर्पित यूएनडीपी क्या वास्तव में अविकसित देशों को उठाने में कोई भूमिका अदा कर पा रहा है? आईएमएफ़ क्या आज के दौर में सही समय पर सही देश को बिना अमेरिकी हितों को संरक्षित किये उचित मदद दे पा रहा है?

लगभग 80 साल पहले यह संगठन तब बना था जब जंग की विभीषिका ने विश्व को दो भागों में बाँट दिया था- सोवियत संघ और अमेरिका। तब से आज तक परमाणु बम इफरात में आ चुके हैं और वो भी उन देशों में जिनके शासक असामान्य मानसिक स्थिति के लिए जाने जाते हैं। दुनिया में बढ़ते अशांत माहौल को देखते हुए इनका कब, कैसे और किस हद तक इस्तेमाल हो जाये, यह पहले से नहीं समझा जा सकता। वर्तमान स्थितियों के मद्देनज़र यह ज़रूरी हो गया है कि या तो एक नयी ऐसी वैश्विक संस्था बने जो दक्षिणी दुनिया (गरीब देशों) को केंद्र में रखे या फिर यूएन में ही अमूल-चूल सुधार किया जाये। लेकिन क्या इतनी ईमानदारी से ऐसा संगठन बनाने को दुनिया के बड़े मुल्क आगे आयेंगे? शायद शुरुआत छोटे और मंझोले देश करें जिनकी संख्या ज्यादा है। चूँकि ये बड़े उपभोक्ता भी हैं लिहाज़ा बड़े देश इन्हें नियंत्रित न कर सकें बशर्ते ये एक साथ रहें।

(सत्य हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

सुप्रभात

भावना का ज्वार-भाटा
आज विस्मित हो रहा है
शब्द सब अवकाश पर हैं
मौन मुखरित हो रहा है
वेदना लेकर विदाई
हो गयी विगलित हृदय से
आज हमने मुक्ति पा ली
चाहना के क्षीण भय से
आँसुओं का अर्घ्य देकर
मन समर्पित हो रहा है
शब्द सब अवकाश पर हैं
मौन मुखरित हो रहा है
ये समय का फेर कैसा
थम गया है शोर सारा
आँधियाँ भी थक चुकीं हैं
अब लगाकर ज़ोर सारा
गीत कोई अनसुना
हर ओर चर्चित हो रहा है
शब्द सब अवकाश पर हैं
मौन मुखरित हो रहा है
तोड़कर तटबंध सारे
मार्ग ढूँढ़ा चेतना ने
भर लिया ठहराव खुद में
आज इस विचलितमना ने
इक नये आयाम से फ़िर
चित्त परिचित हो रहा है
शब्द सब अवकाश पर हैं
मौन मुखरित हो रहा है।

- डॉ.पूनम यादव

सीएम डॉ. मोहन यादव बोले- मध्य प्रदेश के हर थाने में सायबर डेस्क

जिले में सायबर थाना और राज्यस्तरीय कॉल सेंटर बनेगा

सीएम ने भ्रामक जानकारी फैलाने वालों पर त्वरित कार्रवाई करने के निर्देश दिए

भोपाल (नप्र)। मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन ने आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस (एआई) के दुरुपयोग से बचने के लिए पुलिस को सतर्क रहने के लिए कहा है। मंत्रालय में गृह विभाग की समीक्षा करते हुए उन्होंने कहा कि प्रदेश पुलिस को 'फ्यूचर रेडी' यानी भविष्य के लिए तैयार रहने की आवश्यकता है।

इसके लिए सूचना प्रौद्योगिकी की अद्यतन तकनीकों का उपयोग किया जाए। प्रत्येक थाने में सायबर डेस्क, हर जिले में सायबर थाना और राज्य स्तर पर कॉल सेंटर बनाया जाए। सायबर धोखाधड़ी से लोगों को बचाने के लिए सघन जागरूकता अभियान चले।

हाल ही में बांधवगढ़ में 10 हाथियों की मौत के बाद मुख्यमंत्री ने कहा कि जिन जिलों में वन्य पशुओं की गतिविधियों से जन जीवन प्रभावित होने या जन हानि की आशंका है वहां वन विभाग से समन्वय और सूचनाओं का आदान-प्रदान करते हुए पुलिस सक्रिय रहे।

पुलिस सोशल मीडिया पर निगरानी रखे

मुख्यमंत्री ने कहा कि पुलिस सोशल मीडिया

पर चलने वाली गतिविधियों और मैसेज आदि पर निगरानी रखे। भ्रामक, गलत खबर फैलाने वालों पर त्वरित कार्रवाई करें। कानून-व्यवस्था के साथ अन्य भ्रामक खबरों के बारे में संबंधित विभाग को तथ्यों की जांच करने के लिए कहें जिससे वस्तुस्थिति पता चल सके।

नए क्रिमिनल कोड के संबंध में प्रशिक्षण दें। प्रत्येक प्रकरण की जांच और चालान प्रस्तुत करने के लिए आवश्यकतानुसार पेन ड्राइव, टेबलेट इत्यादि पुलिस स्टाफ को उपलब्ध कराने विभागीय स्तर पर बजट प्रविधान किया जाए। प्रत्येक संभाग में एफएसएल लैब बने। बैठक में मुख्य सचिव अनुराग जैन व अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

ये भी दिए निर्देश

- एडीजी स्तर के अधिकारी नियमित रूप से संभाग स्तर पर दौरे और अपराधों की समीक्षा करें।
- उज्जैन में महाकाल मंदिर क्षेत्र के प्रबंधन के लिए मंदिर क्षेत्र में थाना स्थापित करें।
- महिला अपराधों की रोकथाम के लिए विशेष प्रयास और महिला सशक्तीकरण पर केंद्रित गतिविधियां चलाएं।
- नाबालिग बालिकाओं के साथ दुष्कर्म के आरोपितों को कठोरतम दंड दिलाना सुनिश्चित करें। गुम बालिकाओं की बरामदगी के लिए विशेष अभियान चले।
- संदिग्ध हुक्काबार, नाइट क्लब आदि पर भी निगरानी बढ़ाएं। नशीले पदार्थों की तस्करी को रोकने के लिए पड़ोसी राज्यों से समन्वय कर अंतरराज्यीय गिरोहों के विरुद्ध अभियान चलाएं। नशे के नेटवर्क को ध्वस्त करने के लिए कड़ी निगरानी की जाए।
- पुलिसकर्मी और अधिकारी को स्वयं का आवास निर्मित करने के लिए विभाग की ओर से दी जाने वाली अनुमति और ऋण व्यवस्था की प्रक्रिया सरल बनाएं। समयबद्ध पदोन्नति हो।
- गौ-तस्करों पर भी कठोर कार्रवाई की जाए।
- मार्च 2026 तक नक्सली गतिविधियों को पूरी तरह से खत्म करें।

सीएम यादव बोले- कनाडा में देशद्रोहियों ने जहर घोलने का काम किया

इंदौर के छत्रीपुरा की घटना पर कहा- दोहरा रहा हूं, सरकार बर्दाश्त नहीं करेगी

इंदौर (नप्र)। इंदौर आए मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कनाडा में हिंदू मंदिर पर हमले की निंदा की। सीएम ने कहा, देशद्रोही लोगों ने हिंदू समाज के बीच जहर घोलने का काम किया है। विदेशी शक्तियां भी इसमें शामिल हैं। मैं देशभक्त सिख बंधुओं का धन्यवाद करता हूं, जिन्होंने आगे आकर इस घटना की निंदा की है।

छत्रीपुरा की घटना पर कहा, दोहराता हूं कि मध्यप्रदेश में हम सभी धर्मों का सम्मान करते हैं, लेकिन कोई कानून व्यवस्था को हाथ में लेगा तो सरकार बर्दाश्त नहीं करेंगे। दिवाली के दिन हिंदू समाज अगर पटाखे फोड़ता है तो कोई कैसे रोक सकता है। अगर रोकेगा तो सरकार को बर्दाश्त भी नहीं है।

आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत बोले-

भारत को दबाने की कोशिश कभी सफल नहीं होगी

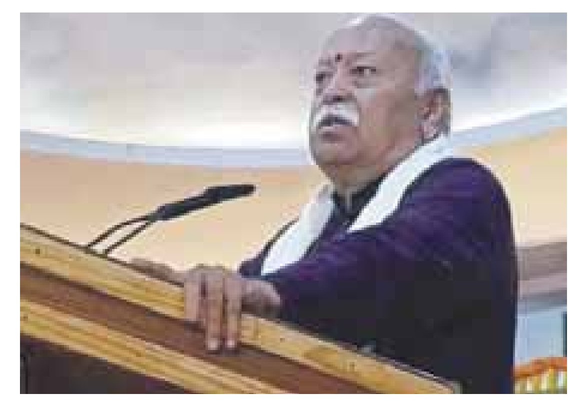

चित्रकूट में कहा-देश में धर्म-अधर्म की लड़ाई चल रही; सबको धारण करने वाला राम चाहिए

सतना (नप्र)। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के प्रमुख डॉ मोहन भागवत ने कहा है कि यह विश्व हमारे ऋषि-मुनियों को हुई सत्य की अनुभूति का परिणाम है। राष्ट्र की नींव में भी सनातन धर्म का वही मूल है, जिसमें सभी को धारण करने की क्षमता है। आज देश में धर्म-अधर्म की लड़ाई चल रही है। स्वार्थ का दैत्य भारत को दबाने की कोशिश में है, लेकिन उनकी कोशिशें कभी सफल नहीं होंगी, क्योंकि सत्य कभी दबता नहीं है।

ये बात भागवत ने चित्रकूट में आयोजित मानस मर्मज्ञ बैकुंठवासी पंडित रामकिंकर उपाध्याय जन्म शताब्दी समारोह में कही। कार्यक्रम में राष्ट्रीय संत मुरारी बापू समेत सहित कई संत, महंत और कथावाचक भी मौजूद रहे।

- **रूप-रंग, पूजा पद्धति अलग, फिर भी हम एक हैं-** संघ प्रमुख ने कहा- रूप-रंग और पूजा पद्धति में विविधता के बाद भी हम एक हैं। ऋषि-मुनियों को लगा कि हमें जो शाश्वत सत्य मिला वो सब को देना चाहिए तो बड़े परिश्रम के बाद राष्ट्र बना। हमारा राष्ट्र विश्व को धर्म देने के लिए बना, लेकिन धर्म ऐसे दिया नहीं जा सकता। धर्म की जानकारी से धर्म प्राप्त नहीं होता। धर्म के आचरण से धर्म प्राप्त होता है। महाभारत यह बताती है कि दुनिया कैसी है और रामायण यह बताती है कि उस दुनिया में हमें कैसे रहना है।

भागवत बोले- अब अपने देश को ठीक करना है

भागवत ने कहा कि अब अपने देश को ठीक करना है। धर्म-अधर्म की लड़ाई चल रही है। हम ईश्वर प्रदत्त अपना कर्तव्य अपना निभाएं, ये अपेक्षा है। यानी धर्म के पक्ष में खड़े हो जाएं, लेकिन ये होना है तो आचरण आना चाहिए। एक तरफ स्वार्थ का दैत्य उभरते भारत को दबाने का यानी सत्य को दबाने का प्रयास कर रहा है।

एयरपोर्ट्स पर कृपाण नहीं पहन सकेंगे सिख कर्मचारी

जत्थेदार बोले-यह धार्मिक स्वतंत्रता का उल्लंघन

अमृतसर (एजेंसी)। भारत के एयरपोर्ट्स पर सिख कर्मचारी कृपाण नहीं पहन सकेंगे। इसको लेकर 30 अक्टूबर को द ब्यूरो ऑफ सिविल एविएशन ने ऑर्डर जारी किए थे। एजेंसी ने अपने आदेश में कहा कि एयरपोर्ट्स पर कार्यरत सिख कर्मचारियों को सुरक्षा के मद्देनजर कृपाण नहीं पहन सकेंगे। एक दिन पहले ही सभी एयरपोर्ट्स के कर्मचारियों को यह गाइडलाइन मिली। एजेंसी की तरफ से कहा गया है कि सिक्योरिटी प्रोटोकॉल की वजह से ये आदेश जारी किए गए। जिसके बाद विवाद शुरू हो गया। श्री दमदमा साहिब के जत्थेदार ज्ञानी हरप्रीत सिंह ने इस निर्णय की आलोचना करते हुए इसे धार्मिक स्वतंत्रता का उल्लंघन बताया। उन्होंने कहा कि सिख धर्म में कृपाण एक पवित्र प्रतीक है और इसे धारण करना एक धार्मिक अधिकार है।

मिस्टर प्रेसीडेंट...डोनाल्ड ट्रंप

● अमरीका में एक बार फिर आ गई 'ट्रंप' सरकार ● 132 साल बाद रचा गया इस तरह का इतिहास

● रिपब्लिकन पार्टी को संसद में भी मिला बहुमत ● ट्रंप बोले-भगवान ने मेरी जान इसीलिए बचाई थी

वॉशिंगटन (एजेंसी)। डोनाल्ड ट्रम्प अमेरिका के 47वें राष्ट्रपति बन गए हैं। उन्हें 538 में से 277 सीटें मिली हैं, जो बहुमत के लिए जरूरी 270 सीटों से 7 ज्यादा हैं। डेमोक्रेटिक पार्टी की कैंडीडेट कमला हैरिस कड़ी टक्कर देने के बावजूद 224 सीटें ही जीत पाईं। ट्रम्प 2016 में पहली बार राष्ट्रपति बने थे और 2020 में जो बाइडेन से हार गए थे। ताजा नतीजों के बाद ट्रम्प दूसरे विश्व युद्ध के बाद पहले राजनेता हैं, जो 4 साल के गैप के बाद दोबारा राष्ट्रपति बनेंगे। अमेरिकी इतिहास में ट्रम्प पहले लीडर हैं जिन्होंने राष्ट्रपति चुनाव में दो बार महिला कैंडीडेट को हराया है। दिलचस्प फैक्ट यह भी है कि 2016 और 2024 के अलावा कभी भी कोई महिला राष्ट्रपति चुनाव नहीं लड़ी है। दोनों ही बार ट्रम्प ही चुनाव जीते हैं। अमेरिका में राष्ट्रपति पद के साथ संसद के दोनों सदन सीनेट और हाउस ऑफ रिप्रजेंटेटिव के भी चुनाव हुए हैं। सीनेट में 100 सीटें हैं। इसकी एक तिहाई सीटों पर हर 2 साल में चुनाव होते हैं। इस बार 34 सीटों पर चुनाव हुए।

एक बार फिर से अमेरिका को महान बनाऊंगा

जीत के बाद अमेरिकी लोगों को संबोधित करते हुए ट्रम्प ने कहा- एक बार फिर से अमेरिका को महान बनाऊंगा। भगवान ने मेरी जान इसी दिन के लिए बचाई थी। ट्रम्प पर 13 जुलाई को पेंसिलवेनिया में हमला हुआ था।

ऐतिहासिक जीत पर बधाई मेरे दोस्त...

नई दिल्ली (एजेंसी)। अमेरिका राष्ट्रपति चुनाव में एक बार फिर से डोनाल्ड ट्रंप का जादू चल गया। उन्होंने कमला हैरिस को हराते हुए राष्ट्रपति चुनाव को जीत लिया है। इस जीत के साथ ही वो अमेरिका के 47वें राष्ट्रपति होंगे। डोनाल्ड ट्रंप की इस ऐतिहासिक जीत पर पीएम मोदी ने भी उन्हें बधाई दी है। प्रधानमंत्री ने उम्मीद जताई है कि ट्रंप अपने पिछले कार्यकाल की सफलताओं को आगे भी जारी रखेंगे।

भोपाल का तापमान
अधिकतम 30 °c
न्यूनतम 20°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ गुरुवार, 7 नवंबर 2024

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

संक्षिप्त समाचार

कार के ड्राइविंग लाइसेंस पर भी चला सकेंगे ट्रांसपोर्ट गाड़ी

याचिका खारिज

नई दिल्ली (एजेंसी)। देश की शीर्ष अदालत ने आज एक कानूनी सवाल पर अपना फैसला सुनाया है। सुप्रीम कोर्ट ने कहा है कि सड़क एक्सीडेंट के लिए केवल लाइट मोटर व्हीकल लाइसेंस रखने वालों को आरोपी नहीं बनाया जा सकता। रोड एक्सीडेंट की और भी दूसरी वजह

हो सकती है। सुप्रीम कोर्ट की 5 जजों की पीठ ने लाइट मोटर व्हीकल लाइसेंस धारकों के पक्ष में फैसला सुनाते हुए कहा कि ये लोग 7500 किलो से हल्के ट्रांसपोर्ट वाहन भी चला सकते हैं। सुप्रीम कोर्ट ने अपने ही 2017 में दिए फैसले को बरकरार रखा है। इस समय कोर्ट ने कार लाइसेंस रखने वालों को 7500 किलो से कम परिवहन वाहनों को चलाने की अनुमति प्रदान की थी।

अकबरुद्दीन ओवैसी ने फिर किया '15 मिनट' का जिक्र

- 2012 में कहा था-15 मिनट के लिए पुलिस हटा लो

संभाजीनगर (एजेंसी)। ऑल इंडिया मजलिस-ए-इत्तेहादुल मुस्लिमीन के विधायक अकबरुद्दीन ओवैसी मंगलवार को संभाजीनगर (औरंगाबाद) में चुनाव प्रचार कर रहे थे। इस दौरान अकबरुद्दीन ने कहा- कैंपेनिंग का टाइम है 10 बजे, अभी 9.45 बजे हैं, अभी 15 मिनट बाकी हैं...चुनावी सभा में आए लोगों से अकबरुद्दीन ने कहा, अरे भाई 15 मिनट बाकी है, सब्र करिए, न वो मेरा पीछा छोड़ रही है, न मैं उसका पीछा छोड़ रहा हूं। चल रही है, मगर क्या गूंज है। औवेसी के इस विवादित बयान को 12 साल पहले दिए गए भाषण से जोड़ा जा रहा है। दरअसल, 2012 में भी अकबरुद्दीन ने 15 मिनट वाला भड़काऊ बयान दिया था। तब कहा था- देश से 15 मिनट के लिए पुलिस हटा दो तो पता चल जाएगा, कौन ताकतवर है।

सरकारी कर्मी और जजों पर केस चलाने से पहले लेनी होगी इजाजत

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने पीएमएलए से जुड़े एक मामले में महत्वपूर्ण टिप्पणी की। कोर्ट ने कहा कि सरकारी अधिकारियों और जजों के खिलाफ उनकी पब्लिक ड्यूटी के दौरान हुए कथित अपराध के मामले में उन पर पीएमएलए (मनी लॉन्ड्रिंग एक्ट) के तहत तहत केस चलाने के लिए सरकार से मंजूरी लेनी होगी। सीआरपीसी की धारा-197 (1) के तहत प्रावधान है कि सरकारी कर्मी के खिलाफ केस चलाने के लिए सरकार के संबंधित अथॉरिटी से मंजूरी लेनी होती है। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि सीआरपीसी का यह प्रावधान पीएमएलए केस में भी लागू होता है। सुप्रीम कोर्ट में तेलंगाना हाई कोर्ट के फैसले को ईडी ने चुनौती दी थी। जिसमें हाई कोर्ट ने एक आईएएस अधिकारी के खिलाफ बिना स्वीकृति के केस चलाए जाने को खारिज कर दिया था। हाई कोर्ट के फैसले को ईडी ने सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी थी। सुप्रीम कोर्ट के जस्टिस एएस ओका की अगुवाई वाली बेंच ने सुनवाई की।

छठ महापर्व का दूसरा दिन

खरना का महाप्रसाद ग्रहण कर रखेंगे 36 घंटे का निर्जला व्रत

आज घाटों पर गूंजेंगे लोकगीत

भोपाल (नप्र)। नहाय-खाय के साथ शुरू हुए लोक आस्था के महापर्व छठ का बुधवार को दूसरा दिन था। मंगलवार को भोजपुरी व पुरबिया समाज के घरों में व्रतियों ने एकासन व्रत किया। घरों में कद्दू की सब्जी और दाल भात को भोजन में शामिल किया गया। बुधवार को घरों में खरना रस्म होगी और गुरुवार को शहर के तालाबों, घाटों समेत 50 स्थानों पर करीब डेढ़ लाख श्रद्धालु डूबते सूर्य को अर्घ्य देकर पूजा-आराधना करेंगे। कई घाटों में मेले भी लगेंगे, भोजपुरी लोकगीत गूंजेंगे।

बिहार सांस्कृतिक परिषद छठ पूजा सरस्वती मंदिर समिति ई सेक्टर बरखेड़ा भोपाल में 7 नवंबर शाम 4 बजे एवं 8 नवंबर प्रातः 5 बजे से चंदन तिवारी, रितिम दुबे एवं गायक आकाश मिश्रा लोकगीतों की प्रस्तुति देंगे। अभी तक इस घाट पर लगभग 2000 परिवार घाट बनाने के लिए पंजीयन करा चुके है। बता दें कि 1960 में स्थापित सरस्वती देवी मंदिर छठ घाट प्रांगण में निर्मित चार सूर्य कुंडो में छठ महापर्व का आयोजन समिति द्वारा विगत 65 वर्षों से लगातार किया जा रहा है।

खरना प्रसाद ग्रहण कर व्रती लेंगे संकल्प- छठ महापर्व के दूसरे दिन व्रती खरना करेंगे, जिसमें गन्ने के कच्चे रस या गुड़, दूध और अरवा चावल से महाप्रसाद (खीर) तैयार किया जाएगा। पर्व के तीसरे दिन कार्तिक शुक्ल षष्ठी 7 नवंबर(गुरुवार) को धृति योग, रवियोग व जयद योग में अस्ताचल गामी सूर्य को अर्घ्य दिया जाएगा। मान्यता है कि अर्घ्य देने से मानसिक शांति, उन्नति व प्रगति होती है। 8 नवंबर (शुक्रवार) को कार्तिक शुक्ल

सप्तमी उत्तराषाढ़ नक्षत्र के साथ व्रती घाट पर उगते सूर्य को दूध तथा जल से अर्घ्य देकर व्रत का समापन करेंगे।

घाट सजकर तैयार

शीतलदास की बगिया समेत कई घाटों पर महापौर मालती राय ने भी श्रमदान कर सफाई कार्य में हिस्सा लिया। भोजपुरी एकता मंच के अध्यक्ष कुंवर प्रसाद ने बताया कि गुरुवार को शीतलदास की बगिया घाट पर भगवा ध्वज, भगवा पर्दे व भगवा रंग की ही चुनरी से सजावट की जाएगी। छठ पूजा शाम 4 बजे से शुरू होगी। वहीं बरखेड़ा के सरस्वती मंदिर परिसर में चार जल कुंड बनाए गए हैं। करीब दो हजार लोगों को पूजा स्थल आवंटित कर नंबर दिए गए हैं। जिसे जो नंबर मिला है, वह उसी नंबर वाले स्थान पर पूजा करने बैठेगा। यहां मेला भी लगेगा। मेले में अधिकांश दुकानों पर फलाहारी सामग्री ही रखी जाएगी।

जेपी अस्पताल में दोबारा शुरू हुई ईको और टीएमटी जांच

बीपीएल कार्ड धारकों को नहीं लगेगी फीस, सामान्य लोगों को प्रति जांच चुकाने होंगे 500 रुपए

भोपाल (नप्र)। ट्रेड मिल टेस्ट (टीएमटी) या कार्डियक स्ट्रेस टेस्ट, हार्ट की स्थिति का आकलन करने के लिए किया जाने वाला एक आम टेस्ट है। इसके अलावा हार्ट से संबंधित समस्याओं की पहचान के लिए ईको की जांच भी अब जेपी अस्पताल में होगी। बीते माह यह सुविधा जेपी अस्पताल में शुरू की गई। अब तक सभी मरीजों को यह मुफ्त दी जा रही थी।

अस्पताल प्रबंधन की माने तो इसके दाम तय नहीं हुए थे, मंगलवार को प्रबंधन द्वारा दोनों जांच के रेट तय कर दिए गए हैं। जिसके तहत अब एक जांच के लिए पांच सौ रुपए का शुल्क देना होगा। वहीं दोनों जांच के लिए एक हजार रुपए लगेंगे। राहत की बात यह है कि बीपीएल

(गरीबी रेखा से नीचे) कार्ड धारकों के लिए यह जांच मुफ्त रहेंगी। बताया जा रहा है कि इससे पहले करीब 8 साल पहले तक यह जांच जेपी अस्पताल में होती थीं।

चार अस्पतालों में यह सुविधा

जेपी अस्पताल राजधानी का चौथा सरकारी अस्पताल है, जहां ईको टीएमटी जांच की जा रही है। इसके अलावा यह सुविधा हमीदिया अस्पताल, एम्स भोपाल और बीएमएचआरसी में उपलब्ध है। इन अस्पतालों में भी बीपीएल कार्ड धारकों को यह सुविधा मुफ्त दी जाती है। अन्य मरीजों के लिए सभी अस्पतालों के रेट अलग-अलग हैं। बीएमएचआरसी में ईको के लिए 1200 और टीएमटी के लिए 440 रुपए का शुल्क देना पड़ता है। वहीं हमीदिया अस्पताल में ईको 500 और टीएमटी सिर्फ 300 रुपए में की जा रही है। बता दें कि टीएमटी मशीन में एक तरह की मूविंग बेल्ट लगी है। जिस पर चलते समय सांस फूलने, हार्ट ब्लॉकेज जैसी बीमारी का ईको के जरिए पता लगाया जाता है।

भोपाल से चोरी हुआ शिवलिंग मिला

अज्ञात व्यक्ति ने उसी स्थान पर रखा; लोगों ने की पूजा-अर्चना

भोपाल (नप्र)। भोपाल की सुभाष कॉलोनी में 31 अक्टूबर दिवाली की रात चोरी हुआ शिवलिंग मिल गया है। कॉलोनी के लोगों ने बुधवार की सुबह शिवलिंग को उसी स्थान पर देखा, जहां से चोरी गया था। अज्ञात व्यक्ति ने इस शिवलिंग को चोरी किया था, अब दुबारा रख भी दिया। यह घटना अशोका गार्डन की सुभाष कॉलोनी की है। चोरी हुआ शिवलिंग एक पीपल के पेड़ के नीचे स्थापित था, शिवलिंग मिलने के बाद वहां पूजा-अर्चना की गई। अशोका गार्डन पुलिस के मुताबिक शिवलिंग चोरी की घटना सुभाष कॉलोनी में चर्च के पास हुई थी। यहां पर दिनेश गोस्वामी नाम के एक शख्स का निवास है। हर रोज की तरह 1 नवंबर की सुबह वह शिवलिंग की पूजा करने पहुंचे। मूर्ति को गायब देख, उन्होंने कॉलोनी के अन्य लोगों के साथ मिलकर पुलिस को सूचना दी थी। पुलिस ने मौके पर पहुंचकर देखा कि पत्थर के नंदी जी को नहीं चुराया गया, केवल शिवलिंग गायब था। पुलिस ने आसपास के लोगों से पूछताछ की लेकिन आरोपी के संबंध में जानकारी नहीं मिली। तब पुलिस ने मामले की जांच शुरू की थी। कॉलोनी में ही रहने वाले एक परिवार पर लोगों को संदेह था। इस परिवार के मुखिया से भी पुलिस ने पूछताछ की थी। इसके बाद अचानक शिवलिंग उसी स्थान पर स्थापित हो गया, जहां से चोरी गया था।

स्थानीय रहवासी करते थे हर रोज पूजा

पीपल के पेड़ के नीचे स्थापित शिवलिंग की पूजा रोजाना रहवासी किया करते थे। यहां कई लोग दर्शन और पूजा करने आते थे, शिवरात्रि और सावन मास में यहां भक्तों की भीड़ रहती है।

यूपी में भीषण सड़क हादसा

10 लोगों की मौत

हरदोई (एजेंसी)। हरदोई में डीसीएम (ट्रक) ने ऑटो को रौंद दिया। हादसे में 10 लोगों की मौत हो गई। 5 गंभीर हैं। मरने वालों में 6 महिलाएं और 2 बच्चे भी हैं। टक्कर इतनी तेज थी कि ऑटो उछलकर दूर जा गिरा। पूरी छत उड़ गई। अंदर बैठी सवारियां बाहर आ गिरीं। सड़क पर लाशें बिखर गईं। हादसा बुधवार दोपहर बिलग्राम थाना के रोशनपुर गांव के पास हुआ। पुलिस का कहना है- ऑटो बिलग्राम की तरफ जा रहा था। अचानक बेकाबू होकर सड़क पर पलट गया, तभी सामने से आ रहे डीसीएम ने ऑटो को रौंद दिया। घटना के बाद डीसीएम चालक भाग गया। एसपी नीरज कुमार जादौन ने बताया- दोपहर 12.30 बजे हादसे की सूचना मिली। मैं मौके पर पहुंचा। घायलों को अस्पताल भिजवाया। ऑटो में 15 लोग सवार थे। इस वजह से हादसा हुआ।

हरदोई जिले का मामला, सड़क पर दूर तक बिखरी पड़ी थीं लाशें

ऑटो पलटा तो तेज रफ्तार ट्रक ने रौंदा, ऑटो की पूरी छत उड़ गई

आज पटना में होगा शारदा सिन्हा का अंतिम संस्कार

- घर पर दर्शन के लिए रखी गई पार्थिव देह

पटना (एजेंसी)। बिहार की मशहूर लोक गायिका शारदा सिन्हा का पार्थिव शरीर पटना के राजेन्द्र नगर स्थित आवास पर लाया गया है। सीएम नीतिश कुमार ने घर पहुंचकर उन्हें श्रद्धांजलि दी। कल (गुरुवार) को उनका अंतिम संस्कार पटना के गुलबी घाट पर राजकीय सम्मान के साथ होगा। बीजेपी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा गुरुवार शाम शारदा सिन्हा के राजेन्द्र नगर स्थित घर जाकर उन्हें श्रद्धांजलि देंगे। मंगलवार रात दिल्ली एम्स में शारदा सिन्हा का निधन हो गया। वे 72 साल की थीं। छठ के गाए उनके गीत बेहद मशहूर हुए और इस पर्व के पहले ही दिन उन्होंने अंतिम सांस ली। दिल्ली एम्स ने बताया कि सेप्टिसीमिया (ब्लड इंफेक्शन) की वजह से शारदा सिन्हा की मौत हुई। 26 अक्टूबर को तबीयत बिगड़ने के बाद उन्हें दिल्ली एम्स में भर्ती कराया गया था।

जेके विधानसभा में 370 बहाल करने का प्रस्ताव पास

जम्मू (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर विधानसभा सत्र के तीसरे दिन अनुच्छेद 370 की बहाली का प्रस्ताव पास किया गया। बीजेपी विधायकों के विरोध के बीच डिप्टी सीएम सुरिंदर कुमार चौधरी यह प्रस्ताव विधानसभा में रखा, जिसे सत्तारूढ़ नेशनल कॉन्फ्रेंस और कांग्रेस का समर्थन मिला। बीजेपी विधायकों ने इसे राष्ट्रविरोधी एजेंडा बताते हुए 5 अगस्त जिंदाबाद और जहां हुए बलिदान मुखर्जी, वह कश्मीर हमारा है के नारे लगाए। बीजेपी नेताओं ने आरोप लगाया कि अब्दुल्ला परिवार और नेशनल कॉन्फ्रेंस लोगों को भावनात्मक तौर पर ब्लैकमेल करने के लिए यह प्रस्ताव पास किया है, जबकि अनुच्छेद 370 हटाने का फैसला फाइनल है। 5 अगस्त 2019 को केंद्र सरकार ने जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 हटाने और राज्य को दो केंद्रशासित प्रदेश में बांटने का फैसला किया था। इस फैसले को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी गई। 11 दिसंबर 2023 को सुप्रीम कोर्ट ने पांच जजों की पीठ ने केंद्र के फैसले को बरकरार रखा था। पिछले दिनों हुए विधानसभा चुनाव में नेशनल कॉन्फ्रेंस ने अपने घोषणापत्र में पूर्ण राज्य का दर्जा लेने और अनुच्छेद 370 को बहाल करने का वादा किया था।

- बीजेपी विधायकों ने लगाए '5 अगस्त जिंदाबाद' के नारे

तीन शादी, 5 बच्चे, रियल एस्टेट किंग

वाशिंगटन (एजेंसी)। डोनाल्ड ट्रंप के पिता का नाम फ्रेडरिक सी ट्रंप है। फ्रेडरिक सी ट्रंप न्यूयॉर्क के रियल स्टेट डेवलपर और कारोबारी थे। डोनाल्ड ट्रंप की मां का नाम मैरी ए मैकक्लियोड है। डोनाल्ड ट्रंप कुल पांच भाई-बहन हैं। रॉबर्ट एस ट्रंप ने 2016 में राष्ट्रपति पद के चुनाव के वक्त अपने भाई डोनाल्ड का समर्थन किया था जबकि इस साल छपी अपनी किताब में फ्रेडरिक जूनियर के बेटे फ्रेड ट्रंप ने अपने चाचा डोनाल्ड को अपने परिवार में घृणित व्यक्ति बताया था।

डोनाल्ड ट्रंप की पहली शादी इवाना ट्रंप से हुई थी। वह चेक-अमेरिकी मॉडल और कारोबारी थीं। डोनाल्ड ट्रंप की इवाना से शादी 1977 से 1992 तक चली। इस दौरान उनके तीन बच्चे हुए। जिनके नाम डोनाल्ड जूनियर, एरिक और इवांका हैं। इवाना की 2022 में मौत हो गई थी। डोनाल्ड ट्रंप की दूसरी पत्नी एक्ट्रेस और मॉडल मार्ला मेपल्स थीं। इस शादी से डोनाल्ड की एक बेटी हुई जिसका नाम टिफनी ट्रंप है। आखिरी शादी मेलानिया ट्रंप से 2005 में हुई थी।

शिंदे की 10 गारंटी, किसानों का होगा लोन माफ

महायुति का विजन महाराष्ट्र

25 लाख नौकरियां,छात्रों को 10 हजार रुपए महीने का भी वादा

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र के सीएम ने महायुति गठबंधन के घोषणा पत्र के 10 प्रमुख वादों का ऐलान किया। मंगलवार को कोल्हापुर में जनसभा के दौरान उन्होंने कहा कि विजन महाराष्ट्र 2029 के लिए सरकार बनने के 100 दिनों के भीतर इन वादों को पूरा किया जाएगा। शिंदे ने कहा कि महायुति का पूरा घोषणा पत्र आने वाले दिनों में सार्वजनिक किया जाएगा। इस दौरान महाराष्ट्र के दोनों डिप्टी सीएम देवेंद्र फडणवीस और अजित पवार भी मौजूद थे। महाराष्ट्र में सिंगल फेज में 20 नवंबर को वोटिंग है और 23 नवंबर को रिजल्ट घोषित होगा। प्रमुख वादों में लाड़ली बहन योजना की राशि 1500 से बढ़ाकर 2100 करना, बिजली बिलों में 30 फीसदी तक की कमी, वृद्धावस्था पेंशन की राशि 1500 से 2100 रुपए करना, 25 लाख नौकरियां देने का वादा शामिल है। शिंदे बोले- कांग्रेस खटाखट करती रही, एक रुपया नहीं दिया, हमने पटापट पैसे डाले। उन्होंने कहा था- मेरी लाडली बहना से पूछिए कि क्या उन्हें 1500 रुपए से फायदा हो रहा है। मैं एक गरीब किसान परिवार से हूं।

भोपाल में प्रापर्टी की कलेक्टर गाइडलाइन बढ़ाने का निर्णय होल्ड

भोपाल की 243 लोकेशन पर प्रॉपर्टी के रेट 5 प्रतिशत से 200 प्रतिशत प्रतिशत तक बढ़ाने का प्रस्ताव विभाग की ओर से मिला था।

भोपाल (नप्र)। भोपाल की कुल 243 लोकेशन में प्रॉपर्टी के रेट 5 से 200 प्रतिशत तक रेट बढ़ाने का प्रस्ताव फिलहाल होल्ड पर चला गया है। केंद्रीय मूल्यांकन कमेटी की मीटिंग से पहले बुधवार सुबह भोपाल सांसद आलोक शर्मा ने वित्त मंत्री जगदीश देवड़ा से उनके आवास पर मुलाकात की। इससे बाद क्रेडाई सदस्यों भी वित्त मंत्री से मुलाकात करने पहुंचे। सांसद शर्मा ने वित्त मंत्री देवड़ा को जमीनों के बढ़े हुए भाव को लेकर लिखित शिकायत भी की। सांसद शर्मा ने कहा, चर्चा के बाद वित्त मंत्री ने भोपाल में कलेक्टर गाइड लाइन बढ़ाने पर फिलहाल रोक लगा दी है। अब जनप्रतिनिधियों के साथ चर्चा करने के बाद ही कलेक्टर गाइड लाइन पर अंतिम मुहर लगेगी। जनप्रतिनिधियों के साथ अगली बैठक के बाद ही भोपाल में जमीनों के बढ़े हुए दामों को लेकर फैसला होगा। बता दें कि भोपाल में रेसिडेंशियल, कमर्शियल और एग्रीकल्चर में एवरेज 8.55 प्रतिशत तक गाइडलाइन बढ़ाने का प्रस्ताव है। विधायक भगवानदास सबनानी की आपत्ति के बाद 13 लोकेशन हटा दी गई है। यानी, 240 लोकेशन पर रेट बढ़ेंगे। इसी का विरोध हो रहा है। बुधवार सुबह भोपाल सांसद आलोक शर्मा ने क्रेडाई सदस्यों के साथ वित्त मंत्री जगदीश देवड़ा से उनके आवास पर मुलाकात की।

भोपाल सांसद बोले- जनप्रतिनिधियों से चर्चा के बाद ही होगा फैसला

मैं आज वित्त मंत्री जी से मिला हूं। भोपाल की 243 लोकेशन पर प्रॉपर्टी के रेट 5 प्रतिशत से 200प्रतिशत प्रतिशत तक बढ़ाने का प्रस्ताव विभाग की ओर से मिला था। इस पर मैंने वित्त मंत्री जी से आग्रह किया है कि भोपाल को लेकर कोई भी प्रस्ताव आता है तो सबसे पहले उस पर जनप्रतिनिधियों से चर्चा होना चाहिए। भोपाल के सांसद और विधायकों से इसे लेकर कोई चर्चा नहीं की गई। वित्त मंत्री जी ने मेरी बात मानी और बहुत ही जल्दी भोपाल के सभी जनप्रतिनिधियों के साथ वित्त मंत्री जी की अध्यक्षता में बैठक होगी। उसके बाद हमारे सुझावों के आधार पर ही सरकार निर्णय लेगी। केंद्रीय मूल्यांकन समिति की तय बैठक तो होगी, लेकिन भोपाल को लेकर जो भी निर्णय होगा, वो जनप्रतिनिधियों की बैठक के बाद ही होगा।

सर्किल रेट वृद्धि पर क्रेडाई का विरोध: क्रेडाई (कॉन्फेडरेशन ऑफ रियल एस्टेट डेवलपर्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया) के अध्यक्ष मनोज मीक समेत क्रेडाई सदस्यों ने भी वित्त मंत्री से मुलाकात की। अध्यक्ष मीक ने कहा कि भोपाल में सर्किल रेट में प्रस्तावित अत्यधिक वृद्धि का रियल एस्टेट उद्योग, आम जनता और प्रधानमंत्री के 'हाउसिंग फॉर ऑल' मिशन के लक्ष्य पर गलत प्रभाव पड़ेगा। पिछले दशक में इंदौर के मुकाबले भोपाल में सर्किल रेट में कई गुना वृद्धि पहले ही हो चुकी है। जिससे संपत्ति बाजार अस्थिर हो गया है। इसका परिणाम यह हुआ कि भोपाल में निवेश में कमी आई है और संपत्तियों की कीमतें इतनी बढ़ गई हैं कि निम्न और मध्यम वर्ग के लोगों के लिए घर खरीदना एक बड़ी चुनौती बन गया है। लगभग सर्किल रेट बढ़ाने से प्रॉपर्टी टैक्स में सीधी वृद्धि होती है। जिससे आमजन बुरी तरह प्रभावित हो रहे हैं।

राजस्व में भी वृद्धि नहीं: मीक ने बताया, इस प्रकार की नीतियों का प्रतिकूल प्रभाव राज्य के राजस्व पर भी पड़ सकता है। दिल्ली, उत्तर प्रदेश और हरियाणा जैसे राज्यों के अनुभव से यह साबित हुआ है कि अत्यधिक सर्किल रेट से संपत्ति लेन-देन में कमी आती है, जिससे राजस्व में अपेक्षित वृद्धि नहीं होती।

क्रेडाई की यह मांग

अध्यक्ष मीक ने बताया, हमारी मांग है कि राज्य सरकार गाइडलाइन रेट प्री-कोविड इयर के स्तर लाए, उपबंधों को तत्काल समाप्त करें और अगले तीन वर्ष के लिए सर्किल रेट में कोई वृद्धि न करें। इस अवधि में निवेश, व्यापार और राजस्व की स्थिति का निष्पक्ष आंकलन किया जाए। यह कदम जनहित में होगा राज्य, राजधानी और राजस्व के विकास में योगदान देगा। सरकार से आग्रह है कि इस वृद्धि पर पुनर्विचार कर लोकहित और आर्थिक स्थिरता सुनिश्चित करें।

विधायक को भी सौंपा था आवेदन

सर्किल रेट में अत्यधिक वृद्धि के विरोध में मंगलवार को क्रेडाई के सदस्यों ने मूल्यांकन बोर्ड के सदस्य और विधायक सबनानी को प्रतिवेदन सौंपकर इस वृद्धि के प्रति अपना कड़ा विरोध जताया था। बुधवार को क्रेडाई प्रतिनिधिमंडल डिप्टी सीएम और वित्त मंत्री जगदीश देवड़ा से भी मिला।

चार्टर्ड अकाउंटेंट से जुड़े 5 ठिकानों पर ईडी का छापा

- भोपाल में टैक्स-ऑडिट के दस्तावेज खंगाल रही टीम; सुबह 6 बजे से कार्रवाई जारी थी

भोपाल (नप्र)। भोपाल में बुधवार सुबह अरेरा कॉलोनी स्थित एक चार्टर्ड अकाउंटेंट के घर पर प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) की टीम ने छापेमारी की है। जांच के दौरान अफसरों ने अकाउंट संबंधी दस्तावेज जब्त किए हैं। चार्टर्ड अकाउंटेंट के अरेरा कॉलोनी स्थित मकान के साथ ही भोपाल में 4 अन्य सहयोगियों के यहां भी कार्रवाई चल रही है। इस के दौरान सीए से जुड़े कई लोगों या कंपनियों के टैक्स, ऑडिट दस्तावेजों में गड़बड़ी का खुलासा हो सकता है। कार्रवाई सुबह करीब 6 बजे से जारी है। सीए जीएसटी कंसल्टेंसी का भी काम करते हैं। कंपनी को 46 साल पहले रजिस्टर्ड बताया जा रहा है, जो टैक्सेशन, ऑडिट, फाइनेंशियल कॉर्पोरेट और मैनेजमेंट अफेयर्स के मामले हैंडल करती है। चार्टर्ड अकाउंटेंट का घर अरेरा कॉलोनी में है। दो मंजिला मकान के बाहर केंद्रीय पुलिस बल तैनात है। हालांकि अधिकारी इस मामले में कुछ भी कहने से बच रहे हैं। जिस सीए के यहां छापा पड़ा है, उसका काम उनके बेटे और उनकी सहयोगी टीम देखती है। इस कम्पनी के खिलाफ मनी लॉन्ड्रिंग की शिकायत होने की बात भी सामने आ रही है। जिसके बाद ये कार्रवाई की जा रही है।

भारत हेवी इलेक्ट्रिकल्स कामगार ट्रेड यूनियन का प्रदर्शन

- स्पोर्ट्स क्लब को बचाने सड़क पर उतरे भेल के कर्मचारी और श्रमिक

भोपाल (नप्र)। भेल स्पोर्ट्स क्लब को बचाने के लिए बुधवार को भेल के कर्मचारियों और श्रमिकों ने फाउंड्री गेट पर प्रदर्शन किया। प्रदर्शन का आव्हान कामगार ट्रेड यूनियन 'सीटू' ने किया था। श्रमिक नेता दीपक गुप्ता ने कहा कि स्पोर्ट्स क्लब भेल परिवार की संपत्ति है। राज्य सरकार को किसी भी कीमत पर भेल खेल प्राधिकरण नहीं दिया जाएगा। बता दें कि राज्य सरकार भेल के स्पोर्ट्स क्लब को हासिल करना चाहती है। गुप्ता ने कहा कि राज्य सरकार के मंत्री भेल के अधिकारियों पर दबाव बनाकर स्पोर्ट्स क्लब को हथियाना चाहते हैं, ऐसा किसी कीमत पर नहीं होने दिया जाएगा।

वे कहते हैं कि आज से चरणबद्ध आंदोलन शुरू किया है और अगले चरण में हस्ताक्षर अभियान चलाया जाएगा। अभियान के दौरान भेल के सभी कर्मचारियों से हस्ताक्षर कराकर कार्यपालक निदेशक को हस्ताक्षर पत्र सौंपा जाएगा। उसके बाद आगे की रणनीति तय की जाएगी। प्रदर्शन में लोकेंद्र शेखावत, शाहिद अली, विनय सिंह, कुलदीप मौर्य, सादिक खान, नरेश जादौन, गोपाल गुप्ता सहित सैकड़ों भेल कर्मचारी शामिल हुए।

उज्जैन के आसमां में रोमांच, 9 से स्काई डाइविंग फेस्टिवल

- 10 हजार फीट ऊंचाई से लगाएंगे छलांग; 3 महीने चलेगी एक्टिविटी
- पर्यटन मंत्री धर्मेंद्र भाव सिंह लोधी ने स्काई ड्राइविंग फेस्टिवल 2024-25 के संबंध में संवाद किया

भोपाल (नप्र)। उज्जैन में 9 नवंबर से स्काई डाइविंग फेस्टिवल शुरू हो रहा है। पहली बार यह लगातार 3 महीने चलेगा। 10 हजार फीट की ऊंचाई से लोग छलांग लगा सकेंगे। एमपी में लगातार चौथे साल स्काई डाइविंग फेस्टिवल हो रहा है। पिछले 3 फेस्टिवल भी भोपाल-खजुराहो के अलावा उज्जैन में हो चुके हैं। अब चौथा फेस्टिवल भी वहीं पर होगा। मंत्री धर्मेंद्र भाव सिंह लोधी ने बताया कि प्रदेश में एडवेंचर टूरिज्म को बढ़ावा देने के उद्देश्य से यह स्काई डाइविंग फेस्टिवल हो रहा है। यह उज्जैन में अगले साल 9 फरवरी तक चलेगा।

एयर स्पेश खाली, मौसम भी बेहतर: प्रमुख सचिव पर्यटन एवं संस्कृति विभाग, प्रबंध संचालक टूरिज्म बोर्ड शिवशेखर शुक्ला ने बताया, स्काई डाइविंग फेस्टिवल के तीन संस्करण की सफलता व एडवेंचर गतिविधि के प्रति पर्यटकों के उत्साह को देखते हुए इस साल उज्जैन में चौथा संस्करण (तीन माह के लिए) आयोजन किया जा रहा है।

उज्जैन में दताना एयरस्ट्रिप पर एडवेंचर लवर्स असमान में उड़ने के रोमांच का अनुभव कर पाएंगे। उज्जैन में पिछले साल करीब साढ़े 5 करोड़ पर्यटक पहुंचे थे। इसलिए उज्जैन का चयन किया गया है। इसके अलावा यहां एयर स्पेस खाली है। मौसम भी बेहतर रहता है।

ऑनलाइन बुकिंग शुरू, अब तक 100 ने कराई

स्काई डाइविंग करने का समय सुबह 8 से शाम 5 बजे तक रहेगा। इसके लिए अभी से बुकिंग शुरू हो चुकी है। 100 से ज्यादा ने बुकिंग कराई है। बुकिंग पर की जा सकती है।

1000 प्रतिभागियों की उम्मीद

इस संस्करण में आयोजक संस्था स्काय हाई इंडिया द्वारा स्पेशल स्काई-डाइविंग एयरक्राफ्ट न्यू क्रेस्ना 182P खरीदा गया है। जिसकी क्षमता कुल 6 सदस्यों की है। जिसमें एक बार में 2 प्रतिभागी, 2 एक्सपर्ट के साथ स्काई डाइविंग कर सकेंगे। प्रमुख सचिव शुक्ला के मुताबिक, इन तीन माह में 1000 से अधिक प्रतिभागियों के सम्मिलित होने की संभावना है।

आधुनिक और बेहद सुरक्षित होगी राइड: स्काई डाईविंग का संचालन डायरेक्टरेट जनरल ऑफ सिविल एविएशन (डीजीसीए) एवं यूनाइटेड स्टेट पैराशूट एसोसिएशन (यूएसपीए) द्वारा प्रमाणित संस्था 'स्काई-हाई इंडिया' द्वारा किया जा रहा है। स्काई डाइविंग में उपयोग किए जाने वाला एयरक्राफ्ट नागरिक विमानन निदेशालय से पंजीकृत है। संस्था द्वारा उच्चतम मानकों के साथ प्रशिक्षित स्काई डाइवर के सहयोग से स्काई डाइविंग कराई जाएगी।

एक करोड़ 24 लाख के सात विकास कार्यों का किया भूमि-पूजन

भोपाल (नप्र)। पिछड़ा वर्ग एवं अल्पसंख्यक कल्याण राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्रीमती कृष्णा गौर ने गोविंदपुरा क्षेत्र में एक करोड़ 24 लाख के सात विकास कार्यों का भूमि-पूजन किया। राज्य मंत्री श्रीमती गौर ने कहा कि क्षेत्र में विकास की रफ्तार यूं ही जारी रहेगी। राज्यमंत्री श्रीमती गौर ने इंद्रपुरी के सी सेक्टर में 45 लाख रुपए लागत की बीमा हॉस्पिटल से चीनी टाइल्स तक सीसी सड़क निर्माण कार्य का भूमि-पूजन किया। उन्होंने श्री दुर्गा मंदिर इंद्रपुरी सेक्टर ए में लगभग 7 लाख रुपए की बाउंड्री वॉल के निर्माण कार्य का भूमि-पूजन किया। कर्मवीर नगर में 22 लाख रुपए लागत के कम्युनिटी हॉल के निर्माण कार्य का भूमि-पूजन किया। राज्यमंत्री श्रीमती गौर ने नरेला शंकरी में भवानीधाम के अपोजिट साइड पर 8 लाख रुपए लागत के आरसीसी नाली निर्माण कार्य का भूमि-पूजन किया। इसके साथ ही साई धाम कॉलोनी में 14 लाख रुपए लागत की सीसी रोड और रिटेनिंग वाल का भूमि-पूजन किया। इसकी नीरजा नगर फेस-2 के सामने पार्क में 9 लाख रुपए लागत के प्लेटफार्म शेड और एक्यूप्रेशर ट्रैक के निर्माण कार्य का भूमि-पूजन किया। पार्षद श्रीमती उर्मिला मोर्य, श्रीमती शिरोमणि शर्मा, श्रीमती ममता विश्वकर्मा, श्रीमती छाया ठाकुर, श्री जीत राजपूत, श्री मनोज विश्वकर्मा, श्री छोटू पंडित, श्री लवकुश यादव, श्री भीकम सिंह यादव आदि मौजूद रहे।

पिछड़ा वर्ग पोस्ट मैट्रिक छात्रवृत्ति के नवीनीकरण आवेदन पत्र भरने की प्रक्रिया प्रारंभ

- आयुक्त, पिछड़ा वर्ग एवं अल्पसंख्यक कल्याण ने विभागीय जिला अधिकारियों को दिए निर्देश

भोपाल (नप्र)। पिछड़ा वर्ग पोस्ट मैट्रिक छात्रवृत्ति योजना में शैक्षणिक सत्र 2024-25 के मध्यप्रदेश ट्राइवल अफेयर्स एण्ड शड्यूल कॉस्ट वेलफेयर ऑटोमेशन सिस्टम (एमपीटीएएएस) पोर्टल पर नवीनीकरण आवेदन पत्र ऑनलाइन भरने की प्रक्रिया प्रारंभ कर दी गई है। पिछड़ा वर्ग एवं अल्पसंख्यक कल्याण आयुक्त, श्री सौरभ सुमन ने नवीनीकरण आवेदन पत्र ऑनलाइन भरने की प्रक्रिया प्रारंभ करने की जानकारी देते हुए पिछड़ा वर्ग एवं अल्पसंख्यक कल्याण विभाग के सभी जिला अधिकारियों को आवश्यक निर्देश भी जारी किए है।

बैतूल के युवक ने भोपाल की होटल में किया सुसाइड

मां की फटकार से नाराज होकर आया था,आत्महत्या से पहले बहनों को किया था फोन

भोपाल (नप्र)। भोपाल के एमपी नगर थाना इलाके में स्थित होटल कान्हा क्रिस्टल के रूम में ठहरे युवक ने सुसाइड कर लिया। घटना मंगलवार की है। मां की फटकार से नाराज होकर युवक बैतूल से भोपाल आया था। आत्महत्या के पहले उसने अपनी बहनों को फोन कर सुसाइड करने के बारे में जानकारी भी दी थी। होटल का स्टाफ व पुलिस उसे अस्पताल लेकर पहुंचे थे। वहां उसे मृत घोषित कर दिया गया। पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है। एसआई केपी सिंह ने बताया कि विशाल (26) पुत्र मूलचंद निवासी बैतूल एक कंस्ट्रक्शन ठेकेदार के पास काम करता था। तीन दिन पहले काम पर नहीं गया तो मां ने उसे डांट दिया था। इसके बाद वह घर पर बिना बताए भोपाल आ गया। यहां आकर एमपी नगर स्थित कान्हा क्रिस्टल होटल में रूका। मंगलवार को उसने अपनी दोनों बहनों को कॉल कर बताया कि वह जिंदगी से परेशान होकर आत्महत्या कर रहा है।

शव को बैतूल लेकर रवाना हुए परिजन: थोड़ी देर बाद उसने होटल के स्टाफ को भी जहर खाने की बात बता दी। होटल प्रबंधन ने पुलिस को सूचना दी। उसे पहले जेपी और बाद में हमीदिया अस्पताल ले जाया गया। यहां पर उसे मृत घोषित कर दिया गया। पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है। पोस्टमॉर्टम के बाद विशाल के शव को परिजनों को सौंप दिया गया है। वे उसे लेकर बैतूल रवाना हो गए। सुसाइड नोट न मिलने के कारण खुदकुशी की वजह सामने नहीं आ सकी है।

प्रदेश में 20 डिग्री से नीचे पहुंचा रात का तापमान

पचमढ़ी सबसे ठंडा,12.2 डिग्री सेल्सियस; एक्सपर्ट बोले-गेहूं की बोवनी के लिए अच्छा मौसम

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश में रातें ठंडी हो गई हैं। सभी शहरों में रात का तापमान 20 डिग्री सेल्सियस से नीचे है। पचमढ़ी सबसे ठंडा है। यहां पारा 12.2 डिग्री पहुंच गया है। मौसम वैज्ञानिकों की मानें तो 15 नवंबर से ठंड का असर बढ़ेगा। उत्तरी हवाएं चलने से पारे में और भी गिरावट होगी। हालांकि, कृषि वैज्ञानिक मौजूदा मौसम को गेहूं की बोवनी के लिए अच्छा बता रहे हैं। कृषि विज्ञान केंद्र, शाजापुर के वरिष्ठ वैज्ञानिक एसएस धाकड़ ने बताया कि 20 अक्टूबर के बाद से चने की बोवनी शुरू हो गई जबकि अब गेहूं की बोवनी की जानी है। गेहूं के लिए 18 से 20 डिग्री के बीच टेम्प्रेचर होना चाहिए। फिलहाल, ऐसा ही मौसम है इसलिए किसान गेहूं फसल की बोवनी कर सकते हैं। बता दें कि एमपी में करीब सवा लाख हेक्टेयर में गेहूं की फसल होती है।

एम.पी. ट्रांसको ने लक्ष्य से पहले ऊर्जीकृत किया भोपाल में 500 एम.व्ही.ए. क्षमता का पावर ट्रांसफार्मर

भोपाल (नप्र)। एम.पी. ट्रांसको (मध्यप्रदेश पावर ट्रांसमिशन कंपनी) ने भोपाल सूखी सेवनिया स्थित अपने 400 के.व्ही. सबस्टेशन में भोपाल एवं मध्यप्रदेश का दूसरा 400/220/132 के.व्ही. 500 एम.व्ही.ए. क्षमता का पावर ट्रांसफार्मर स्थापित कर ऊर्जीकृत करने में सफलता हासिल की है। एम.पी. ट्रांसको के मुख्य अभियंता श्री प्रवीण गार्गव ने बताया कि लगभग 25 करोड़ रूपये की अनुमानित लागत से स्थापित इस ट्रांसफार्मर को भोपाल एवं उससे जुड़े क्षेत्रों में रबी सीजन के दौरान बढ़ने वाले लोड की संभावना को ध्यान में रखकर समय पूर्व इसे ऊर्जीकृत किया गया। इस उपलब्धि पर ऊर्जा मंत्री श्री प्रद्युमन सिंह तोमर एवं अपर मुख्य सचिव ऊर्जा श्री मनु श्रीवास्तव ने इस कार्य से जुड़े अधिकारियों/कर्मचारियों को बधाई दी है।

भोपाल समेत अन्य क्षेत्रों को होगा भरपूर फायदा: इस ट्रांसफार्मर की स्थापना से भोपाल के शहरी और औद्योगिक क्षेत्र के अलावा बैरागढ़, विदिशा, गंजबसोदा, शुजालपुर, मुगालियाछाप को इसी रबी सीजन में भरपूर फायदा मिलेगा। साथ ही आष्टा, उज्जैन क्षेत्र को भी जरूरत पड़ने पर सूखी सेवनिया (भोपाल) 400 के.व्ही. सबस्टेशन से सपोर्ट मिल सकेगा। इस ट्रांसफार्मर के ऊर्जीकृत होने से 400 के.व्ही. सबस्टेशन भोपाल की क्षमता 1630 एम.व्ही.ए. की हो गई है।

भोपाल जिले की ट्रांसफार्मेशन कैपेसिटी में बढ़ोतरी

भोपाल जिले में एम.पी. ट्रांसको अपने 18 सबस्टेशनों से विद्युत पारेषण करती है, जिसमें 400 के.व्ही. का 1, 220 के.व्ही. के 4 तथा 132 के.व्ही. के 13 सबस्टेशन शामिल हैं। इस ट्रांसफार्मर के ऊर्जीकृत होने से भोपाल जिले की कुल ट्रांसफार्मेशन कैपेसिटी अब 4463 एम.व्ही.ए. की हो गई है।

80484 एम.व्ही.ए. हो गई है एम.पी. ट्रांसको की कुल स्थापित क्षमता

एम.पी. ट्रांसको की कुल स्थापित ट्रांसफार्मेशन क्षमता बढ़कर अब 80484 एम.व्ही.ए. की हो गई है। इसमें 400 के.व्ही. में 11380 एम.व्ही.ए., 220 के.व्ही. में 33230 एम.व्ही.ए. तथा 132 के.व्ही. में 35874. एम.व्ही.ए. क्षमता विद्यमान है। एम.पी. ट्रांसको मध्यप्रदेश में अपने 416 अति उच्चदाब सबस्टेशनों के माध्यम से विद्युत पारेषण करती है। इसमें 400 के.व्ही. के 14, 220 के.व्ही. के 88 तथा 132 के.व्ही. के 314 सबस्टेशन शामिल हैं। एम.पी. ट्रांसको के प्रदेश में कुल 1021 पावर ट्रांसफार्मर क्रियाशील हैं।

संपादकीय

ट्रंप की जीत और भारत की उम्मीदें

अमेरिकी राष्ट्रपति के चुनाव रिपब्लिकन पार्टी के उम्मीदवार डोनाल्ड ट्रंप की जीत की औपचारिक घोषणा ये पंक्तियां लिखे जाने तक नहीं हुई थी, लेकिन ये तय है कि डोनाल्ड ट्रंप ने पिछला चुनाव हार कर दमदार वापसी की है। अमेरिका के इतिहास में ऐसा 132 साल बाद हुआ है। ट्रंप की इस शानदार जीत पर भारतीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने उन्हे अपना दोस्त बताते हुए बधाई दी है। उन्होंने एक्स पर अपनी पोस्ट पर लिखा कि ट्रंप के पिछले कार्यकाल की सफलताओं की तरह इस दफा भी भारत अमेरिका की व्यापक वैश्विक रणनीतिक साझेदारी को मजबूत करने के लिए सहयोग को आगे बढ़ाने के लिए उत्सुक हैं। ट्रंप ने चुनाव में अपनी प्रतिद्वंद्वी और डेमोक्रेटिक पार्टी की उम्मीदवार कमला हैरिस को पछाड़कर जीत के लिए जरूरी 270 इलेक्टोरल वोट के आंकड़े को पार कर लिया है। ट्रंप से पहले ग्रोवर क्लीवलैंड 1884 में और फिर 1892 में राष्ट्रपति बने थे। अमेरिकी राष्ट्रपति के चुनाव पर सारी दुनिया की नजर लगी थी। ऐसा लगता है कि अमेरिकी मतदाता ने ट्रंप में एक मजबूत नेता की छवि देखी। जबकि तमाम प्रगतिशीलता के बावजूद अमेरिकी मानस एक महिला को देश की राष्ट्रपति बनाने के पक्ष में नजर नहीं आया। वैसे ट्रंप की जीत एक बड़ी वजह ग्रामीण क्षेत्रों से मिला समर्थन है। ट्रंप की विजय के पीछे जो बाइडेन सरकार के प्रति एंटी इनकम्बेंसी भी एक कारण बताई जाती है। हालांकि कस्बों और शहरी क्षेत्रों में कमला हैरिस को समर्थन ज्यादा मिला। लेकिन हिस्पेनिक और अश्वेतों के बीच ट्रंप काफी लोकप्रिय रहे। ट्रंप की जीत पर भारत के कई हिंदूवादी संगठनों ने खुशी जाहिर की है। जहां तक भारत और अमेरिका के भावी सम्बन्धों की बात है तो जानकारों के अनुसार ये मिले जुले हो सकते हैं। यानी कुछ मुद्दों पर फायदा तो कुछ पर नुकसान। वैसे ट्रंप और मोदी की ट्यूनिंग इतनी अच्छी रही है कि ट्रंप के पहले कार्यकाल में मोदी अमेरिका में भारतीय के बीच अबकि बार ट्रंप सरकार का नारा भी दे चुके हैं। लेकिन दो देशों के बीच रिश्ते केवल जज्बात के बजाय व्यावहारिक धरातल पर तय होते हैं। भारत के संदर्भ में ट्रंप का रवैया कभी नरम तो कभी गरम का रहा है। उदाहरण के लिए ट्रंप की आर्थिक नीतियां 'अमेरिका फर्स्ट' से प्रेरित होंगी, जिसमें भारत को नुकसान भी हो सकता है। ट्रंप ने अपने पहले कार्यकाल में अमेरिकी उद्योगों को संरक्षण देने की नीति अपनाई थी। उन्होंने चीन और भारत समेत कई देशों के आयात पर भारी टैरिफ़ लगाया था। मसलन उन्होंने भारत से अमेरिकी हार्ले डेविडसन मोटरसाइकिलों पर टैरिफ हटाने या घटाने को कहा था। ट्रंप ने अमेरिका फर्स्ट का नारा दिया है और वो अमेरिकी वस्तुओं और सेवाओं के आयात पर ज़्यादा टैरिफ लगाने वाले देशों के ख़िलाफ़ कार्रवाई कर सकते हैं। भारत भी इसके घेरे में आ सकता है। ट्रंप चाहते हैं कि उनके देश से आयात होने वाली चीजों पर 20 फीसदी तक ही टैरिफ लगे। ट्रंप के नियम लागू हुए तो भारत की जीडीपी में 2028 तक 0.1 फ़ीसदी तक की गिरावट आ सकती है। अगर ट्रंप ने टैरिफ़ की दरें ज़्यादा बढ़ाई तो भारत को काफ़ी नुक़सान हो सकता है। हालांकि ट्रंप के आने से भारत अमेरिका के रक्षा सम्बंध और मजबूत हो सकते हैं। खासकर सैन्य टेक्नोलॉजी ट्रांसफर में प्रगति हो सकती है। लेकिन ट्रंप की नीतियां भारतीय प्रवासियों के लिए काफी मुश्किलें पैदा कर सकती हैं। ट्रंप इस मामले में काफ़ी मुखर रहे हैं और अमेरिकी चुनाव का यह अहम मुद्दा रहा है। इससे भारतीयों को परेशानी हो सकती है। कश्मीर मुद्दे पर भी ट्रंप ऐसा स्टैंड ले सकते हैं, जो भारत को अस्वीकार्य हो सकता है। उम्मीद यही है कि ट्रंप की जीत भारत के हित में होगी।

निजी सम्पत्ति अधिग्रहण पर फैसले के मायने

चीफ जस्टिस की अध्यक्षता वाली सुप्रीम कोर्ट की 9 जजों की बेंच ने 1978 में दिए गए अपने ही फ़ैसले को पलट कर न केवल जनहित की रक्षा की है बल्कि कानून की एक बड़ी कमी को सुधारा है। चीफ जस्टिस डीवाई चंद्रचूड़, जस्टिस ह्रषिकेश रॉय, जस्टिस मनोज मिश्रा, जस्टिस राजेश बिंदल, जस्टिस जेबी पारदीवाला, जस्टिस एससी शर्मा और जस्टिस ऑगस्टीन जॉर्ज मसीह इस फ़ैसले पर एकमत थे, वहीं जस्टिस बी.वी नागरत्ना फैसले से आंशिक रूप से सहमत थे जबकि जस्टिस सुधांशु धूलिया ने सभी पहलुओं पर असहमति जताई। विद्वान जजों ने निजी संपतियों को समुदाय के भौतिक संसाधन मानते हुए राज्य द्वारा कब्जा करके या अधिग्रहण करके सार्वजनिक भलाई के लिए वितरित करने के अधिकार पर रोक लगाते हुए कहा है कि सभी निजी संपत्तियां समुदाय के भौतिक संसाधनों का हिस्सा नहीं बन सकतीं। सुप्रीम कोर्ट ने यह भी साफ कर दिया कि सरकार एक हद तक ही निजी सम्पत्तियों का अधिग्रहण कर सकती है।

नजरिया

ललित गर्ग

लेखक पत्रकार हैं।

सुप्रीम कोर्ट ने हर निजी सम्पत्ति पर सरकार कब्जा नहीं कर सकती वाला राह दिखाने वाला फैसला देकर जहां निजी सम्पत्ति धारकों के अधिकारों की रक्षा की है, वही अर्थ-व्यवस्था को तीव्र गति देने के धरातल को मजबूत बनाया है। सुप्रीम कोर्ट के फैसले ने जाहिर किया है कि निजी संपत्ति के भी अपने अधिकार हैं, जिसकी अवहेलना नहीं की जा सकती। अब सरकारों यानी नीति निर्माताओं को भूमि अधिग्रहण और अन्य निजी संपत्ति अधिग्रहण करने के लिए अधिक न्यायसंगत और पारदर्शी रूपरेखा बनानी होगी। नया फैसला अनेक दृष्टियों से महत्वपूर्ण है और आदर्श शासन एवं न्याय व्यवस्था का द्योतक है। यह फैसला केवल इसलिए ऐतिहासिक नहीं है कि यह नौ सदस्यीय संविधान पीठ की ओर से दिया गया, बल्कि इसलिए भी अनूठा है, क्योंकि इसने उस समाजवादी विचार को आईना दिखाया, जिसे सरकारों की रीति-नीति का अनिवार्य अंग बनाने का दबाव रहता था। स्पष्ट है कि सुप्रीम कोर्ट का यह फैसला उन समाजवादी और वामपंथी सोच वालों के लिए भी झटका है, जो यह माहौल बनाने में लगे हुए थे कि देश में गरीबी और असमानता तभी दूर हो सकती है, जब सरकार संपत्ति का पुनर्वितरण करने में सक्षम हो और उसे यह अधिकार मिले कि वह किसी की भी संपत्ति का अधिग्रहण कर सकती है।

ताजा फैसले में कहा है कि किसी व्यक्ति के स्वामित्व वाले प्रत्येक संसाधन को केवल इसलिए समुदाय का भौतिक संसाधन नहीं माना जा सकता क्योंकि वह भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। कोर्ट ने कहा कि किसी निजी स्वामित्व वाली संपत्ति को समुदाय के भौतिक संसाधन के योग्य मानने के पहले उसे कुछ कठोर परीक्षणों को पूरा करना होगा। कोर्ट ने संविधान के अनुच्छेद 39(बी) की व्याख्या करते हुए कहा कि अनुच्छेद 39(बी) के तहत आने वाले संसाधन के बारे में जांच कुछ विशेष चीजों पर आधारित होनी चाहिए। इसमें संसाधनों की प्रकृति, विशेषताएं, समुदाय की भलाई पर संसाधन का प्रभाव, संसाधनों की कमी तथा ऐसे संसाधनों के निजी हाथों में केंद्रित होने के परिणाम जैसे कारक हो सकते हैं। इसके लिये पहचान एवं परीक्षण अपेक्षित होगी। पीठ ने कहा कि सुप्रीम कोर्ट द्वारा विकसित पब्लिक ट्रस्ट के सिद्धांत भी उन संसाधनों की पहचान करने में मदद कर सकते हैं जो समुदाय के भौतिक संसाधन के दायरे में आते हैं। ऐतिहासिक रूप से भारत में भूमि अधिग्रहण अक्सर विवादास्पद रहा है, जिसमें औद्योगिक परियोजनाओं या बुनियादी ढांचे के विकास के लिए बड़े पैमाने पर अधिग्रहण से महत्वपूर्ण विरोध प्रदर्शन हुए हैं। सिंगूर और नंदीग्राम जैसे मामलों ने सरकारी अधिग्रहण के खिलाफ भूमि मालिकों और किसानों के प्रतिरोध को उजागर किया। सर्वोच्च न्यायालय ने यह भी स्पष्ट किया है कि निजी संपत्ति का अधिकार एक मानवाधिकार माना जाता है। इसलिये राज्य के लिये किसी व्यक्ति को उसकी संपत्ति से वंचित करने के लिए उचित प्रक्रिया का पालन करना अनिवार्य है। चीफ जस्टिस की अध्यक्षता वाली सुप्रीम कोर्ट की 9 जजों की बेंच ने 1978 में दिए गए अपने ही फ़ैसले को पलट कर न केवल जनहित की रक्षा की है बल्कि कानून की एक बड़ी कमी को सुधारा है। चीफ जस्टिस डीवाई चंद्रचूड़, जस्टिस ह्रषिकेश रॉय, जस्टिस मनोज मिश्रा, जस्टिस राजेश बिंदल, जस्टिस जेबी पारदीवाला, जस्टिस एससी शर्मा और जस्टिस ऑगस्टीन जॉर्ज मसीह इस फ़ैसले पर एकमत थे, वहीं जस्टिस बी.वी नागरत्ना फैसले से आंशिक रूप से सहमत थे जबकि जस्टिस सुधांशु धूलिया ने सभी पहलुओं पर असहमति जताई। विद्वान जजों ने निजी संपत्तियों को समुदाय के भौतिक संसाधन मानते हुए राज्य द्वारा कब्जा करके या अधिग्रहण करके सार्वजनिक भलाई के लिए वितरित करने के अधिकार पर रोक लगाते हुए कहा है कि सभी निजी संपत्तियां समुदाय के भौतिक संसाधनों का हिस्सा नहीं बन सकतीं। सुप्रीम कोर्ट ने यह भी साफ कर दिया कि सरकार एक हद तक ही निजी सम्पत्तियों का अधिग्रहण कर सकती है।

अपने फैसले से सुप्रीम कोर्ट ने एक तरह से यह भी रेखांकित कर दिया कि आपातकाल के समय संविधान की प्रस्तावना में धर्मनिरपेक्षता के साथ समाजवाद शब्द जोड़कर भारतीय शासन व्यवस्था में समाजवादी तौर-तरीके अपनाने का जो काम किया गया था, वह निरर्थक एवं औचित्यपूर्ण नहीं था। अच्छा हो कि इस निरर्थकता को वे लोग भी समझें, जो संपत्ति के सृजन से अधिक अहमियत उसका पुनर्वितरण करने पर देते हैं। यह देश को समृद्धि की ओर ले जाने का रास्ता नहीं है। हो भी नहीं सकता, क्योंकि दुनिया भर का अनुभव यही बताता है कि जिन देशों ने अपने लोगों की भलाई के नाम पर अतिवादी समाजवादी तौर-तरीके अपनाए, वे आर्थिक रूप से कठिनाइयों से ही घिरे। आज जबकि भारत दुनिया की तीसरी बड़ी अर्थ-व्यवस्था बनने की ओर अग्रसर है, ऐसे समय में सुप्रीम कोर्ट के ताजा फैसले से उसे अधिक तीव्र गति मिल सकेगी एवं निजी क्षेत्र के अधिकारों की रक्षा हो सकेगी। अर्थ-व्यवस्था एवं बाजार को तीव्र गति देने के लिये निजी क्षेत्र के अधिकारों की रक्षा करना जरूरी है।

प्रधान न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़ की अध्यक्षता वाली नौ सदस्यीय पीठ ने महाराष्ट्र के एक मामले में संविधान पीठ को भेजे गए कानूनी सवालों का जवाब देते हुए यह फैसला सुनाया है। सीजेआई चंद्रचूड़ ने कहा कि इस न्यायालय की भूमिका आर्थिक नीतियां तय करना नहीं है, क्योंकि इसके लिए लोगों ने सरकार को वोट दिया है। लेकिन यदि सभी निजी संपत्तियों को सामुदायिक संसाधन माना जाएगा, तो यह संविधान के मूल सिद्धांतों का हनन है, इसलिये इसे रोकना कानून के दायरे में आता है। उन्होंने यह भी कहा कि 1990 के बाद से अर्थव्यवस्था में बदलाव आया है और अब बाजार उन्मुख आर्थिक मॉडल पर ध्यान केंद्रित किया गया है। इसके लिये राष्ट्रवादी सोच जरूरी है। संविधान पीठ ने यह भी स्पष्ट किया कि जस्टिस अय्यर का दृष्टिकोण समाजवादी थीम पर आधारित था और इससे सहमति नहीं जताई जा सकती। 1977 में कर्नाटक बनाम रंगनाथ रेड्डी मामले में जस्टिस अय्यर ने निजी संपत्तियों को सामुदायिक संसाधन बताया था। 1982 में भारत कोकिंग कोल लिमिटेड मामले में सुप्रीम कोर्ट की पांच जजों की बेंच ने जस्टिस अय्यर के फैसले से सहमति जताई थी। लेकिन अब उन फैसलों की भावना एवं लक्ष्य को बदलते हुए सुप्रीम कोर्ट ने अधिक उपयुक्त एवं सकारात्मक वातावरण का निर्माण किया है। यह फैसला सरकारों की इस दिशा में मनमानी को रोकता है। इस तरह निजी संपत्ति संबंधी सुप्रीम कोर्ट के ताजा फैसले ने करीब चार दशक पुराने उस फैसले को खारिज करने का काम किया, जिसमें कहा गया था कि सभी निजी स्वामित्व वाले संसाधनों को राज्य द्वारा अधिग्रहित किया जा सकता है। अच्छा हुआ कि सुप्रीम कोर्ट ने यह स्पष्ट करने की आवश्यकता भी समझी कि उक्त फैसला एक विशेष आर्थिक और समाजवादी विचारधारा से प्रेरित था।

सुप्रीम कोर्ट के फैसले से यह भी पता चल रहा है कि देश को किसी विशेष प्रकार के आर्थिक दर्शन के दायरे में रखना ठीक नहीं है और आर्थिक तौर-तरीके ऐसे होने चाहिए, जिनसे एक विकासशील देश के रूप में भारत उभरती चुनौतियों का सामना कर सके। देश का आर्थिक मॉडल बदल चुका है और इसमें निजी क्षेत्र का बहुत महत्व है। सरकार को निजी संपत्तियों का अधिग्रहण करने का पूर्ण अधिकार देना निवेश को निराश करेगा। उम्मीद की जानी चाहिए कि सुप्रीम कोर्ट के इस फैसले से निजी संपत्ति के मामले में अब इसे लेकर कोई संशय नहीं रहेगा कि क्या समुदाय का संसाधन है और क्या नहीं? कोई भी देश हो, उसे अपना आर्थिक दर्शन देश, काल और परिस्थितियों के हिसाब से अपनाना चाहिए, न कि इस हिसाब से कि पुरानी परिपाटी क्या कहती है? समय के साथ बदलाव ही प्रगति का आधार है। यह अच्छा हुआ कि सुप्रीम कोर्ट ने इस आधार को मजबूती प्रदान की। सुप्रीम कोर्ट के इस दूरगामी प्रभाव वाले फैसले ने जहां सरकार के निजी संपत्तियों पर अधिकार की सीमा रेखा खींची है, वहीं उस वर्ग की सोच को भी झटका दिया है जो कहते हैं कि सभी संपत्तियों का सर्वे करके उन्हें बराबरी से वितरित किया जाएगा। यह फैसला कहीं न कहीं निजी संपत्ति पर व्यक्ति के अधिकार पर मुहर लगाता है, वहीं राष्ट्रहित की सोच एवं भावना को भी पोषित करता है।

सदियों तक गूंजते रहेंगे शारदा सिन्हा के छठ गीत

स्मृति शेष

आरके सिन्हा

लेखक पूर्व सांसद हैं।

सूर्य आस्था के पञ्चदिवसीय महापर्व छठ के श्रीगणेश के साथ जब सभी छठ पर्व में आस्था रखने वालों का मन उत्साह और आनंद के वातावरण में रमा हुआ था, बस तब ही लोक गायिका पद्मश्री शारदा सिन्हा के निधन का समाचार मानो सारी दुनिया के भोजपुरी भाषियों और प्रेमियों के ऊपर वज्रपात के समान था। हालांकि शारदा जी अब हमारे बीच नहीं रहीं, पर आस्था के महापर्व छठ से जुड़े उनके सुमधुर गीतों की गूंज सदियों तक सदैव बनी रहेगी।

भोजपुरी संगीत में शारदा सिन्हा का नाम एक ऐसा नाम है, जो केवल गायिका से ज़्यादा है, एक समृद्ध भोजपुरी संस्कृति का प्रतीक है। उनकी आवाज में न केवल भोजपुरी लोकगीतों की परंपरा झलकती है बल्कि छठ महापर्व पर्व की पवित्रता भी। उनके छठ गीत न केवल भावनाओं को छूते हैं,बल्कि ; सुनने वालों के दिलों में छठ पर्व की गहराई को भी उकेर देते हैं। अपनी वेशभूषा रहन सहन और बोलचाल में अपनी संस्कृति की गंध लिए शारदा जी एक आम स्त्री बनी रहीं। उन्होंने बताया कि किस तरह एक स्त्री अपनी सफलता की सीढ़ियां अपनी संस्कृति के साथ चढ़ सकती हैं।

शारदा सिन्हा का निधन संगीत जगत के लिए एक अपूरणीय क्षति है। प्रधानमंत्री मोदी ने 'एक्स' पर अपने पोस्ट में कहा, 'सुप्रसिद्ध लोक गायिका शारदा सिन्हा के निधन से अत्यंत दुख हुआ है। उनके गाए मैथिली और भोजपुरी के लोकगीत पिछले कई दशकों से बेहद लोकप्रिय रहे हैं।'

शारदा सिन्हा पिछले कुछ दिनों से अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) में भर्ती थीं और सोमवार से उन्हें वेंटिलेटर पर रखा गया था।

शारदा सिन्हा ने छठ पर्व के गीतों को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया। उनके द्वारा गाए गए 'सूर्य देवता, ओ सतवां दिन'... 'छठी मइया के घाट, घाट, घाट' जैसे गीत आने वाली सदियों तक लोकप्रिय रहने वाले हैं और छठ पूजा के दौरान घर-घर सदियों तक गूंजते ही रहेंगे ।उनकी आवाज़ में छठ महापर्व के प्रति श्रद्धा और भक्ति का ऐसा मिश्रण था जिसने लाखों लोगों को छठ पूजा से जोड़ दिया। जिस शारदा सिन्हा ने भोजपुरी लोक गीतों को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर लोकप्रिय बनाया वह अब हमारे बीच नहीं रही हैं।

शारदा जी अपने चाँद से मिलने चली गईं। उनके पति का भी कुछ माह पूर्व ही निधन हो गया था। बिहार में भिखारी ठाकुर, महेंद्र मिसिर, रघुवीर नारायण, मनोरंजन सिन्हा, विंध्यवासिनी देवी की परंपरा को आगे बढानेवाली शारदा जी स्त्री सशक्तिकरण की एक प्रतीक थी। लोक गायक अपनी जनता में किस तरह अमर हो जाता है, इसका एक ताजा उदाहरण थी। उनके गीतों से एक बार सिद्ध हुआ कि भारतीय स्त्रियों ने ही लोकगीतों को बचाये रखा है।

भोजपुर अंचल में स्त्री की वेदना विरह प्रेम वात्सल्य विवाह गीत छठ गीत की आवाज़ शारदा जी के गीतों में गहरी पीड़ा व्यक्त होती थी। भोजपुर अंचल से बाहर की स्त्रियों ने भी उनकी आवाज़ में अपनी अभिव्यक्ति पाई थी। शारदा जी ने विशुद्ध पवित्र और सात्विक गीत गाये और बताया कि यही सच्चाई है यही उनके लोकगायकी में शिखर पर पहुँचने का कारण बने ।

भोजपुरी भाषी और भोजपुरी प्रेमी होने के नाते मेरा उनसे आत्मीय संबंध रहा है । वे मुझे बड़ा भाई मानती थीं और मैं भी उन्हें अनेकों कार्यक्रमों में बुलाता रहता था । यह कम ही लोगों को पता होगा कि शारदा जी भोजपुरी भाषी न होकर उत्तर बिहार के मिथिलांचल से थीं। लेकिन, उन्होंने लोकगायकी के लिये भोजपुरी सीखी । साठ के दशक में कुमकुम पर फिल्माए गये भोजपुर गीतों की परंपरा को आगे बढ़ाते हुए शारदा जी ने गीत गाये थे।

हे गंगा मैया तोहे पियरी चढ़इबो ,लागी नाही छूटे रामा जैसे गीतों की फिर से याद शारदा जी के गीतों ने दिलाई थी। शारदा सिन्हा के छठ गीतों की लोकप्रियता का एक कारण उनका गीतों में भावनाओं को सिलसिलेवार ढंग से पिरोना था। वो गीतों के हर शब्द को उस भावना के साथ गातीं, जो छठ पर्व के आस्था और भक्ति के साथ जुड़ी है। उनके गीतों में छठी मइया की कृपा पाने की आस, सूर्य देवता के प्रति आस्था, और परिवार की खुशहाली के लिए प्रार्थना स्पष्ट रूप से झलकती है। शारदा सिन्हा के छठ गीतों का एक और महत्वपूर्ण पहलू उनकी भाषा और शैली है। उनकी आवाज में भोजपुरी भाषा की सरलता, लयबद्धता और भावपूर्णता का अद्भुत समन्वय था। उन्होंने छठ गीतों को अपनी आवाज से इतना प्रभावी बनाया कि ये गीत अब भोजपुरी संस्कृति का अभिन्न अंग बन चुके हैं।

शारदा सिन्हा जी के गीतों को नौजवान पीढ़ी भी उतनी ही शिद्दत से सुनती है, जितनी उनके समय में सुनती थी। उनके गीतों को अनेक कलाकारों ने अपने अंदाज में गाया है। शारदा जी के छठ गीत केवल गीत नहीं हैं, वे भोजपुरी संस्कृति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। वे छठ पर्व के प्रति श्रद्धा और भक्ति को प्रोत्साहित करते हैं और हमारी सांस्कृतिक विरासत को संजो कर रखते हैं।

शारदा सिन्हा , भोजपुरी संगीत की एक ऐसी रानी हैं जिनके प्रशंसक सिर्फ़ भारत ही नहीं, बल्कि सारे संसार में हैं। उनकी लोकप्रियता के पीछे कई कारण रहे। उनकी गायन शैली बेहद अलग और ज़िंदादिल है। वो अपनी आवाज़ से हर किरदार को जीवंत कर देती हैं, चाहे वो प्यार की बात हो, दर्द की बात हो या फिर सामाजिक मुद्दों की। उनका संगीत जनता से सीधा जुड़ता है। उनके गाने अक्सर जीवन के आम अनुभवों, प्रेम, पारिवारिक संबंधों और सामाजिक मुद्दों को दर्शाते हैं। शारदा सिन्हा के गाने सिर्फ़ मनोरंजन ही नहीं, बल्कि सामाजिक संदेश भी देते हैं। वो महिलाओं की ताकत और स्वतंत्रता के लिए आवाज़ उठाती हैं, और सामाजिक बुराइयों के खिलाफ भी मुखर हैं। शायद ही कोई भोजपुरी भाषी या प्रेमी हो, जिसकी जुबान पर शारदा सिन्हा के गाने ना जुबान पर ना चढ़े हुए हैं। उनकी आवाज़ और गाने भोजपुरी संगीत के इतिहास में हमेशा अमर रहेंगे। महत्वपूर्ण है कि उनकी लोकप्रियता सिर्फ़ एक गायिका के तौर पर ही नहीं, बल्कि एक शख्सियत के तौर पर भी है। उनके गाने लोगों को भावनात्मक तौर पर जोड़ते हैं, और उन्हें जीवन के मुश्किल समय में भी हिम्मत देते हैं। उन्होंने अपने गीतों से सिद्ध किया कि लोक की शक्ति ही कला को लोकप्रिय बनाती है। लोकप्रियता में गुणवत्ता भी होती है। उन्होंने भोजपुरी गीतों की लोकप्रियता और गुणवत्ता दोनों को बचाये रखा।

सरकारी अस्पतालों को निजी हाथो में देने की तैयारी

मुद्दा

डॉ. चन्दर सोनाने

लेखक मप्र जनसंपर्क विभाग के पूर्व अधिकारी हैं।

नीति आयोग के 1 जनवरी 2020 के प्रस्ताव के आधार पर मध्यप्रदेश सरकार सरकारी अस्पतालों के निजीकरण की कोशिश कर रही है। उस समय भी इस निर्णय का विरोध हुआ था। विरोध के कारण सरकार ने इस निर्णय के क्रियान्वयन में रोक लगा दी थी। किन्तु अब फिर से सरकारी अस्पतालों को निजी हाथ में देने की गतिविधि शुरू हो गई है। डॉक्टरों के संगठनों द्वारा इसका विरोध करना शुरू कर दिया गया है।

उल्लेखनीय है कि मध्यप्रदेश में 51 सिविल अस्पताल है। 348 सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र हैं। इनमें से प्रथम चरण में राज्य सरकार के स्वास्थ्य विभाग ने पीपीपी मोड पर 10 जिला अस्पतालों में निजी मेडिकल कॉलेज बनाने का फैसला कर लिया है। ये 10 जिला अस्पताल हैं- खरगोन, धार, बैतूल, टीकमगढ़, बालाघाट, कटनी, सीधी, भिंड, मुरैना आदि। डॉक्टरों के विभिन्न संगठनों का कहना है कि सरकार द्वारा गुपचुप तरीके से इन सरकारी अस्पतालों को निजी हाथों में देने का फैसला लिया गया है। यह निर्णय आमजन के स्वास्थ्य सेवाओं के विपरीत भी है। पिछले दिनों भोपाल में विभिन्न स्वास्थ्य संगठनों ने प्रेसवार्ता आयोजित कर खुलकर सरकार की नीतियों का विरोध भी किया है। विरोध करने वाले प्रमुख संगठनों में एमपीएमटीए के अध्यक्ष डॉ. राजेश मालवीया, स्वायत्तशासी चिकित्सा अधिकारी संघ के डॉ. माधव हासानी, ईएसआई के संयुक्त सचिव डॉ. गजेन्द्रनाथ कौशल, चिकित्सा अधिकारी चिकित्सा शिक्षा के राज्य अध्यक्ष डॉ. महेश कुमार, मध्यप्रदेश जूनियर डॉ. एसोसिएशन के डॉ. सिद्धार्थ कीमती, मध्यप्रदेश नर्सिंग ऑफिसर एसोसिएशन की मनोरमा, राष्ट्रीय स्वास्थ्य अधिकार अभियान के श्री राजकुमार सिन्हा आदि हैं।

स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय दिल्ली की पूर्व स्वास्थ्य सचिव के सुजाता राव ने इस संबंध में स्पष्ट रूप से कहा है कि स्वास्थ्य सेवाओं का व्यवसायीकरण आपदा का कारण बन सकता है। इसका मतलब यह भी है कि मध्यप्रदेश सरकार अपने लोगों को स्वास्थ्य सेवाएं देने में सक्षम नहीं है। सरकार सार्वजनिक क्षेत्र के स्वास्थ्य संस्थान निजी हाथों में सौंपकर लोगों के स्वास्थ्य से समझौता किया कर रही है। हम इसका विरोध करते हैं। मध्यप्रदेश की स्वास्थ्य सेवाओं की हालत यूं भी ठीक नहीं है। सरकार इसे ठीक करने का ईमानदारी से ठोस प्रयास भी नहीं कर रही है। प्रदेश की 8.5 करोड़ की आबादी के लिए सिर्फ 24 हजार सरकारी डॉक्टर हैं। और इनमें से भी हर साल 800 से 1000 डॉक्टर नौकरी छोड़कर चले जाते हैं। इसके साथ ही कैंसर और हाई रिस्क की गंभीर बीमारियों का उचित इलाज भी प्रदेश के सरकारी अस्पतालों में पर्याप्त रूप से नहीं है, जिस कारण से उन्हें ईलाज कराने के लिए प्रदेश के बाहर जाना पड़ता है। इसका उदाहरण है, पिछले 7 साल में मध्यप्रदेश सरकार ने आयुष्मान योजना के अन्तर्गत मध्यप्रदेश के लाभार्थियों के लिए दूसरे राज्य को 1085 करोड़ रूपए दे दिए हैं। मध्यप्रदेश के अस्पतालों को सिर्फ 220 करोड़ रूपए ही मिल पाए हैं। मध्यप्रदेश से बड़ी संख्या में मरीज ईलाज के लिए मजबूर होकर दूसरे राज्यों की ओर रूख कर रहे हैं। यह हकीकत आयुष्मान भारत योजना के लाभार्थियों के आंकड़ों की पड़ताल में सामने आई है। सन् 2018 में जहां मात्र 399 मरीजों का ही ईलाज बाहरी राज्यों में होता था, वहीं 2024 में अब तक यह आंकड़ा 35,327 तक पहुंच गया है। इस योजना के तहत पिछले 7 साल में 1.32 लाख मरीज दूसरे राज्यों में ईलाज करा चुके हैं। इसके बदले में मध्यप्रदेश के खाते से 1085 करोड़ रूपए दिए जा चुके हैं। इसी अवधि में दूसरे राज्यों से ईलाज कराने के लिए 8,747 मरीज ही मध्यप्रदेश आए हैं। इस कारण मध्यप्रदेश के अस्पतालों को सिर्फ 220 करोड़ रूपए ही मिले हैं।

इसकी बड़ी वजह राज्य में डॉक्टरों की भारी कमी है। सरकारी अस्पतालों में विशेषज्ञों के 2374 पद बरसों से खाली पड़े है। यह कुल स्वीकृत पदों का 63.73 प्रतिशत है। चिकित्सा अधिकारियों के 1054 पद खाली पड़े है। यह स्वीकृत पदों का 55.97 प्रतिशत ही है। दन्त चिकित्सकों के 314 पद खाली पड़े है। जिला अस्पतालों और सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रों में पर्याप्त स्त्रीरोग विशेषज्ञ और आवश्यक सहायक कर्मचारी नहीं है। उक्त आंकड़ों को देखकर ऐसा लगता है सरकार बरसों से खाली पड़े पद भरना ही नहीं चाहती ! मध्यप्रदेश के गरीबों के लिए बीमार होने पर एक मात्र सहारा सरकारी जिला अस्पताल और सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र ही हैं। इन सरकारी अस्पतालों का भी निजीकरण कर दिया जाएगा तो गरीब अपना इलाज कराने कहाँ जायेगा? सामान्य बात है कि अभी सरकारी अस्पतालों में गरीबों का नि:शुल्क ईलाज ही नहीं किया जाता, बल्कि उन्हें दवाईयाँ आदि भी नि:शुल्क दी जाती है। मरीजों के भर्ती होने पर सभी चिकित्सा सुविधाएं भी उन्हें नि:शुल्क उपलब्ध कराई जाती है।

गरीबों का एक मात्र आसरा इन सरकारी अस्पतालों के निजीकरण किए जाने पर निजी संस्थान सेवा कार्य नहीं करेंगे बल्कि, उसका व्यवसायीकरण करेंगे ! तब गरीब अपने ईलाज के लिए कहाँ जाएगा? किसी भी राज्य या केन्द्र सरकार के लिए अपने नागरिकों को स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध कराना उसका मूलभूत कर्तव्य है। संविधान में भी आमजन को चिकित्सा सुविधाएं उपलब्ध कराना राज्य की जिम्मेदारी माना गया है। यदि इन्हीं सरकारी अस्पतालों का निजीकरण कर दिया जायेगा तो संविधान का भी उल्लंघन होगा! प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव से अपेक्षा है कि वे सरकारी अस्पतालों के निजीकरण पर तुरंत प्रभाव से रोक लगाएँ अन्यथा गरीबों को अपने ईलाज के लिए दर-दर भटकना पड़ेगा !

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

संपादक - उमेश त्रिवेदी

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)

RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

अंतिम संस्कार की फ्री योजनाएं

व्यंग्य

रामविलास जांगिड़

लेखक व्यंग्यकार हैं।

बहनों और भाइयों! सिर्फ दलदल पार्टी को ही वोट दीजिए क्योंकि हमारी पार्टी ही एकमात्र है जो हर एक मृतक का ध्यान रखेगी। मरने वाले को किसी प्रकार की कोई दुविधा ना हो इसके लिए समुचित उपाय करेगी। हमने मुफ्त अंतिम संस्कार योजना बनाई है, जिसमें गरीब परिवारों के लिए अंतिम संस्कार का खर्च सरकार द्वारा किया जाएगा। अंत्येष्टि स्थल सुधार योजना में बढ़िया क्वालिटी के श्मशान और कब्रिस्तान बनाए जाएंगे, ताकि मरने वाला बेखबर होकर शांति से मर सके। हर एक मोहल्ले में शोक सहायता समूह बनाकर सरकारी कर्मचारियों का समूह मृतक के घर रोने के लिए भिजवाया जाएगा। ये सभी सुविधाएं मुफ्त होंगी। सिर्फ वोट हमें ही दीजिए!

दोस्तों हमारी सरकार बनते ही अंतिम संस्कार के लिए मुफ्त वाहन सुविधा की सुविधा दे दी जाएगी। ये वाहन इतने बड़े होंगे कि इनमें मृतक के साथ उसका पूरा परिवार भी बैठ सकेगा। हमारी अंत्येष्टि अनुदान योजना के तहत आगामी 5 वर्षों तक गरीब परिवारों के लिए श्मशान भूमि के निःशुल्क उपयोग की सुविधा दी जाएगी। सरकार श्मशान कब्रिस्तान का उपयोग करने पर कोई टैक्स नहीं लेगी। यही नहीं मृतकों के जीवन को सुरक्षित करने के लिए उनके लिए मृतक स्मारक निर्माण योजना के तहत मुफ्त सामुदायिक स्मारकों का निर्माण किया जाएगा।

याद रखिए। हमारी पार्टी ही ऐसी पार्टी है, जो श्मशान में अंतिम संस्कार की हर प्रकार की लागत राशि के निवारण के लिए सारा काम मुफ्त में करेगी। शोक संतप्त परिवारों के लिए संवेदना भंडारों की निःशुल्क व्यवस्था की जाएगी। संवेदना जगाने के लिए आने वाले संवेदनार्थियों के लिए मुफ्त चाय, पानी और भोजन की व्यवस्था सरकारी स्तर पर की जाएगी। मृतक की सामाजिक औकात के अनुसार उसके अंतिम संस्कार में उपयोग होने वाले सामानों का मुफ्त वितरण किया जाएगा।

हमारी लोकप्रिय मुफ्त अंतिम संस्कार कक्ष योजना के तहत अंतिम संस्कार के लिए श्मशान में विशेष आकर्षक एवं सजावटी कक्षों की सुविधा प्रदान की जाएगी। संवेदना सहारा योजना के तहत परिवार के प्रति संवेदना व्यक्त करने के लिए सार्वजनिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा। तीये, 12वें, 40वें आदि की बैठक में मुफ्त सरकारी इंतजाम किए जाएंगे।

जो भी व्यक्ति अंतिम संस्कार में भाग लेगा उसे राजकीय अतिथि मानकर तीन दिन का यात्रा, भोजन एवं रुदन भत्ता दिया जाएगा। शोक संतप्त परिवारों के लिए अंतिम संस्कार में जाने वाले लोगों के लिए रास्ते में जगह-जगह खाने-पीने व मनोरंजन की व्यवस्था सरकार की तरफ से फ्री में की जाएगी। शोक समय परिवार को एकजुट करने के लिए पारिवारिक पुनर्मिलन कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा।

डिजिटल युग में ऑनलाइन प्लेटफार्म शोक केंद्र बनाए जाएंगे। मृतक की अर्थी के साथ-साथ फ्री इंटरनेट की व्यवस्था की जाएगी। मृतक के जलने और दफन होने के मौके पर फुल स्पीड से इंटरनेट मुफ्त में दिया जाएगा।

मृतक की याद में सरकारी तौर पर फ्री के सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आयोजन किए जाएंगे। और हां! मरते ही मृतक के ईमेल, फेसबुक, व्हाट्सएप, इंस्टाग्राम आदि अकाउंट गोपनीयता की शर्त पर फ्रीज कर दिए जाएंगे, ताकि वह निश्चिंत होकर मर सके। मृतकों से अनुरोध है कि मरने से पहले वे सिर्फ हमें ही वोट देकर मरें।

छठ पूजा पर विशेष

रमेश सर्राफ धमोरा

लेखक पत्रकार हैं।

सूर्य उपासना का पर्व है छठ पूजा

छठ पर्व की सांस्कृतिक परम्परा में चार दिन का व्रत रखा जाता है। यह व्रत भैया दूज के तीसरे दिन यानि शुक्ल पक्ष की चतुर्थी तिथि से आरंभ हो जाते है। व्रत के पहले दिन को नहा-खा कहते हैं। जिसका शाब्दिक अर्थ है स्नान के बाद खाना। इस दिन पवित्र नदी में श्रद्धालु स्नान करते हैं। वैसे तो यह पर्व मूल रूप से गृहिणियों द्वारा मनाया जाता है। लेकिन आजकल पुरुष भी इसमें समान रूप से सहयोग देते हैं। छठ का पौराणिक महत्व अनादिकाल से बना हुआ है। रामायण काल में सीता ने गंगा तट पर छठ पूजा की थी। महाभारत काल में कुंती ने भी सरस्वती नदी के तट पर सूर्य पूजा की थी। इसके परिणाम स्वरूप उन्हें पांडवों जैसे पुत्रों का सुख मिला था। द्रौपदी ने भी हस्तिनापुर से निकलकर गढ़ गंगा में छठ पूजा की थी। छठ पूजा का सम्बंध हठयोग से भी है। जिसमें बिना भोजन ग्रहण किए हुए लगातार पानी में खड़ा रहना पड़ता है। जिससे शरीर के अशुद्ध जीवाणु परास्त हो जाते हैं।

ऊर्जा का सबसे बड़ा स्त्रोत सूर्य है। इस कारण शास्त्रों में सूर्य को भगवान मानते हैं। सूर्य के बिना कुछ दिन रहने की जरा कल्पना कीजिए। इनका जीवन के लिए इनका रोज उदित होना जरूरी है। कुछ इसी तरह की परिकल्पना के साथ पूर्वोत्तर भारत के लोग छठ महोत्सव के रूप में इनकी आराधना करते हैं। छठ पूजा हिन्दुओं के प्रमुख त्योहारों में से एक है। सामान्यता यह त्योहार बिहार, झारखण्ड और पूर्वी उत्तर-प्रदेश में बहुत ही धूमधाम से मनाया जाता है। उत्तर प्रदेश और बिहार में छठ पूजा को महापर्व घोषित कर छठ पूजा के दिन सरकारी छुट्टी भी लागू कर दी गई है।

छठ पूजा का महत्व बहुत ज्यादा है। यह व्रत सूर्य भगवान, उषा, प्रकृति, जल, वायु आदि को समर्पित है। इस व्रत को करने से नि:संतान दंपत्तियों को संतान सुख प्राप्त होता है। छठ पर्व को किसने शुरू किया इसके पीछे कई ऐतिहासिक कहानियां प्रचलित हैं। लंका विजय के बाद रामराज्य की स्थापना के दिन कार्तिक शुक्ल षष्ठी को भगवान राम और माता सीता ने उपवास किया और सूर्यदेव की आराधना की थी। सप्तमी को सूर्योदय के समय अनुष्ठान कर सूर्यदेव से आशिर्वाद प्राप्त किया था। इसी के उपलक्ष्य में छठ पूजा की जाती है।

छठ पूजा भगवान सूर्य की उपासना का पर्व है। भारत में सूर्य पूजा की परम्परा वैदिक काल से ही रही है। हिंदुओं के सबसे बड़े पर्व दीपावली को पर्वों की माला माना जाता है। पांच दिन तक चलने वाले ये पर्व छठ पूजा तक चलते है। उत्तर प्रदेश और बिहार में मनाया जाने वाला यह बेहद अहम पर्व है जो पूरे देश में धूम-धाम से मनाया जाता है। छठ पूजा केवल एक पर्व नहीं है बल्कि महापर्व है जो कुल चार दिन तक चलता है। नहाय खाय से लेकर उगते हुए भगवान सूर्य को अर्घ्य देने तक चलने वाले इस पर्व का अपना एक ऐतिहासिक महत्व है।

हमारे देश में सूर्य उपासना के कई प्रसिद्ध लोकपर्व हैं जो अलग-अलग प्रांतों में अलग-अलग रीति-रिवाजों के साथ मनाए जाते हैं। सूर्य षष्ठी के महत्व को देखते हुए इस पर्व को सूर्य छठ या डाला छठ के नाम से संबोधित किया जाता है। इस पर्व को बिहार, झारखंड, पूर्वी उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ और नेपाल की तराई समेत देश के उन तमाम महानगरों में मनाया जाता है। जहां-जहां इन प्रांतों के लोग निवास करते हैं। यही नहीं, मॉरिशस, त्रिनिडाड, सुमात्रा, जावा समेत विदेशों में भी भारतीय मूल के प्रवासी छठ पर्व को बड़ी आस्था और धूमधाम से मनाते हैं। डूबते सूर्य की विशेष पूजा ही छठ का पर्व है। चढ़ते सूरज को सभी प्रणाम करते हैं। छठ पर्व की सांस्कृतिक परम्परा में चार दिन का व्रत रखा जाता है। यह व्रत भैया दूज के तीसरे दिन यानि शुक्ल पक्ष की चतुर्थी तिथि से आरंभ हो जाते है। व्रत के पहले दिन को नहा-खा कहते हैं। जिसका शाब्दिक अर्थ है स्नान के बाद खाना। इस दिन पवित्र नदी में श्रद्धालु स्नान करते हैं। वैसे तो यह पर्व मूल रूप से गृहिणियों द्वारा मनाया जाता है। लेकिन आजकल पुरुष भी इसमें समान रूप से सहयोग देते हैं।

छठ का पौराणिक महत्व अनादिकाल से बना हुआ है। रामायण काल में सीता ने गंगा तट पर छठ पूजा की थी। महाभारत काल में कुंती ने भी सरस्वती नदी के तट पर सूर्य पूजा की थी। इसके परिणाम स्वरूप उन्हें पांडवों जैसे पुत्रों का सुख मिला था। द्रौपदी ने भी हस्तिनापुर से निकलकर गढ़ गंगा में छठ पूजा की थी। छठ पूजा का सम्बंध हठयोग से भी है। जिसमें बिना भोजन ग्रहण किए हुए लगातार पानी में खड़ा रहना पड़ता है। जिससे शरीर के अशुद्ध जीवाणु परास्त हो जाते हैं।

छठ पर्व की परम्परा में वैज्ञानिक और ज्योतिषीय महत्व भी छिपा हुआ है। षष्ठी तिथि एक विशेष खगोलीय अवसर है। जिस समय धरती के दक्षिणी गोलार्ध में सूर्य रहता है और दक्षिणायन के सूर्य की अल्ट्रावॉइलट किरणें धरती पर सामान्य से अधिक मात्रा में एकत्रित हो जाती हैं। इन दूषित किरणों का सीधा प्रभाव जनसाधारण की आंखों, पेट, त्वचा आदि पर पड़ता है। इस पर्व के पालन से सूर्य प्रकाश की इन पराबैंगनी किरणों से जनसाधारण को हानि न पहुंचे। इस अभिप्राय से सूर्य पूजा का गूढ़ रहस्य छिपा हुआ है। इसके साथ ही घर-परिवार की सुख- समृद्धि और आरोग्यता से भी छठ पूजा का व्रत जुड़ा हुआ है। इस व्रत का मुख्य उद्देश्य पति, पत्नी, पुत्र, पौत्र सहित सभी परिजनों के लिए मंगल कामना से भी जुड़ा हुआ है।

लोक परम्परा के मुताबिक सूर्य देव और छठी मईया का संबंध भाई-बहन का है। इसलिए छठ के मौके पर सूर्य की आराधना फलदायी मानी गई। छठ पूजा अथवा छठ पर्व कार्तिक शुक्ल पक्ष की षष्ठी को मनाया जाता है। छठ से जुड़ी पौराणिक मान्यताओं और लोक गाथाओं पर गौर करें तो पता चलता है कि भारत के आदिकालीन सूर्यवंशी राजाओं का यह मुख्य पर्व था। छठ के साथ स्कंद पूजा की भी परम्परा जुड़ी है। भगवान शिव के तेज से उत्पन्न बालक स्कंद की छह कृतिकाओं ने स्तनपान करा रक्षा की थी। इसी कारण स्कंद के छह मुख हैं और उन्हें कार्तिकेय नाम से पुकारा जाने लगा। कार्तिक से संबंध होने के कारण षष्ठी देवी को स्कंद की पत्नी देवसेना नाम से भी पूजा जाने लगा।

एक मान्यता के अनुसार छठ पर्व की शुरुआत महाभारत काल में हुई थी। जिसकी शुरुआत सबसे पहले सूर्यपुत्र कर्ण ने सूर्य की पूजा करके की थी। कर्ण भगवान सूर्य के परम भक्त थे और वो रोज घंटों कमर तक पानी में खड़े होकर सूर्य को अर्घ्य देते थे। सूर्य की कृपा से ही वह महान योद्धा बने। आज भी छठ में अर्घ्य दान की यही परंपरा प्रचलित है। छठ पर्व के बारे मे एक कथा और भी है। इस कथा के मुताबिक जब पांडव अपना सारा राजपाट जुए में हार गए तब दौपदी ने छठ व्रत रखा था। इस व्रत से उनकी मनोकामना पूरी हुई थी और पांडवों को अपना राजपाट वापस मिल गया था।

महापर्व छठ हिंदू धर्म में एकमात्र ऐसा पर्व है जिसमें ना केवल उदयाचल सूर्य की पूजा की जाती है बल्कि अस्ताचलगामी सूर्य को भी पूजा जाता है। मान्यता है कि छठ देवी सूर्य देव की बहन हैं और उन्हीं को प्रसन्न करने के लिए भगवान सूर्य की अराधना की जाती है। पर्व का प्रारंभ नहाय-खाय से होता है, जिस दिन व्रती स्नान कर अरवा चावल, चना दाल और कद्दू की सब्जी का भोजन करते हैं। नहाय-खाय के दूसरे दिन यानी कार्तिक शुक्ल पक्ष पंचमी के दिनभर व्रती उपवास कर शाम में रोटी और गुड़ से बनी खीर का प्रसाद ग्रहण करते हैं। इस पूजा को खरना कहा जाता है। इसके अगले दिन कार्तिक शुक्ल पक्ष षष्ठी तिथि को उपवास रखकर शाम को अस्ताचल गामी सूर्य को अर्घ्य दिया जाता है। अगले दिन यानी सप्तमी तिथि को सुबह उदीयमान सूर्य को अर्घ्य अर्पित करके व्रत तोड़ा जाता है।

छठ पूजा के व्रत को जो भी रखता है। वह इन दिनों में जल भी नही ग्रहण करता है। इस व्रत को करने से सुख-समृद्धि और सभी मनोकामनाएं पूर्ण होती है। इस पूजा वैसे तो मुख्य रुप से सूर्य देवता की पूजा की जाती है। लेकिन साथ ही सूर्य देव की बहन छठ देवी की भी पूजा की जाती है। जिसके कारण इस पूजा का नाम छठ पूजा पड़ा। इस दिन नदी के तट में पहुंचकर पुरुष और महिलाएं पूजा-पाठ करते है। साथ ही छठ माता की पूजा को आपके संतान के लिए भी कल्याणकारी होती है।

समय पर पता चलने पर संभव है कैंसर का निदान

राष्ट्रीय कैंसर जागरूकता दिवस पर विशेष

योगेश कुमार गोयल

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

किसी भी व्यक्ति के लिए कैंसर एक ऐसा शब्द है, जिसे अपने किसी परिजन के लिए डॉक्टर के मुंह से सुनते ही परिवार के तमाम सदस्यों की सांसें गले में अटक जाती हैं और पैरों तले की जमीन खिसक जाती है। ऐसे में परिजनों को परिवार के उस अभिन्न अंग को सदा के लिए खो देने का डर सताने लगता है। बढ़ते प्रदूषण तथा पोषक खानपान के अभाव में यह बीमारी एक महामारी के रूप में तेजी से फैल रही है। विश्व स्वास्थ्य संगठन का मानना है कि हमारे देश में पिछले बीस वर्षों के दौरान कैंसर मरीजों की संख्या दोगुनी हो गई है। प्रतिवर्ष कैंसर से पीड़ित लाखों मरीज मौत के मुंह में समा जाते हैं। कैंसर जैसी खतरनाक बीमारी से जूझ रहे मरीजों में आशा की नई उम्मीद जगाने, लोगों को कैंसर होने के संभावित कारणों के प्रति जागरूक करने, प्राथमिक स्तर पर कैंसर की पहचान करने और इसके शीघ्र निदान तथा रोकथाम के प्रति लोगों में जागरूकता फैलाने के उद्देश्य से भारत में प्रतिवर्ष 7 नवम्बर को 'राष्ट्रीय कैंसर जागरूकता दिवस' मनाया जाता है। वास्तव में यह महज एक दिवस भर नहीं है बल्कि कैंसर से लड़ रहे उन तमाम लोगों में नई चेतना का संचार करने और नई उम्मीद पैदा करने का विशेष अवसर भी है। भारत में कैंसर के करीब दो तिहाई मामलों का बहुत देर से पता चलता है और कई बार तब तक बहुत देर हो चुकी होती है। कैंसर के संबंध में यह समझ लेना बेहद जरूरी है कि यह बीमारी किसी भी उम्र में किसी को भी हो सकती है किन्तु अगर इसका सही समय पर पता लग जाए तो लाइलाज मानी जाने वाली इस बीमारी का अब उपचार संभव है। यही वजह है कि देश में कैंसर के मामलों को कम करने के लिए कैंसर तथा उसके कारणों के प्रति लोगों को जागरूक किए जाने की आवश्यकता महसूस की जा रही है ताकि वे इस बीमारी, इसके लक्षणों और इसके भयावह खतरे के प्रति जागरूक रहें। कैंसर से लड़ने का सबसे बेहतर और मजबूत तरीका यही है कि लोगों में इसके प्रति जागरूकता हो, जिसके चलते जल्द से जल्द इस बीमारी की पहचान हो सके और शुरूआती चरण में ही इसका इलाज संभव हो। यदि कैंसर का पता शीघ्र लगा लिया जाए तो इसके उपचार पर होने वाला खर्च काफी कम हो जाता है। यही वजह है कि जागरूकता के जरिये इस बीमारी को शुरूआती दौर में ही पहचान लेना बेहद जरूरी माना गया है क्योंकि ऐसे मरीजों के इलाज के बाद उनके स्वस्थ एवं सामान्य जीवन जीने की संभावनाएं काफी ज्यादा होती हैं। हालांकि देश में कैंसर के इलाज की तमाम सुविधाओं के बावजूद अगर हम इस बीमारी पर लगाम लगाने में सफल नहीं हो पा रहे हैं तो इसके पीछे इस बीमारी का इलाज महंगा होना सबसे बड़ी समस्या है। वैसे देश में जांच सुविधाओं का अभाव भी कैंसर के इलाज में एक बड़ी बाधा है, जो बहुत से मामलों में इस बीमारी के देर से पता चलने का एक अहम कारण होता है। यह भी जान लें कि 'कैंसर' आखिर है क्या? जब हमारे शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता काफी कमजोर हो जाती है तो शरीर पर विभिन्न प्रकार की बीमारियां हमला करना शुरू कर देती हैं। ऐसी परिस्थितियों में कई बार शरीर की कोशिकाएं अनियंत्रित होकर अपने आप तेजी से विकसित और विभाजित होने लगती हैं। कोशिकाओं के समूह की इस अनियंत्रित वृद्धि को ही कैंसर कहा जाता हैं। जब ये कोशिकाएं टिश्यू को प्रभावित करती हैं तो कैंसर शरीर के अन्य हिस्सों में भी फैलने लगता है और कैंसर की यह स्थिति बहुत घातक हो जाती है। दुनियाभर में कैंसर से लड़ने और इसे हराने के लिए निरन्तर चिकित्सीय खोजें हो रही हैं और इन प्रयासों के चलते ही अब कैंसर का प्रारम्भिक स्टेज में तो सफल इलाज संभव भी है। अगर शरीर में कैंसर होने के कारणों की बात की जाए तो हालांकि इसके कई तरह के कारण हो सकते हैं लेकिन अक्सर जो प्रमुख कारण माने जाते रहे हैं, उनमें मोटापा, शारीरिक सक्रियता का अभाव, व्यायाम न करना, ज्यादा मात्रा में अल्कोहल व नशीले पदार्थों का सेवन, पौष्टिक आहार की कमी इत्यादि इन कारणों में शामिल हो सकते हैं। कभी-कभार ऐसा भी होता है कि कैंसर के कोई भी लक्षण नजर नहीं आते किन्तु किसी अन्य बीमारी के इलाज के दौरान कोई जांच कराते वक्त अचानक पता चलता है कि मरीज को कैंसर है लेकिन फिर भी कई ऐसे लक्षण हैं, जिनके जरिये अधिकांश व्यक्ति कैंसर की शुरूआती स्टेज में ही पहचान कर सकते हैं।

कैंसर के लक्षणों में कुछ प्रमुख हैं, वजन घटते जाना, रक्त की कमी होना, निरन्तर बुखार बने रहना, शारीरिक थकान व कमजोरी, चक्कर आना, उल्टी होना, दौरे पड़ना शुरू होना, आवाज में बदलाव आना, सांस लेने में दिक्कत होना, खांसी के दौरान खून आना, लंबे समय तक कफ रहना और कफ के साथ म्यूकस आना, कुछ भी निगलने में दिक्कत होना, पेशाब और शौच के समय खून आना, शरीर के किसी भी हिस्से में गांठ या सूजन होना, माहवारी के दौरान अधिक स्राव होना इत्यादि। कीमोथैरेपी, रेडिएशन थैरेपी, बायोलॉजिकल थैरेपी, स्टेम सेल ट्रांसप्लांट इत्यादि के जरिये कैंसर का इलाज होता है किन्तु यह प्रायः इतना महंगा होता है कि एक गरीब व्यक्ति इतना खर्च उठाने में सक्षम नहीं होता। इसलिए जरूरत इस बात की महसूस की जाती रही है कि कैंसर के सभी मरीजों का इलाज सरकारी अस्पतालों में हो या निजी अस्पतालों में, सरकार ऐसे मरीजों के इलाज में यथासंभव सहयोग करे क्योंकि जिस तेजी से देश में कैंसर मरीजों की संख्या बढ़ रही है, उसे देखते हुए केवल सरकारी अस्पतालों के भरोसे कैंसर मरीजों के इलाज की कल्पना बेमानी ही होगी।

राष्ट्रीय कैंसर जागरूकता दिवस पर विशेष

अदिति सिंह भदौरिया

लेखक स्तंभकार हैं।

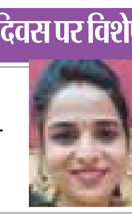

हां, मैं भी हूं

मानव जीवन में किसी भी बीमारी की दस्तक कभी भी हो सकती है,लेकिन इंसान किसी बीमारी से कम और उस बीमारी के खौफ से ज़्यादा डर जाते है। कैंसर ऐसी ही एक बीमारी है जिसका नाम भी हमने भीतर तक हिला कर रख देता है। हमारे भीतर सिर्फ और सिर्फ नकारात्मक विचार ही होते है। जो हमें यह सोचने पर विवश कर देते है कि अब और कुछ नहीं बचा, लेकिन तभी आपको अपने आपको समेटना है, क्योंकि यह आप ही हो जो किसी भी परिस्थिति में स्वयं को निकाल सकते हो। अपने ऊपर विश्वास रखते हुए आप कैंसर जैसी बीमारी को अपने जीवन से खदेड़ सकते हो।

यह कहना गलत नही होगा कि कैंसर के दौरान आपको बहुत मोर्चों पर भी लड़ना होता है। आपको अपने भीतर की बीमारी को भी हराना है, आपको अपने परिवार को भी सम्भालना है और इसके साथ-साथ अपने भीतर भी एक सकारात्मकता को ज़िंदा रखना होता है जो आपको इस बीमारी को हराने में मदद करती है। आर्थिक रूप हो या भावनात्मक रूप हो यह बीमारी आपकी हर तरफ से परीक्षा लेती है, लेकिन हमें यह बात याद रखनी है कि इंसान से मजबूत और कोई नहीं होता। और अगर इंसान के भीतर की मजबूती के साथ भगवान के प्रति उसकी आस्था भी जुड़ जाए तो सोने पर सुहागा होता है। जीवन कोई हार या जीत का मैदान नहीं है बल्कि अनमोल निधि है, जिसे हम अपने परिवार के लिए बचाना चाहते है। परिवार जब यह शब्द हमारे भीतर दस्तक देता है तो हम कितना खुद को समेट सकते है । इस बात पर विचार आने लगते है। हमारा हौसला ही हमारी हिम्मत है, लेकिन मात्र हमारे हौसलें से कुछ नहीं होता , जब तक की हमारे परिवार का साथ हमें नहीं मिलता।बात तब यह नहीं होती कि हमारे भीतर कितनी ताकत है , बात तब यह होती है कि हम अपने परिवार के साथ कितना रहना चाहते है। मानसिक, आर्थिक और शारीरिक रूप से हम टूट से जाते है, लेकिन हमारा परिवार हमारे भीतर उम्मीद की एक लौ जगाए रखता है, जो हमें अपने जीवन में हार नहीं मानने देते।

अपने परिवार को भी दु:ख में देखकर कई बार ऐसा समय आता है जब हम भीतर से टूटने लगते है, पर तभी हमें अपने आपको नई परिस्थितियों के लिए तैयार करना चाहिए। क्योकिं जब हम हिम्मत हार जाएंगे , तब कोई दूसरा हमारे लिए कुछ नहीं कर सकता।

जीवन को रेत की तरह फिसलते देखते ही हमें इसके महत्व का पता चलता ह। हमें अहसास होता है कि हम किस भागम-भाग में लगे हुए थे। कौन अपना है और कौन पराया। इस बात का अंदाजा शायद हम लगा ही नहीं पाते। परिवार के नाम पर कुछ झूठे लोग आपका साथ छोड़ देंगे। लेकिन उन पर नाराज़ ना हो बल्कि धन्यवाद दें कि झूठ का नकाब उतर गया और सच में जो आपके अपने है वह आपके साथ है और उनका होना ही आपकी ताकत है। आपका होना आपके बच्चों के लिए कितना ज़रूरी है। यह बात शब्दों में बयान नहीं कि जा सकती। हमें कुछ नहीं होगा इस बात को अपने जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा बना लीजिए। हम है तो सब है। आपका होना मात्र आपके या आपके परिवार की खुशियाँ ही नहीं हसी बल्कि आपके बच्चों की सुरक्षा का हिस्सा है। अगर भगवान ना करें आप किसी बड़ी बीमारी से ग्रस्त हो जाते होई तो सबसे पहले अपने आपको इसका एक हिस्सा मान लें कि अब तो मुझे स्वस्थ होना ही है। अपने किसी शौक को अपने जीवन का भाग बनाए। अपने परिवार को बताए कि आप भी इस परिस्थिति से निकलने में उनका सहयोग करेंगे। अपने आस -पास के माहौल को खुशनुमा बनाए। यह सब इतना आसान नहीं होगा, लेकिन नामुमकिन भी नहीं हो सकता।

परिवार को भी यह समझना चाहिए की कि किसी भी बीमारी को तभी हराया जा सकता है जब मरीज़ भावनात्मक रूप से अपनों के अपनेपन को महसूस करें। जब उसे यह यकीन हो जाए कि कोई और चाहे ना चाहे लेकिन उसका परिवार उसके जीवन के महत्व को समझता है। परिवार का साथ जादू की तरह काम करता है। अगर सुख की सीमा कम होती है तो यकीन करें की दु:ख की भी सीमा बहुत कम होती है। एक बात को हमेशा अपने साथ रखें जो आपके दु:ख में आपके साथ नही उसे आपके सुख का भी अधिकार नहीं।

जीवन अनमोल है, इसकी कद्र करें । किसी भी बीमारी को यह विश्वास दिलाए की (मैं हूँ, और मैं रहूंगी हमेशा) आपकी ऊर्जा और आपका परिवार ही आपकी ताकत है।

छठ पर्व पर विशेष

नृपेन्द्र अभिषेक नृप

लेखक स्तंभकार हैं।

छठ पर्व- परंपरा, विज्ञान और समाज का संगम

भारत एक ऐसा देश है जहाँ विविधता में एकता को अपनाया गया है। यहाँ विभिन्न जातियों, समुदायों और संस्कृतियों के लोग अपने-अपने त्योहारों को परंपराओं और रीति-रिवाजों के अनुसार मनाते हैं। इनमें से एक प्रमुख पर्व है छठ पूजा, जिसे विशेष रूप से बिहार, उत्तर प्रदेश, झारखंड, नेपाल और अन्य राज्यों में बड़े ही धूमधाम से मनाया जाता है। छठ पर्व एक ऐसा पर्व है, जिसमें श्रद्धालु सूर्य भगवान और उनकी पत्नी उषा एवं प्रत्यूषा को धन्यवाद देते हुए उनकी पूजा करते हैं। इस पर्व का ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और वैज्ञानिक महत्व अत्यधिक गहरा है।

छठ पर्व का ऐतिहासिक महत्व और उत्पत्ति

छठ पर्व का इतिहास प्राचीन काल से जुड़ा हुआ है। माना जाता है कि इस पर्व की शुरुआत महाभारत काल में हुई थी। जब पांडवों के राज्य का नाश हो गया था, तब द्रौपदी ने छठ व्रत किया और इस व्रत के प्रभाव से उन्हें अपना राज्य वापस मिल गया। इस संदर्भ में यह कहा जा सकता है कि छठ पर्व की उत्पत्ति की कहानियां और मान्यताएं समय के साथ कई क्षेत्रों में विकसित हुईं और इसे मनाने का ढंग भी समय के साथ परिवर्तित हुआ।

इसके अलावा, एक और मान्यता के अनुसार सूर्य पुत्र कर्ण, जो अंग देश (वर्तमान में बिहार) के शासक थे, नियमित रूप से सूर्य भगवान की आराधना करते थे और छठ का व्रत करते थे। कर्ण को सूर्य का पुत्र माना जाता है और उनकी शक्ति का स्रोत भी सूर्य भगवान को ही माना जाता है। इसलिए, यह पर्व कर्ण की पूजा और उनके द्वारा स्थापित मान्यताओं का प्रतीक भी माना जाता है।

छठ पर्व का सामाजिक और सांस्कृतिक महत्व

छठ पर्व का समाजिक और सांस्कृतिक महत्व अत्यधिक विस्तृत है। इस पर्व में न केवल धर्मिक आस्था का समावेश होता है बल्कि यह समाजिक सद्भावना और सामूहिकता का भी प्रतीक है। इस पर्व में किसी जाति, धर्म या सम्प्रदाय का भेदभाव नहीं होता और सभी लोग मिलकर इस पर्व का आनंद लेते हैं। इसके अंतर्गत लोग एकजुट होकर घाटों पर इकट्ठा होते हैं, जहाँ वे एक ही लक्ष्य के लिए एकत्रित होकर पूजा करते हैं। इस पर्व में महिलाओं की विशेष भूमिका होती है। व्रत करने वाली महिलाएं श्रद्धा और भक्ति के साथ व्रत रखती हैं, जिसमें वे बिना जल और अन्न के कठिन तपस्या करती हैं। इस प्रकार, छठ पर्व महिलाओं के साहस, शक्ति और धैर्य का भी प्रतीक है। इसके अतिरिक्त, इस पर्व में पूरे परिवार और समाज का एक विशेष योगदान होता है। इस पर्व के दौरान लोग आपसी सहयोग और सम्मान का आदान-प्रदान करते हैं, जो समाज में एकता और सामंजस्य को बढ़ावा देता है।

छठ पर्व के धार्मिक और सांस्कृतिक अनुष्ठान

छठ पूजा में मुख्यत: चार दिनों का अनुष्ठान होता है, जो बड़ी सादगी और शुद्धता के साथ मनाया जाता है। इसमें पहले दिन नहाय-खाय का अनुष्ठान होता है, जिसमें व्रती गंगा स्नान कर पवित्र जल का सेवन करते हैं और घर में सादगीपूर्ण भोजन करते हैं। उसके बाद दूसरे दिन खरना का आयोजन होता है। इस दिन व्रती उपवास करते हैं और शाम को गुड़ की खीर और रोटी का सेवन करते हैं। इस दिन का भोजन अत्यंत पवित्र और शुद्ध माना जाता है। इसके बाद तीसरे दिन संध्या अर्घ्य का आयोजन होता है, जिसमें व्रती सूर्यास्त के समय डूबते सूर्य को अर्घ्य देते हैं। यह अर्घ्य देने की प्रक्रिया विशेष रूप से घाटों पर आयोजित होती है। तब चौथे दिन प्रात:कालीन अर्घ्य का आयोजन होता है, जिसमें व्रती उगते सूर्य को अर्घ्य देते हैं और अपने व्रत को पूर्ण करते हैं।

छठ पर्व का वैज्ञानिक महत्व

छठ पर्व का वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी विशेष महत्व है। इस पूजा में जिस प्रकार से सूर्य की उपासना की जाती है, वह मानव जीवन और स्वास्थ्य के लिए लाभकारी माना गया है। सूर्य से प्राप्त होने वाली किरणें विटामिन डी का प्रमुख स्रोत हैं, जो शरीर के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण है। इसके अतिरिक्त, इस पूजा के दौरान जल में खड़े होकर सूर्य को अर्घ्य देने से पानी और सूर्य की किरणों के संयोग से एक विशेष प्रकार की ऊर्जा का संचार होता है, जो स्वास्थ्य के लिए लाभकारी होता है।

इसके साथ ही, छठ पूजा में जिस प्रकार का आहार लिया जाता है, वह भी स्वास्थ्य के लिए अत्यंत लाभकारी है। व्रती केवल शुद्ध आहार जैसे कि गुड़, चावल, और गन्ने का सेवन करते हैं, जिससे शरीर में विषैले तत्वों का नाश होता है और यह शरीर को शुद्ध बनाता है। वैज्ञानिकों का मानना है कि इस पर्व में की जाने वाली क्रियाओं से रक्त शुद्ध होता है और विभिन्न रोगों से मुक्ति मिलती है।

पर्यावरणीय और पारिस्थितिक महत्व

छठ पर्व का पर्यावरणीय महत्व भी अत्यधिक महत्वपूर्ण है। इस पर्व के दौरान नदियों और जलाशयों के किनारे की सफाई का विशेष ध्यान रखा जाता है। यह पर्व स्वच्छता के महत्व को समझाने का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। घाटों की सफाई, जल संरक्षण और पर्यावरण की सुरक्षा का संदेश इस पर्व के माध्यम से प्रसारित होता है। आज के समय में, जब जल और पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता की आवश्यकता है, छठ पर्व का यह योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है।

छठ पर्व का आधुनिक समाज में योगदान

आज के आधुनिक समाज में छठ पर्व की प्रासंगिकता और भी अधिक महत्वपूर्ण हो गई है। यह पर्व हमें हमारी जड़ों से जुड़ने का अवसर प्रदान करता है और हमारी सांस्कृतिक धरोहर की महत्ता को पुन: स्थापित करता है। इसके माध्यम से हम अपने पुराने रीति-रिवाजों और परंपराओं को संजोने का प्रयास करते हैं। इसके अलावा, छठ पूजा के माध्यम से सामुदायिक भावना को भी बल मिलता है। इस पर्व में लोग जाति, धर्म और सम्प्रदाय से ऊपर उठकर एक साथ पूजा करते हैं, जिससे सामाजिक सौहार्द और भाईचारे को बढ़ावा मिलता है। छठ पर्व न केवल एक धार्मिक पर्व है बल्कि यह समाजिक, सांस्कृतिक और वैज्ञानिक दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसके माध्यम से हमें अपने परंपराओं को समझने और मानने का अवसर प्राप्त होता है। इस पर्व के माध्यम से हम सूर्य देवता की पूजा करते हैं और उनकी कृपा से अपनी जीवन यात्रा को सफल बनाते हैं। छठ पर्व वास्तव में मानवता का पर्व है, जो जीवन में सकारात्मकता, स्वास्थ्य और सामाजिक सामंजस्य का प्रतीक है। यह पर्व हमें यह सिखाता है कि हम प्रकृति के साथ मिलकर जीवन के सुखद क्षणों का अनुभव करें और सभी के कल्याण की कामना करें।

मंडी में आवक बढ़ने से बुधवार मक्के की नीलामी रही बंद, उपज के अच्छे दाम नहीं मिलने से किसान निराश

मंडी में आवक के जोर पकड़ते ही 50-100 रूपये टूटकर उच्चतम 4401 रूपये प्रति क्विंटल बिका सोयाबीन

संजय द्विवेदी, बैतूल। कृषि उपज मंडी में दीपावली की छुट्टी के बाद उपज की आवक बढ़ गई है। आवक बढ़ने से दामों में भी अंतर दिख रहा है। सोमवार, खरीदी के एक दिन बाद ही फिर सोयाबीन के न्यूनतम भाव में करीब 100-150 रुपए की मंदी आ गई। एक सप्ताह बाद खुली कृषि उपज मंडी में सोमवार को 3125 क्विंटल सोयाबीन की आवक हुई थी। आवक कम होने का असर यह हुआ कि किसानों को सोयाबीन के दाम अच्छे मिले। सोयाबीन करीब 3557 हजार रुपए क्विंटल से शुरू होकर ऊंचे में 4451 रुपए क्विंटल तक बिका। किसानों को राहत यह थी कि सप्ताह भर पहले जब मंडी बंद हुई थी तब सोयाबीन 3000 से 4310 रूपये क्विंटल बिका था। इसी राहत के बीच मंगलवार को मंडी की आवक बढ़कर 3195 क्विंटल क्विंटल हो गई। बंपर आवक के बीच जब किसानों को भाव मिले तो उनके चेहरे पर निराशा छा गई। अच्छी वैरायटी का उनका सोयाबीन 50-100 रूपये टूटकर ऊंचे में 4401 रुपए क्विंटल ही बिक सका। किसानों ने बताया कि एक तरफ दीपावली पर सोयाबीन तेल के भाव प्रति किलो तेज हो गए हैं, वहीं दूसरी तरफ किसान को सोयाबीन के भाव मंडी में कम मिल रहे है।

आवक बढ़ने से बुधवार मक्के की नीलामी रही बंद: कृषि उपज मंडी बडोरा में मक्के की बंपर आवक हो रही है। दीपावली बाद मंडी में 4 नवंबर को 19008 क्विंटल मक्के की आवक रही, जबकि मंगलवार 5 नवंबर को 13610 क्विंटल मक्का खरीदा गया। इस दौरान 4 नवंबर को मक्के के दाम 1895 से 2351 थे, वहीं मंगलवार को मक्के के दामों में भी गिरावट देखी गई। मंगलवार किसानों को मंडी में मक्के के दाम 1700 से 2350 रूपये तक मिले। इसके साथ ही मंडी में 1652 क्विंटल गेहूं भी आया, जो 2786 से शुरू होकर ऊंचे में 3000 रुपए क्विंटल तक बिका। चने के भाव 5900 से 6221 रूपए क्विंटल रहे।

किसानों को नहीं मिल रहे अच्छे दाम : कृषि उपज मंडी में नई उपज की आमद होते ही आवक भी बढ़ गई है, लेकिन किसानों को उपज के अच्छे दाम नहीं मिल रहे है। ऐसी स्थिति में उपज बेचना किसानों के लिए घाटे का सौदा साबित हो रहा है। सोयाबीन के दाम 5 हजार रूपए प्रति क्विंटल से कम है। अब आवक होते ही मक्के के दाम में भी गिरावट आ गई। किसानों का कहना है कि इतने कम दाम में उपज बेचने से लागत भी नहीं निकल पा रही है। इधर मक्के की अधिक आवक होने से मंडी प्रबंधन को बुधवार 6 नवंबर को मक्के की खरीदी रोकना पड़ा। मंडी में उपज डालने के लिए शेड तो बनाए है, लेकिन आवक अधिक होने के कारण शेड में किसानों को उपज डालने की जगह नहीं मिल पाती है।

समर्थन मूल्य में खरीदी के लिए बनाये 15 केन्द्र : समर्थन मूल्य पर सोयाबीन खरीदी के लिए जिले में 15 केन्द्र बनाये है, लेकिन केन्द्रों पर उपज बेचने के लिए कम ही किसान पहुंच रहे है। अधिकारियों का कहना है कि अभी सोयाबीन में नमी है। किसान उपज सूखाने में लगे है। उपज सूखने के बाद ही केन्द्र पहुंचेगे। फिलहल कुछ किसानों ने स्लॉट बुक कराये है। अधिकारियों की माने तो जिले में लगभग 3184 किसानों ने पंजीयन कराया है। अधिकारियों का कहना है कि जैसे ही उपज पूरी तरह सूख जायेगी, किसान केन्द्रों पर उपज लेकर पहुंचना शुरू कर देगे। गौतरलब रहे कि इस साल 4892 रूपये समर्थन मूल्य में सोयाबीन की खरीदी कर रही है, जबकि मंडी में सोयाबीन के दाम लगभग 3400 से 4401 रूपये प्रति क्विंटल है।

बुधवार 6 नवंबर को 4439 क्विंटल उपज की खरीदी

कृषि उपज मंडी में बुधवार 6 नवंबर को 4439 क्विंटल उपज की खरीदी हुई। जिसमें 1235 क्विंटल सोयाबीन खरीदा गया। बुधवार को मंडी में सोयाबीन का न्यूनतम भाव 3200, उच्चतम 4401 और प्रचलित भाव 4012 रहा। वहीं चना 24 बोरे खरीदा। जिसके दाम 5851 से 6251 प्रति क्विंटल रहे। इसी तरह 3178 क्विंटल गेहूं की खरीदी हुई। जिसका न्यूनतम भाव 2718 और उच्चतम भाव 3051 रूपये रहे। मंडी में 2 बोरे मूंग की खरीदी भी की गई। जिसके दाम 4051 रूपये रहे।

इनका कहना है –

अभी उपज में नमी होने की वजह से किसान खरीदी केन्द्र नहीं पहुंच पा रहे है। कई किसान उपज सूखाने में लगे है। जल्द ही केन्द्रों पर सोयाबीन की खरीदी में तेजी आने की संभावना है। 3184 किसानों ने उपज बेचने के लिए पंजीयन कराया है। कुछ किसानों ने स्लॉट भी बुक किये है।

– रामवीर सिंह राजपूत, एसडीओ, कृषि विभाग, बैतूल

ब्राह्मण समाज का प्रतिभा सम्मान समारोह 10 नवंबर को

समाज के प्रतिभावान छात्र-छात्राओं, युवाओं, बुजुर्गों का होगा सम्मान

बैतूल। ब्राह्मण समाज के प्रतिभावान छात्र-छात्राओं का आगामी रविवार 10 नवंबर को सम्मान किया जाएगा। इसके साथ ही समाज में सक्रिय प्रतिभावान युवाओं, वरिष्ठजनों को भी सम्मानित किया जाएगा। यह निर्णय सर्व ब्राह्मण समाज की सामूहिक बैठक में बुधवार को लिया गया। बैठक मंगलवार शाम दत्त मंदिर सिविल लाइन बैतूल में आयोजित की गई। जिसमें सर्वसम्मति से प्रतिभावान छात्र-छात्राओं, वरिष्ठजनों, प्रतिभावान युवाओं के साथ-साथ कला एवं खेल क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले छात्रों बच्चों का चयन किया गया। बैठक परशुराम भगवान और दत्तात्रेय भगवान के पूजन के साथ प्रारंभ हुई।

बैठक के संयोजक पंडित कांतु दीक्षित एवं पंडित प्रमोद शर्मा ने बताया कि जिले के सर्व ब्राह्मण समाज संगठन के बैनर तले आने वाले रविवार 10 नवंबर 2024 को दोपहर 2 बजे से द्वारका मैरिज लॉन, तिवारी पेट्रोल पंप के सामने, कालापाठा बैतूल में विप्र प्रतिभा सम्मान समारोह का आयोजन किया जाएगा। बैठक में पंडित नरेन्द्र शुक्ला ने बताया कि वर्ष 2024 में 80 प्रतिशत से ज्यादा अंक लाने वाले प्रतिभावान छात्र-छात्राओं का सम्मान मेडल और प्रमाणपत्र देकर किया जाएगा। समाज ऐसे प्रतिभावान बच्चों एवं युवाओं को भी सम्मानित करेगा, जिन्होने राज्य या राष्ट्रीय स्तर पर कोई विशेष उपलब्धि खेल या कला आदि अन्य क्षेत्र में विशेष उपलब्धि हासिल की हो। बैठक में पंडित ब्रजकिशोर टीटू पांडे ने बताया कि वरिष्ठजनों को भी कार्यक्रम में बैच लगाकर व प्रमाण पत्र देकर सम्मान करेंगे, जिन्होंने कोई विशेष उपलब्धि हासिल की हो।

उन्होंने 10 नवंबर को होने वाले कार्यक्रम की रूपरेखा और किस प्रकार से कार्यक्रम होगा यह विस्तार से समझाया। इसके बाद पंडित कांतु दीक्षित के नेतृत्व में समाज के 10 सदस्यीय वरिष्ठजनों के पैनल द्वारा उसका परीक्षण कर अंतिम चयन सूची तैयार की गई।

बैठक के अंत में समाज के वरिष्ठ पंडित नरेंद्र शुक्ला ने सभी का आभार व्यक्त किया। बैठक में उपस्थित अन्य विप्र बहनों-बंधुओं ने अपने-अपने सुझाव भी रखें। बैठक में पंडित प्रमोद शर्मा, अशोक मिश्रा, धीरू शर्मा, जयेश त्रिवेदी, मनु देशपांडे, संजय द्विवेदी, अंशुल शुक्ला, विमल कुमार दुबे, संजय व्यास, अनिल दीक्षित, कार्तिक मिश्रा, आशुतोष शुक्ला, विजय पांडे, महिला सदस्यों में तरुणा सुनील द्विवेदी, तूलिका पचौरी, निमिषा पप्पी शुक्ला, प्रेरणा शर्मा, नंदिनी तिवारी सहित सहित बड़ी संख्या में ब्राह्मण समाज के लोग उपस्थित थे।

न्यायोत्सव : विधिक सेवा सप्ताह कार्यक्रम के अंतिम दिन 9 नवंबर को निकलेगी मैराथन रैली

बैतूल। न्यायोत्सवः विधिक सेवा सप्ताह कार्यक्रम के अंतिम दिवस 09 नवम्बर (शनिवार) को प्रातः 6 बजे जिला न्यायालय परिसर बैतूल से मैराथन रैली प्रारंभ होगी। रैली में विद्यालय, महाविद्यालय के छात्र व छात्राएं एवं एन.एस.एस/एन.सी.सी./स्पोर्ट्स से संबंधित विद्यार्थी, एनजीओ के सदस्य व कार्यकर्ता तथा आम नागरिक भाग लेंगे। मैराथन रैली में भाग लेने के लिए पंजीयन प्रारंभ हो गये है। इच्छुक प्रतिभागी विधिक सेवा प्राधिकरण जिला न्यायालय परिसर बैतूल में पंजीयन करा सकते है। मैराथन रैली में भाग लेने वाले प्रतिभागियों को प्राथमिकता के आधार पर विधिक सेवा प्राधिकरण के लोगों की टी-शर्ट, केप प्रदान की जाएगी। कार्यक्रम के समापन अवसर पर प्रातः 10 बजे से शाम 6.30 बजे तक विधिक जागरूकता प्रदर्शनी का आयोजन भी किया जाएगा। विधिक सेवा सप्ताह कार्यक्रम के अंतर्गत बुधवार को आरडी पब्लिक स्कूल में प्राचार्य हेमंत मेहर, मानसरोवर स्कूल में प्राचार्य एस.व्ही. चंद्रशेखर, लिटिल फ्लावर स्कूल में प्राचार्य सिस्टर जोगिना व सतपुड़ा वैली स्कूल में प्राचार्य श्री मालवीय के नेतृत्व में निबंध, चित्रकला एवं क्विज प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। विधि कॉलेज बैतूल के विद्यार्थियों का जिला विधिक सेवा प्राधिकरण में क्विज प्रतियोगिता का आयोजन किया गया व नेहरू पार्क के सामने अम्बेडकर चौक बैतूल में पॉक्सो अधिनियम व हनी ट्रैप के संबंध में नुक्कड़ नाटक आयोजित किया गया। जिसमे डॉ.कु. महजबीन खान सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण बैतूल उपस्थित रही।

महिलाओं के लिए कैम्पस ड्राइव 11 को

बैतूल। शासकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्था बैतूल में कैम्पस ड्राइव 11 नंबर को सुबह 10 बजे से आयोजित की जा ही है। इस ड्राइव में 26 वर्ष तक के 10वीं,12वी, किसी भी व्यवसाय में आईटीआई नॉन आईटीआई, डिप्लोमा, डिग्री उत्तीर्ण केवल महिला अभ्यर्थी हिस्सा ले सकते हैं। प्राचार्य केशव सातपुते ने बताया कि इस इस ड्राइव में रेंडस्टेड इंडिया प्राइवेट लिमिटेड पैरोल पर मशीन ऑपरेटर पद के लिए कंपनी के प्रतिनिधि साक्षात्कार हेतु उपस्थित रहेंगे। मासिक वेतन 18800 रूपए रहेगा। जॉब लोकेशन अहमदाबाद रहेगी। इच्छुक अभ्यर्थी आवश्यक दस्तावेज लेकर उपस्थित हो सकते हैं।

ढाबे के रसोइए की संदिग्ध अवस्था में मौत

बैतूल। ढाबे पर रसोइए का काम करने वाले युवक का शव संदिग्ध अवस्था में पड़ा मिला। सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और जांच के बाद शव को पोस्टमार्ट्म के लिए भेज दिया। आशंका है कि युवक की हार्ट अटैक से मौत हुई होगी। फिलहाल पुलिस पोस्टमार्ट्म करवा रही है। जिसके बाद ही मौत की वजह साफ हो सकेगी। कोतवाली पुलिस के एसआई फतेह बहादुर सिंह ने बताया कि गाढ़ा घाट पर रहने वाले बबलू गोस्वामी (36) का शव संदिग्ध अवस्था में मिला है। उसके दोनो हाथ उनके सीने पर थे। इससे आशंका है कि उन्हें हार्ट अटैक हुआ होगा। कोतवाली पुलिस ने पोस्टमार्टम कर जांच शुरू की है।

बुजुर्ग के बैग से उड़ाये 12 हजार

बैतूल। अज्ञात व्यक्ति ने एक बुजुर्ग के बैग से 12 हजार रूपये चोरी कर लिये। जिसकी शिकायत पीड़ित ने मुलताई थाने में दर्ज कराई है। पुलिस सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार किशनलाल पवार (79) निवासी ग्राम कुंडई बुधवार को दोपहर 12 बजे भारतीय स्टेट बैंक मुलताई आए थे। उन्होंने अपने खाते से बारह हजार रुपए निकाले और अपने बैग में रखे। इसके बाद वह एटीएम कार्ड बनाने लाइन में लगे थे, बैंक में अत्यधिक भीड़ थी। जिसका फायदा उठाते हुए किसी अज्ञात व्यक्ति ने उनके बैग से 12 हजार रुपए निकाल लिए हैं।

बैंक के सामने से चोरों ने फिर उड़ाए वृद्ध से रू. 12000

कब थमेगा वृद्धों को निशाना बनाने का सिलसिला,

बैतूल/ मुलताई। नगर के स्टेट बैंक से एक बार फिर एक वृद्ध को निशाना बनाकर बैग से रू. 12000 चोरी का मामला सामने आया है । नगर के बैंकों के सामने घात लगाकर पेंशनर वृद्धो को निशाना बनाकर उनके पैसे चोरी करने का सिलसिला थमने का नाम नहीं ले रहा है बीते 1 साल में अनेक चोरी के मामले सामने आए हैं किंतु अब तक पुलिस एक भी मामले का खुलासा नहीं कर सकती है। बुधवार को भारतीय स्टेट बैंक बैतूल रोड स्थित शाखा से एक बुजुर्ग के बेग से 12000 चोरी होने का मामला सामने आया है। इस पूरे मामले की शिकायत पीड़ित बुजुर्ग द्वारा मुलताई पुलिस से की गई है। बताया जा रहा है कि किशनलाल पवार उम्र 79 साल, निवासी ग्राम कुण्डई के बेग से रुपए चोरी हुए है। पीड़ित किशनलाल पवार ने बताया कि वह आज बुधवार को दोपहर 12 बजे भारतीय स्टेट बैंक बैतूल रोड आए थे। उन्होंने अपने खाते से बारह हजार रुपए निकाले और अपने बेग में रखे। इसके बाद वह एटीएम कार्ड बनाने लाईन में लगे थे,बैंक में अत्यधिक भीड़ थी। भीड़ का लाभ उठाते हुए किसी अज्ञात व्यक्ति ने उनके बेग में से बाहर हजार रुपए निकाल लिये है। पीड़ित ने मामले की शिकायत पुलिस से की हैं।

अनियंत्रित होकर जीप पलटी, 14 घायल, एक गंभीर

बैतूल। मंगलवार रात एक जीप अनियंत्रित होकर पलट गई। हादसे में 14 घायल हो गए। घायलों को उपचार के लिए जिला अस्पताल में भर्ती किया है। बताया जा रहा है कि घायल एक तेरव्ही के कार्यक्रम से वापस लौट रहे थे, तभी झल्लार थाना क्षेत्र के ग्राम बोरगांव जोड़ के पास जीप अनियंत्रित होकर पलट गई। प्राप्त जानकारी के अनुसार ग्राम जामन्या निवासी 14 लोग जीप में सवार होकर तेरव्ही के कार्यक्रम में शामिल होने के लिए ग्राम लायवानी गए थे। वापस लौटते समय जीप ग्राम बोरगांव जोड़ के पास रात लगभग 8 बजे अनियंत्रित होकर पलट गई। इसमें 14 लोग घायल हो गए है। सभी घायलों को उपचार के लिए जिला अस्पताल में भर्ती किया है। बताया जा रहा है कि जीप के चालक द्वारा तेज एवं लापरवाहीपूर्वक गाड़ी चलाने के कारण हादसा हुआ है। हादसे के बाद चालक मौके से फरार हो गया। इस हादसे में घायल साकु पति सुखलाल (60), सतो बाई (60), गजा पति शंकर (60), फुलिया बाई पति मारू (60), अंग्रया (60), शंकर पिता गंगरू (65), सुंदरलाल पिता गंगू (60), कन्हैलाल पिता भूरा (65), बिन्दू बाई पति कन्हैया (60), बाजीलाल पिता बाबूलाल (65), मंगती बाई पति परसराम (60), शीला पति बाजीलाल (60), परसराम पिता गंगू (65) सभी निवासी जामन्या घायल है। घायलों का जिला अस्पताल में उपचार चल रहा है। इसमें एक की हालत गंभीर होना बताया जा रहा है। झल्लार थाना पुलिस हादसे की जांच में जुटी है।

91 वनग्रामों के 222 प्रस्तावों का अनुमोदन

बैतूल। मध्यप्रदेश शासन वन विभाग भोपाल के निर्देशानुसार 91 वनग्रामों में समस्त सुविधाएं प्रदान कराने के लिए कम से कम 9 श्रेणियों के दावे तैयार करने के निर्देश दिये गये थे। सहायक आयुक्त जनजाति कार्य विभाग श्रीमती शिल्पा जैन ने बताया कि उक्त निर्देशों के पालन में वन अधिकार अधिनियम 2006 के तहत जिला वन अधिकार समिति की बैठक आयोजित की गई, जिसमें 91 ग्रामों से प्राप्त 222 नवीन प्रस्ताव प्राप्त हुये। सामुदायिक दावे प्रदाय किये जाने के लिए विगत दिवस कलेक्टर बैतूल नरेंद्र कुमार सूर्यवंशी की अध्यक्षता में आयोजित जिला स्तरीय समिति की बैठक में इन प्रस्तावों का अनुमोदन / मान्य किये गये। बताया गया कि 91 ग्रामों में पूर्व में 362 सामुदायिक दावों को वितरण किये गये है की जानकारी समिति के समक्ष प्रस्तुत की गई है। इसी प्रकार अन्य आवश्यक दावे तैयार किये जाने के लिए अवगत कराया गया।

विधायक स्वेच्छानुदान निधि से होगा कार्य

ग्राम पंचायतों में 3 लाख 40 हजार से होंगे सड़क मरम्मत कार्य

बैतूल। बैतूल विधायक हेमंत खंडेलवाल की स्वेच्छानुदान निधि से बैतूल जनपद पंचायत की 4 ग्राम पंचायतों में 3 लाख 40 हजार रुपए की प्रशासकीय स्वीकृति से सडक़ मरम्मत के कार्य किए जाएंगे। जारी आदेश के अनुसार ग्राम पंचायत जैतापुर के ग्राम बुण्डाला से आरूल जोड़ से आशाराम के खेत तक 70 हजार रुपए की लागत से सडक़ मरम्मत कार्य किया जाएगा। इसी तरह ग्राम भडूस में 1 लाख रुपए की लागत से 4 सड़क मरम्मत के कार्य किए जाएंगे, जिसमें ग्राम भडूस में जानकी नगर से राजू डिगरसे की ओर, ग्रमा भडूस में यदु बाबुजी के खेत से रूप सिंह के खेत की ओर, पंढरी के मकान से कालूराम पाठा की ओर तथा ग्राम भडूस में कृष्णा के मकान से जितेन्द्र सिंह के मकान की ओर शामिल है। ग्राम पंचायत मंडई खुर्द में मुख्य मार्ग से बडढाना से हाईस्कूल पहुंच मार्ग 1 लाख रुपए की लागत से सड़क़ मरम्मत कार्य किया जाएगा। इसी प्रकार ग्राम पंचायत खेडला किला मार्ग से आबादी कच्चे मार्ग पर 70 हजार रुपए की लागत से सडक़ मरम्मत का कार्य होगा। कलेक्टर नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी ने निर्माण एजेंसी ग्राम पंचायत जैतापुर, भडूस, मंडई खुर्द तथा खेडला को योजना के तहत निर्धारित समय सीमा में गुणवत्तापूर्वक रूप से कार्य पूर्ण करने के निर्देश दिए है।

मुलताई विधानसभा में 6 लाख 80 हजार रुपए की लागत से होंगे तीन निर्माण कार्य

बैतूल। मुलताई विधायक चंद्रशेखर देशमुख की स्वेच्छानुदान निधि से मुलताई जनपद पंचायत के तीन ग्रामों में 6 लाख 80 हजार रुपए की प्रशासकीय स्वीकृति से निर्माण कार्य किए जाएंगे। जारी आदेश के अनुसार ग्राम पंचायत टेमझिरा के ग्राम बाडेगांव में महाराणा प्रताप की मूर्ति के पास सार्वजनिक मंच निमार्ण कार्य 2 लाख रुपए की लागत से किया जाएगा। ग्राम पंचायत टेमझिरा में 1 लाख रुपए की लागत से शासकीय माध्यमिक शाला से हरनाखेडी जोड तक 1 किमी सडक मरम्मत कार्य होगा। इसी प्रकार ग्राम पंचायत टेमझिरा के ग्राम बाडेगांव में 3 लाख 80 हजार रुपए की लागत से तालाब में घाट निर्माण कार्य किया जाएगा।

नगर के ऐतिहासिक रामलीला में हुआ अहिरावण वध

बैतूल/मुलताई। मुलताई नगर नगर के ऐतिहासिक रामलीला में बीती रात अहिरावण वध एवं मकरध्वज हनुमान युद्ध की लीला का सुंदर मंचन किया गया। जैसे-जैसे रामलीला अपने अंतिम चरण में पहुंच रही है लोगों का उत्साह भी बढ़ता जा रहा है बीती रात बड़ी संख्या में लोग रामलीला मंचन को देखने गांधी चौक पहुंचे। रामलीला में बाहर से बुलाए गए नर्तक भी इस वर्ष आकर्षण का केंद्र है बीती रात लीला मंच पर सत्यम शिवम सुंदरम के गाने पर जिन्होंने सुंदर प्रस्तुति दी जिसे सभी ने सराहा। मनोरंजन की बढ़ाते साजन के चलते रामलीलाओं के प्रति लोगों का रुझान भी काम हो रहा है किंतु 120 वर्षों से निरंतर गांधी चौक में आयोजित होने वाली रामलीला का आकर्षण बना रहे इसके लिए रामलीला मंडली के लोग प्रतिवर्ष नए-नए प्रयोग करते हैं जो की बहुत हद तक सफल भी होते हैं। मुलताई नगर की ऐतिहासिक राम लीला नगर वासियों की आस्था का केंद्र है । रामलीला मंच को लेकर अनेक मान्यताएं हैं और यही कारण है कि रामलीला का सुंदर मंचन देखने अनेक जिलों से भी लोग यहां आते हैं ।

मकरध्वज एवं हनुमान में हुआ भीषण युद्धः बीती रात रामलीला मंच पर अहिरावण ,राम लक्ष्मण को बंधक बनाकर पाताल लोक ले गया राम लक्ष्मण को मुक्त कराने राम भक्त हनुमान पाताल लोक पहुंचे जहां उनकी भेंट पाताल लोक रक्षक के रूप में उन्हीं के प्रतिरूप मकरध्वज से हुई। मकरध्वज एवं हनुमान मे भीषण युद्ध हुआ जिसके बाद हनुमान को पता चला कि मकरध्वज उन्हीं का पुत्र है। हनुमान ने अहिरावण का वध कर पाताल लोक का राज्य मकरध्वज को सौप राम लक्ष्मण को लेकर वापस लौटे, मां काली का पाठ प्रति वर्ष अनुसार शिशु साहू ने किया वहीं मकरध्वज कपाट अमित शर्मा एवं अहिरावण की सुंदर भूमिका मनीष चंदेल ने निभाई, रामलीला मंचन में व्याश गादी की महत्वपूर्ण भूमिका होती है जो कि बंटी मिश्रा सफलतापूर्वक बीते 15 वर्षों से संभाल रहे हैं।

संस्कारों की पाठशाला है नगर की रामलीला: नगर में प्रतिवर्ष दशहरे से प्रारंभ होने वाली ऐतिहासिक रामलीला, लीला के साथ ही संस्कारों की पाठशाला भी है। जिसकी एक विशेषता यह भी है कि इस लीला मे पाठ करने वाले पात्र सभी स्थानीय होते हैं । रामलीला आरंभ के पूर्व मुकुट पूजन होता है फिर हनुमानजी का ध्वज चढ़ाकर रामलीला का आवाहन किया जाता है इसके उपरांत लीला के मंचन की तैयारियां प्रारंभ होती है पात्रों की का प्रशिक्षण शुरू होता है जिसमें छोटे छोटे बच्चे भी अनेक पाठ निभाते है और इस प्रशिक्षण में राम के अनेक पात्रों और धार्मिक शिक्षा को ग्रहण करते हैं जो संस्कारों के रूप में हमेशा उनके साथ रहता है।

संगठन में ही शक्तिः सुमित्रा देवी अहिरवार

सुबह सवेरे सोहागपुर। आंगनवाड़ी कार्यकर्ता की पुनः पदस्थापना। आंगनवाड़ी सहायिका मिनी कार्यकर्ता कल्याण समिति संघ मध्य प्रदेश की सदस्य श्रीमती ममता धुर्वे आंगनवाड़ी कार्यकर्ता पंगढ़ाल का विगत वर्षों से सेवा समाप्ति का प्रकरण न्यायालय में लंबित था । इस मामले में अपील स्वीकार करके पुनः कार्यभार ग्रहण करने की बहाली का निर्णय किया गया है। इसी क्रम में ज्योति बर्दिया का प्रकरण भी कमिश्नर कार्यालय में लंबित था।उनको भी विजयश्री प्राप्त हुई है। दोनों प्रकरणों में अधिवक्ता ललित कुमार शर्मा ने मामले को अहम भूमिका रही। प्रदेश अध्यक्ष मिनी आंगनबाड़ी कार्यकर्ता श्रीमति सुमित्रा देवी अहिरवार ने दोनों बहनों सभी संगठन से जुड़ी कार्यकताओं को बधाई देते हुए कहा कि सत्य की जीत हुई है। संगठन में ही शक्ति होती है।

थार चालक और उसके भाई को पुलिस ने किया गिरफ्तार

बैतूल। थार जीप से कुचलने का प्रयास करने वाले आरोपियों को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार फरियादी योगराज पिता माखन नरवर, उम्र 27 वर्ष, निवासी अकलवाड़ी मांडवी आठनेर थाने में शिकायत दर्ज कराई थी कि उसकी बहन काशीबाई के साथ उसके पति शिव शंकर द्वारा अक्सर झगड़ा और मारपीट की जाती है। फरियादी जब मांडवी पहुंचा और अपनी बहन से बातचीत की, तो उसने बताया कि उसका पति शिव शंकर, जेठ कैलाश और देवर सोनू उर्फ शिवकुमार उसे गाली-गलौज और मानसिक प्रताडऩा देते रहते हैं। फरियादी द्वारा तीनों को समझाने पर उन्होंने फरियादी के साथ भी मारपीट शुरू कर दी। घटना के दौरान, जब फरियादी योगराज और धर्मेश बसंतीबाई के आंगन में खड़े होकर बातचीत कर रहे थे, तभी सोनू ने अपने घर से थार जीप निकाली और जान से मारने की नीयत से जीप फरियादी की ओर तेजी से चढ़ा दी। फरियादी ने समय रहते खुद को बचा लिया, परंतु जीप की टक्कर से बसंतीबाई और किरणबाई घायल हो गईं। इस घटना में बसंतीबाई को सिर, नाक, और कान में गंभीर चोटें आईं, जबकि किरण बाई के पैर और कमर में भी चोटें आईं। पुलिस ने रिपोर्ट के आधार पर मांडवी थाने में तीन आरोपियों के विरुद्ध धारा 296, 115(2), 109, 3(5) बीएनएस के तहत मामला दर्ज किया गया। मामले की जांच के दौरान पुलिस ने आरोपी सोनू उर्फ शिवकुमार और शिव शंकर पिता मन्नू बारपेटे को गिरफ्तार कर न्यायालय में प्रस्तुत किया। एक अन्य आरोपी फिलहाल फरार है, जिसकी गिरफ्तारी के प्रयास जारी हैं। इस कार्रवाही में थाना प्रभारी बबीता धुर्वे, उप निरीक्षक मांगीलाल ठाकरे, उप निरीक्षक नितिन उईके, सहायक उप निरीक्षक संतोष चौधरी, प्रधान आरक्षक बलराम सरेआम, महिला आरक्षक कंचन और आरक्षक भीम, चंचल तथा विप्लव ने सराहनीय भूमिका निभाई।

वनवृत्त स्तरीय परामर्शदात्री समिति की बैठक संपन्न

• बैठक में उठी कर्मचारियों के स्थायीकरण की मांग

बैतूल। मध्यप्रदेश लिपिक वर्गीय शासकीय कर्मचारी संघ के वनवृत्त कार्यालय बैतूल में वनसंरक्षक बैतूल बासू कनौजिया की अध्यक्षता में वन वृत्त स्तरीय परामर्शदात्री समिति की बैठक संपन्न हुई। जिसमें वनवृत्त बैतूल के वनमण्डलाधिकारी सचिन एचएन एवं नवीन गर्ग तथा उप वनमंडलाधिकारी उपस्थित रहें। बैठक में मप्र लिपिकीय वर्गीय शासकीय कर्मचारी संघ के जिलाध्यक्ष कमलेश चौहान द्वारा वनवृत्त बैतूल के लिपिक कर्मचारियों को कार्यवाहक वरिष्ठ पदनाम देकर उच्च पद का प्रभार प्रदान करने की कार्यवाही शासन निर्देशानुसार शीघ्र किए जाने की मांग रखी। जिसमें वनसंरक्षक बैतूल द्वारा विभागीय स्तर पर वरिष्ठ से मार्गदर्शन प्राप्त कर शीघ्र कार्यवाही किए जाने का आश्वासन दिया गया। इसके अतिरिक्त बैठक में कर्मचारियों के स्थायीकरण, महंगाई भत्ते के एरियर की राशि का भुगतान, 3 वर्ष से अधिक अवधि से एक की टेबल पर पदस्थ कर्मचारियों का टेबल परिवर्तन, कर्मचारियों को समयमान वेतनमान का लाभ, विभागीय पहचान पत्र उपलब्ध कराये जाने, कर्मचारियों के देय स्वत्व का समय से भुगतान जाने पर चर्चा की गई। जिस पर वनसंरक्षक द्वारा मांगों के संबंध में कार्यवाही शीघ्र किए जाने हेतु बैठक में उपस्थित वन मंडल अधिकारियों को निर्देशित किया गया। बैठक में लिपिक वर्गीय शासकीय कर्मचारी संघ के जिलाध्यक्ष कमलेश चौहान, वन कर्मचारी संघ के जिलाध्यक्ष फिरोज अहमद खान, अजाक्स संघ के जिलाध्यक्ष अनिल कापसे, वन एवं वन्य प्राणी कर्मचारी संघ के जिलाध्यक्ष आकाश प्रधान, तृतीय वर्ग कर्मचारी संघ के जिलाध्यक्ष मनीष उदासी, कर्मचारी कांग्रेस के सचिव वासनिक सहित अधिकारी व कर्मचारी उपस्थित रहें।

समाज सेवा को समर्पित पूर्व नपाध्यक्ष श्री चौधरी के जन्मदिन पर हुई काव्य संध्या

सुबह सवेरे सोहागपुर समाज सेवा को समर्पित पूर्व नपाध्यक्ष राजेन्द्रसिंह चौधरी के जन्मदिन के अवसर पर काव्य संध्या का आयोजन उनके निवास पर किया गया। इस काव्य संध्या में नगर की प्रमुख विभूतियों, साहित्यकारों, गणमान्य नागरिकों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई ।इस काव्य संध्या में श्री चौधरी की समाजसेवा, समाज के प्रति उनकी निस्वार्थ भावना को लेकर उनकी प्रेरणादायी जीवन यात्रा पर आधारित कविताओं और गीतों में समाहित कर दिया।

इस अवसर पर उपस्थित जनों ने दीप प्रज्वलन एवं मंगलाचरण करने के उपरांत वरिष्ठ कवियों एवं साहित्यकारों ने अपनी ओजपूर्ण रचनाओं से श्री चौधरी के समाजसेवा के प्रति समर्पण, अद्वितीय व्यक्तित्व एवं जनसेवा के कार्यों को अपनी कविताओं में उद्धत करके प्रशंसा की। अंत में चौधरी राजेंद्रसिंह को पुष्पगुच्छ एवं स्मृति चिन्ह प्रदान करके सम्मानित किया । सभीने उनके दीर्घायु की कामना की। श्री चौधरी ने सभी उपस्थित जनों के प्रति आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम में गणमान्य नागरिक एवं नगर के कवि गण उपस्थित थे। उल्लेखनीय है कि पूर्व नपाध्यक्ष राजेन्द्र सिंह चौधरी निरंतर कई वर्षो से डोल ग्यारस समिति के अध्यक्ष पद पर आसीन हैं। डोल ग्यारस पर आपके सानिध्य में धार्मिक आयोजन होते हैं।

मासूम बच्ची के हत्यारे पिता को पुलिस ने किया गिरफ्तार

बैतूल। तीन दिन पहले अपनी बच्ची को पटक कर हत्या करने वाले पिता को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार 2 नवंबर को शाम करीब 6 बजे तुकाराम पिता झोरे शैलूकर (उम्र 30 वर्ष) निवासी ग्राम सोनोरा, अपनी बहन जसवंती के घर ग्राम मानी में अपनी पत्नी लक्ष्मी और एक वर्ष की मासूम बेटी छतरु उर्फ राजवंती के साथ मेहमानी में आया था।

उसकी पत्नी लक्ष्मी के बीच किसी बात को लेकर विवाद हुआ, जिसके कारण तुकाराम को अत्यधिक क्रोध आ गया। तुकाराम ने अपनी ही मासूम बेटी छतरु उर्फ राजवंती को गुस्से में उठाकर दो बार जमीन पर जोर से पटक दिया। जिससे बच्ची के कानों से खून बहने लगा। तुकाराम की बहन जसवंती ने बच्ची की हालत देखकर उसे तुरंत तुकाराम से अलग किया और इलाज के लिए गांव के स्थानीय दवाखाने लेकर गई। हालत गंभीर देखते हुए बच्ची को मोर्शी महाराष्ट्र के अस्पताल भेजा गया, जहां बच्ची को उसके पिता तुकाराम द्वारा भर्ती कराया गया। अस्पताल में इलाज के दौरान मासूम बच्ची की मौत हो गई। घटना की जानकारी मिलते ही पुलिस अधीक्षक द्वारा आरोपी की तत्काल गिरफ्तार किए जाने के लिए थाना प्रभारी आठनेर को निर्देशित किया गया। निर्देशानुसार आठनेर पुलिस द्वारा बालिका की हत्या के जुर्म में आरोपी तुकाराम पिता जगलिया शेलूकर के खिलाफ धारा 103 बी.एन.एस. (भारतीय दंड संहिता के तहत हत्या) के अंतर्गत मामला पंजीबद्ध किया गया। पुलिस ने आरोपी तुकाराम को गिरफ्तार किया और उसे न्यायालय भैंसदेही में पेश किया गया, जहां से उसे जेल भेज दिया गया है।

जिला औषधि विक्रेता संघ का 50 सदस्यीय दल अयोध्या के लिए कल होगा रवाना, केंद्रीय मंत्री देंगे हरी झंडी

बैतूल। जिला औषधि विक्रेता संघ ने एक अनूठी पहल करते हुए अपने पदाधिकारियों और सदस्यों को अयोध्या दर्शन के लिए ले जाने का आयोजन किया है, जिससे यह संगठन संभवतः मप्र का ऐसा पहला संगठन बन गया है। जिला औषधि विक्रेता संघ के तत्वाधान में आयोजित इस यात्रा का नेतृत्व संघ के अध्यक्ष मनजीत सिंह साहनी करेंगे। संस्था के वरिष्ठ सदस्य रामप्रकाश गुगनानी ने बताया कि इस यात्रा का उद्देश्य अयोध्या में प्रभु श्रीराम के दर्शन करना और धार्मिक आस्था को सुदृढ़ करना है। इस अवसर पर संघ के सदस्य भगवान श्रीराम की जन्मभूमि पर पूजा-अर्चना करेंगे। उन्होंने बताया कि औषधि विक्रेताओं का 50 सदस्यीय दल कल शुक्रवार, 8 नवंबर को वोल्वो बस से प्रभु श्रीराम की जन्मस्थली अयोध्या के लिए रवाना होगा। इस यात्रा का शुभारंभ केसर बाग मैरिज लान से शाम 4 बजे केंद्रीय राज्य मंत्री दुर्गादास उइके विधायक हेमंत खंडेलवाल, और जनअभियान परिषद के प्रदेश उपाध्यक्ष मोहन नागर हरी झंडी दिखाकर करेंगे।सचिव सुनील सलूजा और कोषाध्यक्ष जयदेव गायकी यात्रा के आयोजन में प्रमुख भूमिका निभाएंगे। संघ के सदस्य सुधाकर वागद्रे, राजेश भाई मेहता, भाजपा नेता अतीत पवार, दीपक सलूजा और अरुण जयसिंहपुरे ने धार्मिक यात्रा में सहभागिता को लेकर उत्साह व्यक्त किया है।

रामप्रकाश गुगनानी ने सभी दवा व्यवसायियों और धार्मिक बंधुओं से इस विशेष अवसर पर उपस्थित रहने की अपील की है, ताकि संघ की इस पहल को और अधिक समर्थन और सराहना मिल सके। यह यात्रा संघ के सदस्यों में एकता और धार्मिक आस्था को और भी प्रगाढ़ करेगी। यात्रा के संयोजक राजा खंडेलवाल ने बताया कि इस पवित्र यात्रा में श्रद्धालुओं को अयोध्या के विभिन्न धार्मिक स्थलों का भी भ्रमण करने का अवसर मिलेगा। जिला औषधि विक्रेता संघ की यह पहल बैतूल जिले के औषधि विक्रेताओं के बीच धार्मिक और सांस्कृतिक एकता का प्रतीक बनेगी। संघ के सदस्यों के अनुसार, यह यात्रा उनके लिए एक धार्मिक अनुभव होगी, समाज में एकता और भक्ति का संदेश भी प्रसारित करेगी।

धर्माचार्य के कदमों पर नतमस्तक शिक्षा मंत्री श्री राव..

धर्माचार्य और शिक्षा मंत्री , ऐतिहासिक सरकारी स्कूल को बलि चढ़ने से बचाएं..

नर्मदापुरम- संजीव डे राय।

शिक्षा मंत्री राव उदय प्रताप सिंह धर्म और धर्माचार्य के प्रति अटूट विश्वास और श्रद्धा रखते हैं अपने दायित्वों का निर्वहन करते हुए नर्मदापुरम आगमन पर जिन्होंने समय निकालकर धर्म और धर्माचार्यों पर विश्वास और श्रद्धा की कड़ी को मजबूती दी है, सोशल मीडिया पर शिक्षा मंत्री राव उदय प्रताप सिंह की कुछ तस्वीरें नगर के प्रसिद्ध धर्माचार्य सोमेश परसाई के साथ सांझा की गई जो काफी सुर्खियों में लोगों का उन पर विश्वास बटोर रही है। धर्माचार्य सोमेश परसाई के संरक्षण में वैसे भी आगामी 7 से 13 तारीख तक नगर में श्री सवा करोड शिवलिंग निर्माण और संगीतमय रुद्राभिषेक का कार्यक्रम निर्धारित है। जिसमें बड़े-बड़े राजनैतिकों और धर्म से जुड़े लोगों का शामिल होना धर्माचार्य सोमेश जी के इस आयोजन की गरिमा की भव्यता बढ़ाती है।

नगरवासी धर्मप्रेमी मंत्री राव उदय प्रताप सिंह सहित धर्माचार्य सोमेश परसाई से अपेक्षा करते हैं कि धर्म ध्वजा को धारण करने वाले धर्माचार्य और शिक्षा मंत्री, पूज्य शंकराचार्य जी के चरण कमल जिस बजरिया स्कूल में पड़े थे उस बजरिया स्कूल को राजनीति का शिकार नहीं होने दें। इस मामले को संज्ञान लेकर ऐतिहासिक एक सरकारी स्कूल की बलि चढ़ने से रोकें, नगर के एक बड़े भू-माफिया के संरक्षण में इस सरकारी स्कूल की भूमि पर कब्जे की नियत से बजरिया स्कूल नेस्तनाबूद कर अपने ही अधिकार क्षेत्र में लेने के लिए वहां सरकारी पैसों पर अनावश्यक बनाए जाने वाले आडिटोरियम निर्माण कार्य प्रारंभ करने की धूर्तता चल रही है।

पिता को मैसेज भेजा-मरने जा रहा हूं

पन्ना के तालाब में मिला दिल्ली यूनिवर्सिटी के स्टूडेंट का शव; कहता था-मेरी गॉड से बात होती है

पन्ना (नप्र)। पापा, हम मरने जा रहे हैं। अलविदा। पिता के मोबाइल पर यह मैसेज भेजकर एक युवक घर से चला गया। दो दिन बाद उसका शव तालाब में मिला। वह दिल्ली यूनिवर्सिटी में साइकोलॉजी से पोस्ट ग्रेजुएशन कर रहा था। मामला पन्ना का है। कमल किशोर चित्रकार शहर के कोतवाली क्षेत्र में परिवार के साथ रहते हैं। वन विभाग में डिप्टी रेंजर हैं। उन्होंने पुलिस को बताया, बेटा शिवम चित्रकार (21) 4 नवंबर की शाम घर से लापता हो गया। करीब एक घंटे बाद मोबाइल पर मैसेज मिला। मैसेज पढ़कर तत्काल कोतवाली पहुंचे और शिकायत दर्ज कराई।

तालाब में उतराता मिला शवः कमल किशोर की शिकायत पर पुलिस गुमशुदगी दर्ज कर शिवम की तलाश में जुट गई। सोमवार और मंगलवार को उसे हर संभावित ठिकाने पर तलाश किया। आसपास के जंगल एरिया में ढूंढा। इलाके के धरम सागर तालाब में भी देखा लेकिन कुछ पता नहीं चला। बुधवार सुबह शिवम का शव तालाब में उतराता दिखा। पुलिस ने होमगार्ड और एसडीईआरएफ की टीम की मदद से उसे बाहर निकाला। पंचनामा के बाद पोस्टमार्टम के लिए भेजा।

कहता था- मेरी गॉड से बात होती है: कमल किशोर ने बताया, एक साल पहले शिवम दो पेपर में फेल हो गया था। वह डिप्रेशन में रहने लगा। इस कारण उसे घर ले आए। घर में कभी-कभी वह ईसाई धर्म के बारे में बातें करता था। कहता था- मेरी गॉड से बात होने लगी है। मैं गॉड के पास ही चला जाऊंगा। करीब छह महीने से उसका इलाज भी चल रहा था।

पड़ोसी बबलू यादव ने बताया कि शिवम परिवार का इकलौता बेटा था। पिछले महीने उसने छत से कूदकर खुदकुशी की कोशिश भी की थी।

अंशकालीन कर्मचारियों का नीलम पार्क में धरना 17 को

मानदेय में वृद्धि चाहते हैं कर्मचारी, कहा-5000 रुपए में गुजारा नहीं होता

भोपाल (नप्र)। मध्य प्रदेश में विभिन्न विभागों में सेवाएं दे रहे 20 हजार से अधिक अंशकालीन कर्मचारी और सफाईकर्मी मानदेय में वृद्धि की मांग को लेकर 17 नवंबर को नीलम पार्क में धरना देंगे। मध्य प्रदेश लघु वेतन कर्मचारी संघ की मंगलवार को हुई बैठक में धरना देने का निर्णय लिया गया है। इन कर्मचारियों का कहना है कि हमें 5000 रुपए मानदेय दिया जा रहा है, महंगाई के इस दौर में इतनी राशि में गुजारा करना संभव नहीं है। संघ के अध्यक्ष महेंद्र शर्मा ने बताया कि ये कर्मचारी अंशकालीन या पूर्णकालीन कर्मचारी के रूप में जनजातीय कार्य विभाग के हॉस्टल, स्वास्थ्य केंद्रों, पशुपालन विभाग, तकनीकी शिक्षा विभाग, स्कूल शिक्षा, जनसंपर्क सहित अन्य विभागों में कार्यरत हैं। इन कर्मचारियों का मानदेय वर्ष 2018 में 1000 रुपए बढ़ाकर 5000 रुपए किया गया था। उन्होंने कहा कि महाधिवेशन में इन कर्मचारियों की मांगें पूरी करने का अनुरोध किया गया था, जो नहीं हुआ है। इसलिए अब धरना देना पड़ रहा है। शर्मा कहते हैं कि कई अंशकालीन कर्मचारी 25 और 30 वर्ष से सेवा दे रहे हैं, लेकिन उनको केवल 5000 रुपए ही मानदेय मिल रहा है। आज की महंगाई में इतनी राशि से जीवन नहीं चलाया जा सकता है। ये परिवार आर्थिक संकट के दौर से गुजर रहे हैं। परिवार के बच्चों की शिक्षा नहीं हो पा रही है। संघ की केंद्रीय प्रबंध समिति की बैठक में मार्गदर्शक निहाल सिंह जाट, महामंत्री गौरी शंकर मालवीय, राजेंद्र बहादुर सिंह, धर्मेंद्र शर्मा, उप प्रांताध्यक्ष राम कुंडल सेन, कैलाश लाल, प्रांतीय सचिव दिनकर राव, बड़े लाल तिवारी, प्रवीण सिंह तोमर, निर्णय समिति के अध्यक्ष मांगीलाल तमोली, स्वास्थ्य समिति भोपाल के अध्यक्ष पंकज संगत एवं कोषाध्यक्ष कमलेश पटेल उपस्थित रहे।

कर्मचारियों की प्रमुख मांगें

- 7 वर्ष पूर्ण करने वाले अंशकालीन को पूर्णकालीन कर्मचारी का दर्जा दिया जाए।
- कर्मचारियों के आश्रित परिवार को अनुकंपा नियुक्ति दी जाए।
- सेवानिवृत्ति पर कम से कम 5 लाख रुपए अनुग्रह राशि दी जाए।
- स्वास्थ्य बीमा योजना का लाभ दिया जाए।
- 10 वर्ष की सेवा के बाद स्थाई कर्मी का दर्जा दिया जाए।

हाथियों की मौत के कारण और निलंबित अधिकारियों के मसले को लेकर सेवानिवृत्त अधिकारी श्री चतुर्वेदी संतुष्ट नहीं..

नर्मदापुरम। बांधवगढ़ में हाथियों के मरने की घटना पर विभाग द्वारा निलंबित किए अधिकारीयों के मामले में पूर्व अधीक्षक बोरी अभ्यारण्य सतपुड़ा टाइगर रिजर्व होशंगाबाद के सेवानिवृत्त मधुकर चतुर्वेदी ने अपनी प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि वहां अनुभवी अधिकारियों की स्वतंत्र पोस्टिंग की जरूरत थी किंतु प्रशासन के संयुक्त प्रभार जिसमें पद के कारण निजी स्वार्थ के चलते प्रथक अधिकारी पोस्ट नहीं होते विभाग में एक बड़ा समस्या है। श्री चतुर्वेदी ने आगे कहा मध्य प्रदेश के उच्च प्रशासनिक अधिकारी की दुर्लक्ष का परिणाम अब बांधव गढ़ में 10 हाथियों की एक साथ हुई मृत्यु के मामले में अजीब आदेश जारी कर वहां के अवकाश पर गए क्षेत्र संचालक गौरव चौधरी और पूर्व कारणों से एसीएफ को तो निलंबित कर स्वच्छ प्रशासन के नाम पर एक छोटी सर्जरी तो कर दी गई, यहां फील्ड डायरेक्टर के अवकाश पर जाने से श्री वर्मा डिप्टी डायरेक्टर पर सुरक्षा और पार्क की जिम्मेदारी होती है उन्हें निलंबित नहीं किया जाना प्रशासनिक अधिकारीयों की अक्षमता दर्शाता है। श्री चतुर्वेदी ने कहा कि बांधवगढ़ टाइगर रिजर्व भारत के टाइगर बाहुल्य क्षेत्रों में जान जाता रहा है, किन्तु गत 1 वर्ष से भी अधिक समय से बिना किसी फील्ड डायरेक्टर की पद्धति के काम चलाऊ मुख्य वन संरक्षक शहडोल और डिप्टी डायरेक्टर वर्मा के कार्यकाल में शिथिलता के चलते सुरक्षा के प्रबंध शिथिल होते चले गए और उसके परिणाम स्वरूप हाथियों के झुंड की आमद होने पर न ग्रामीण तंत्र सचेत हुआ न विभागीय अधिकारियों ने इस ओर कोई ध्यान ही नहीं दिया गया। जिसे अब शहडोल वन संरक्षक द्वारा 3 नवम्बर को 34 कर्मचारियों की ड्यूटी लगा कर कर्तव्य की इति श्री कर दी। श्री चतुर्वेदी कहते हैं कि इस मामले में प्रशासनिक वरिष्ठ जो स्थापना के सर्वे सर्वा अधिकारी यों द्वारा उचित अधिकारियों को पदस्थ नहीं करना अब आक्षेप और चर्चा का विषय बन गया हे विभाग में छ्व, देवा प्रसाद जैसे जाने माने अधिकारियों को पदस्थ किया जाना उचित होता जो केरल में पेरियार टाइगर रिजर्व में 4 वर्षो से कार्यरत थे जहां हाथियों के मूवमेंट पर उन्हें बहुत अच्छा अनुभव रहा है बेहतर होता। श्री चतुर्वेदी आगे कहते हैं फिर प्रमुख सचिव वन द्वारा पूर्व में लापरवाह कर्मचारियों के विरुद्ध कठोर निर्णय नहीं लिए जाने के कारण विदिशा में लटेरी कांड सुर्खियों में रहा जहां अजय पाण्डे तत्कालीन रायसेन डीएफओ को कम चलाऊ डीएफओ बना दिया था उन्हीं अजय पांडे जिनके विरुद्ध आर्थिक भ्रष्टाचार की विभागीय और 4 अन्य जांचों में आर्थिक एवं प्रशासनिक भ्रष्टाचार की जांच मंत्रालय में लंबित है, जिनका सेवाकाल के मात्र 7 माह शेष हे उन्हें शहडोल का वन संरक्षक बना दिया जाना उनकी प्रशासन में मजबूत पकड़ का प्रमाण है। जिसका खामियाजा बांधवगढ़ क्षेत्र को भुगतना पड़ रहा है। श्री चतुर्वेदी कहते है कि हाथियों की मृत्यु के कारण की विभाग की भिन्न भिन्न दलीलें समाचार पत्र छाप रहे हे जो बिना पोस्टमार्टम की रिपोर्ट के कल्पना पर आधारित हैं। कोदो कुटकी की थ्योरी को माननीय मुख्य मंत्री मोहन यादव ने शुरू से ही नकार दिया गया हे और एसीएस वन एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारियों को मौके पर जाकर वास्तविकता का पता लगाने तत्काल रवाना किया जिन्होंने लोट कर प्रशासनिक कारणों से मौके पर पदस्थ पीके वर्मा को अभयदान देते हुए स्वीकृत अवकाश पर गए उनसे वरिष्ठ सीएफ गौरव चौधरी और एसीएफ उन्हें निलंबित तो करवा दिया किन्तु हाथियों की दर्दनाक मृत्यु के कारणों का खुलासा नहीं कर पाए हे जो पोस्ट मार्टम और फोरेंसिक जांच पड़ताल के बाद ही स्थिति स्पष्ट हो पाती है। श्री चतुर्वेदी कहते हैं कि यहां भी असफलता का ठीकरा कर्मचारियों पर थोपने के बाद वहां आज भी सक्षम समर्पित अधिकारियों जे.जे.दत्ता, परशुराम लाड, पंवार , अमरसिंह परिहार जैसे समर्पित अधिकारियों की पोस्टिंग अपेक्षित है न की नौसिखिए किताबी ज्ञान के अधिकारियों की... श्री चतुर्वेदी मानते हैं कि प्रशासनिक कमजोरी के चलते गौरव चौधरी जिनकी मां का स्वास्थ अधिक खराब हो जाने से अपरिहार्य स्थिति में रवाना होना पड़ा उनका प्रभार स्थानीय वन संरक्षक शहडोल को दिलाया जाना भी प्रशासकीय अधिकारियों की निर्णय क्षमता भी विचारणीय है। श्री चतुर्वेदी बताते हैं कि हाथियों की मृत्यु अत्यंत दुर्भाग्य पूर्ण घटना है पूर्व में सतपुड़ा टाइगर रिजर्व में विक्रम हाथी की गर्मी से मृत्यु भी अविवेक पूर्ण व्यवस्था का प्रमाण था। एसीएस अशोक वर्णवाल के प्रशासन के द्वितीय चरण में इस प्रकार की शिथिलता के कारण वन्य प्राणियों की इस प्रकार की घटना की पुनरावृति न हो अपेक्षित रहेगी।

राइट क्लिक

तारीखों में बदलाव : सवाल तो चुनाव आयोग के 'होमवर्क' पर है....

अजय बोकिल

लेखक सुबह सवेरे के वरिष्ठ संपादक हैं।
संपर्क-
9893699939
ajaybokil@gmail.com

एक ही साल में यह तीसरी बार है, जब भारत निर्वाचन आयोग ने मतदान और मतगणना की तारीखें चुनाव कार्यक्रम घोषित हो जाने के बाद बदली हैं। एक बार मतगणना की तो दो बार मतदान की। चुनाव आयोग के मुताबिक यह राजनीतिक दलों की मांग और जन भावनाओं को ध्यान में रखकर किया गया फैसला है। विपक्षी दलों ने इसको लेकर भी चुनाव आयोग की मंशा पर संदेह जताया है। वोटिंग और काउंटिंग की तारीखें बार-बार बदलने से चुनाव परिणामों पर कितना और कैसा असर होता है, यह बहस का विषय है, लेकिन एक बार चुनाव कार्यक्रम घोषित हो जाने के बाद इस तरह तारीखें बदलने से चुनाव आयोग के होम वर्क पर सवाल जरूर खड़े होते हैं। आयोग तारीखों की घोषणा के पहले इन सब बातों पर समग्रता से विचार नहीं करता या राज्यों के निर्वाचन पदाधिकारी उन्हें क्षेत्र की धार्मिक सांस्कृतिक परंपरा की सही जानकारी नहीं देते? तारीखों में ऐसे बदलाव का सबसे हैरानी भरा फैसला तो इस साल अप्रैल-मई में लोकसभा के साथ अरूणाचल और सिक्किम विधानसभा चुनाव की मतगणना की तारीख निर्धारित तिथि से पहले खिसकाने का था, क्योंकि आयोग द्वारा घोषित काउंटिंग की तारीख से पहले ही दोनों राज्यों ही विधानसभाओं का कार्यकाल समाप्त हो रहा था। इन विधानसभाओं के चुनाव भी पांच साल पहले चुनाव आयोग ने ही कराए थे।

चुनाव तारीखें बदलने की श्रृंखला में ताजा कड़ी इस माह होने वाले 14 विधानसभाओं के उपचुनावों की तारीखें बदलने की है। पहले चुनाव आयोग ने इन उपचुनावों के लिए मतदान की तिथि 13 नवंबर तय की थी। उस हिसाब से चुनाव प्रक्रिया भी शुरू हो गई थी। लेकिन अब इसे बदलकर 20 नवंबर कर दिया गया है। इस बारे में चुनाव आयोग का कहना है कि 13 नवंबर को उपचुनाव वाले कुछ विधानसभा क्षेत्रों में मतदान की तारीख परिवर्तित करने के लिए विभिन्न मान्यता प्राप्त राष्ट्रीय और राज्य स्तरीय राजनीतिक दलों (भाजपा, कांग्रेस, बसपा, रालोद सहित) और कुछ सामाजिक संगठनों से उसे ज्ञापन मिले हैं। मतदान के दिन होने वाले सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक कार्यक्रमों के कारण बड़ी संख्या में लोगों को असुविधा हो सकती है। ऐसे में मतदान में मतदाताओं की भागीदारी कम हो सकती है। ये भी संयोग ही है कि आयोग की इस घोषणा से पहले यूपी के सीएम योगी आदित्यनाथ, भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा ने एक दिन पहले पीएम मोदी से मुलाकात की थी। अगले ही मतदान की तारीखें बदलने की खबर आई। गौरतलब कि देश में दो राज्यों महाराष्ट्र और झारखंड विधानसभा के साथ देश में 14 राज्यों की 47 विधानसभा क्षेत्रों और 2 लोकसभा सीटों पर उपचुनाव भी हो रहे हैं। लेकिन चुनाव तारीखों में बदलाव सिर्फ यूपी, पंजाब और केरल की विधानसभा सीटों के उपचुनाव के लिए किया गया है। इन राज्यों में मतदान अब 20 नवंबर को होगा। उपचुनाव के लिए मतदान की तारीखें बढ़ाने के पीछे वजह उत्तर प्रदेश में 15 नवंबर को कार्तिक पूर्णिमा का त्यौहार, पंजाब में इसी दिन गुरू नानक देवजी का प्रकाश पर्व और 13 नवंबर से अखंड पाठ शुरू होना तथा केरल में 13 से 15 नवंबर तक कलपथि रास्तोसेल्वम पर्व मनाया जाना है। यूं कार्तिक पूर्णिमा पर नदियों में पवित्र स्नान तो लगभग सभी राज्यों में होता है, लेकिन चुनाव आयोग ने केवल यूपी पर ध्यान दिया, यह भी अहम बात है। जहां तक इन त्यौहारों की बात है तो इनमें से कोई भी ऐसा पर्व नहीं है, जिसकी तिथि पहले से तय नहीं हो। तो क्या चुनाव आयोग सभी धर्मो के धार्मिक सांस्कृतिक कैलेंडर नहीं देखता या फिर पर्वों की महत्ता का आकलन अपने हिसाब से करता है? आयोग चुनाव कार्यक्रम घोषित करने से पहले सभी राजनीतिक दलों से चर्चा करता है। क्या उसमें यह मुद्दा नहीं उठाया जाता? सियासी पार्टियों की नींद भी देर से क्यों खुलती है? क्या इसके पीछे वोटरों के कम मतदान का भय छिपा होता है या अपनी सुविधा के अनुसार चुनाव की तारीखें तय करने की चाल होती है? यह भी विडंबना है कि जहां मतदान को मतदाता का प्राथमिक कर्तव्य बताया जाता है, वहीं दूसरी तरफ समूची व्यवस्था को इस बात से डर भी लगता है कि ऐन वक्त पर वोटर कहीं अपनी धार्मिक निष्ठा को वोटिंग से ज्यादा तवज्जो न दे दे। हालांकि यह तर्क बहुत वजनदार नहीं है कि केवल किसी धार्मिक पर्व के होने से मतदाता वोट देने नहीं जाते अथवा कम जाते हैं। जब कोई धार्मिक पर्व नहीं होता तब भी कई बार वोटिंग प्रतिशत बहुत कम रहता है, मतदाता उदासीन रहता है। इसके पीछे क्या तर्क देंगे? धार्मिक सामाजिक पर्वों की वजह से चुनाव तारीखें बदलने के पीछे आयोग द्वारा दिए कारण को मान भी लें तो भी किस विधानसभा का कार्यकाल कब खत्म हो रहा है और किस तिथि तक उस विस चुनाव की प्रक्रिया पूरी कर ली जानी चाहिए, यह काम तो चुनाव आयोग और उसकी मशीनरी का ही है। चुनाव इस देश में 70 सालों से हो रहे हैं, लेकिन ऐसा अपवादस्वरूप ही हुआ होगा कि एक बार आयोग मतगणना की तिथि घोषित कर दे तथा उसे बाद में ख्याल आए कि काउंटिंग तो विधानसभा का कार्यकाल खत्म होने के पहले ही पूरी हो जानी चाहिए थी। विस का कार्यकाल पूरा होने के पहले चुनाव प्रक्रिया पूरा कराना चुनाव आयोग की संवैधानिक बाध्यता है। लेकिन पांच माह पहले हुए अरूणाचल और सिक्किम के विधानसभा चुनाव के दौरान आयोग को यह देर से ध्यान में आया कि मतगणना की जो तारीख उसने तय की है, उसके पहले ही विस कार्यकाल खत्म हो रहा है। पिछले विस चुनाव भी आयोग ने ही कराए थे, तो क्या पुराना रिकॉर्ड भी नहीं देखा जाता?

इसके पहले हरियाणा विस चुनाव में भी आयोग ने मतदान की तारीख बदली थी। इस पर विपक्ष ने आरोप लगाया था कि वहां सत्तारूढ़ भाजपा हार रही है, इसलिए तारीख बदलवाई गई। हालांकि नतीजा उलटा ही आया। हरियाणा में विस चुनाव के लिए मतदान 1 अक्टूबर को होना थे, बाद में इसे बदलकर 4 अक्टूबर किया गया। कारण यह बताया गया कि 1 अक्टूबर को विश्नोई समाज का वार्षिक मेला लगता है। इसी के चलते विश्नोई महासभा ने भी तारीख बदलने की मांग की थी।

सवाल यह है कि चुनाव आयोग मतदान की तारीखें बदलने के मापदंड अलग-अलग क्यों हैं? इस तरह तारीखें बदलना चुनाव आयोग की संवेदनशीलता है या फिर अधूरी तैयारी? गौर करें कि 2019 में लोकसभा चुनाव के दौरान रमज़ान महीना भी पड़ रहा था तब कई राजनीतिक दलों और मुस्लिम संगठनों ने आयोग के सामने चुनाव तारीखें बदलने का आग्रह किया था। उस समय आयोग ने कहा था कि रमजान के लिए चुनाव प्रक्रिया नहीं रोक सकते। हालांकि इसमें एक पेंच यह भी है कि रमजान पूरे एक माह चलता है। दो तीन दिन के लिए तारीखें बदली जा सकती हैं। लेकिन एक महीना चुनाव कार्यक्रम खिसकाना आसान और व्यावहारिक भी नहीं है। इसी प्रकार कार्तिक पूर्णिमा पर राजस्थान में 12 नवंबर से 15 नवंबर तक पुष्कर में लोग पवित्र स्नान करते हैं। मेला भी लगता है। बावजूद इसके राजस्थान की 7 विस सीटों पर उपचुनाव 13 नवंबर को ही हो रहे हैं।

इसके विपरीत यूपी में सभी 9 विस सीटों पर उपचुनाव के लिए वोटिंग की तारीखें बदली गई हैं। बताया जाता है कि बहराइच दंगों की वजह से ये तारीखें बदली गईं। यहां चुनाव नतीजों को लेकर भाजपा की अंदरूनी रिपोर्ट नकारात्मक होने की चर्चा है, जबकि समाजवादी पार्टी और कांग्रेस ने आरोप लगाया कि बहराइच दंगा भाजपा ने उपचुनाव जीतने के लिए कराया था। सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने तो सोशल मीडिया पर एक्स पर लिखा- टालेंगे तो और भी बुरा हारेंगे ! हालांकि हमेशा ऐसा हो, जरूरी नहीं है। मतदाता की अपनी सोच, समझ और प्राथमिकता होती है। इसमे धार्मिक पर्व और राजनीतिक गुणा भाग कितना आड़े आते हैं, यह शोध का विषय है। लेकिन जो फर्क है, वो यह है कि चुनाव आयोग सात दशकों से चुनाव कराता रहा है, लेकिन इस तरह तारीखों में हेरफेर अपवाद स्वरूप ही होता था। अब यह परंपरा-सी बनती जा रही है, अगर ऐसा ही होना है तो चुनाव की महीनो पहले से शुरू होने वाली तैयारियों और होमवर्क का क्या मतलब है? या तो वो अधूरी होती हैं या फिर समग्रता के साथ नहीं होतीं।

भोपाल में 46 वन कर्मियों का सम्मान

•वन बल प्रमुख ने रेंजर, डिप्टी रेंजर, वनपाल और वनरक्षकों को सौंपे कमेंडेशन डिस्क

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश के अलग-अलग जिलों और वन क्षेत्रों में पदस्थ 46 अधिकारियों और कर्मचारियों का बुधवार को सम्मान किया गया। प्रदेश के प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं वन बल प्रमुख असीम श्रीवास्तव और प्रधान मुख्य वन संरक्षक (अनुसंधान विस्तार) पीके सिंह ने आज भोपाल में इन अधिकारियों और कर्मचारियों को 'कमेन्डेशन डिस्क' और 'प्रशस्ति पत्र' प्रदान किए। यह सम्मान समारोह वन भवन (वन मुख्यालय) तुलसी नगर हुआ। प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं वन बल प्रमुख श्रीवास्तव के अनुसार वर्ष में एक बार यह पुरस्कार कार्यपालिक अधिकारियों, कर्मचारियों- वन क्षेत्रपाल, उप वन क्षेत्रपाल, वनपाल और वनरक्षक को दिए जाने का प्रावधान है। यह पुरस्कार वर्ष 2022 में पहली बार शुरू किया गया था और हर वर्ष अधिकतम 50 वन अधिकारियों एवं कर्मचारियों को उनके उत्कृष्ट कार्यों के लिए सम्मानित किया जाता है। मध्यप्रदेश के अलग-अलग जिलों और वन क्षेत्रों में पदस्थ 46 अधिकारियों और कर्मचारियों का बुधवार को सम्मान किया गया। वन मुख्यालय स्तर पर सायटेशन की छानबीन एवं समस्त प्रकरणों की छानबीन के लिए प्रधान मुख्य वन संरक्षक (प्रशासन-आई) की अध्यक्षता में समिति का गठन किया है। समिति द्वारा समस्त वन वृत्तों से प्राप्त प्रस्तावों का परीक्षण कर वर्ष 2024 के लिए 46 अधिकारी-कर्मचारियों को कमेन्डेशन डिस्क एवं प्रशस्ति-पत्र दिए जाने की अनुशंसा की गई। इनमें चार महिलाएं और खेल-कूद में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले चार कर्मचारी भी शामिल हैं।

वन संवर्धन और सुरक्षा के क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए सम्मान: यह पुरस्कार वन अधिकारियों और कर्मचारियों को वनों की सुरक्षा, वन अपराधों पर रोकथाम, आग प्रबंधन, वानिकी कार्यों और नवाचार के क्षेत्र में उनके विशेष योगदान के लिए दिया गया है। समिति द्वारा चयनित अधिकारियों और कर्मचारियों ने अवैध शिकार, अतिक्रमण, अवैध कटाई और उत्खनन जैसी चुनौतियों के खिलाफ सराहनीय कार्य किया है।

भोपाल में बोले शिवराज- मैं तो झारखंडी हो गया हूं

भोपाल (नप्र)। केन्द्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान आज विजयपुर और बुधनी उपचुनाव में जनसभाओं को संबोधित किया। बुधवार सुबह उन्होंने भोपाल के स्मार्ट पार्क में पौधारोपण किया। कुरवाई विधायक हरिसिंह सप्रे और सामाजिक संस्थाओं के लोगों के साथ पौधारोपण करने के बाद शिवराज सिंह चौहान ने कहा- अभी झारखंड और महाराष्ट्र में चुनाव है। मैं तो आजकल झारखंडी हो गया हूं। वहीं रह रहा हूं।

इंडी गठबंधन की गारंटी झूठ का पुलिंदा: झारखंड में कांग्रेस-जेएमएम गठबंधन द्वारा दी गई गारंटियों पर शिवराज सिंह चौहान ने कहा- इंडी गठबंधन की गारंटी झूठ का पुलिंदा हैं। क्योंकि जेएमएम और कांग्रेस ने पिछली बार भी गारंटियां दी थीं। इन्होंने कहा था कि हम 5 लाख सरकारी नौकरियां देंगे, लेकिन नहीं दी। इन्होंने कहा था कि हर महिला को दो हजार रुपए चूल्हा खर्च देंगे, नहीं दिया। चुनाव के दो महीने पहले केवल एक योजना ले आए, एक हजार रुपए देने की। इन्होंने कहा था कि बेरोजगारों को बेरोजगारी भत्ता देंगे, नहीं दिया।

कांग्रेस ने 344, जेएमएम ने 117 वादे किए,एक भी पूरा नहीं हुआ, जनता को सिर्फ भाजपा पर भरोसा

आज अपने परिवार से मिलने जाना मेरा सौभाग्य: बहनों को, बेटियों को शासकीय नौकरियों में 35 प्रतिशत रिजर्वेशन देने का जो हमारा संकल्प था, उस पर अमल किया गया है। ऐसी एक नहीं कई चीजें हैं। प्रदेश में डबल इंजन की सरकार है और प्रधानमंत्री मोदी जी का आशीर्वाद मध्य प्रदेश पर लगातार बरस रहा है। इसलिए मध्य प्रदेश की जनता बीजेपी के साथ है। बुधनी और विजयपुर में भी जनता को ये विश्वास है कि विकास होगा तो भाजपा की सरकार ही करेगी। वैसे भी चाहे बुधनी हो या विजयपुर, जनता हमारे लिए अपना परिवार है। मेरा सौभाग्य है कि आज अपने परिवार से मिलने मैं भी जा रहा हूं।

राहुल गांधी विदेशों में कहते हैं हम आरक्षण खत्म कर देंगे

शिवराज सिंह चौहान ने कहा- राहुल गांधी तो विदेशों में बैठकर ये भी कहते हैं कि समय आने पर हम आरक्षण खत्म कर देंगे, उनकी कौन सी बात पर विश्वास करें। जहां तक विजयपुर और बुधनी के उपचुनाव का सवाल है। मोहन जी के नेतृत्व वाली सरकार प्रदेश के विकास के लिए और जनता के लिए जो काम कर रही है, वो प्रदेश को नई ऊंचाइयों पर ले जा रहे हैं। जनकल्याण का नया इतिहास रच रहे हैं।

बीजेपी के संगठन में महिलाओं की भागीदारी बढ़ेगी

बूथ से लेकर जिलाध्यक्ष तक के चुनाव में मिलेगा मौका; 21 को दिल्ली में बैठक

वैशाली महाले, जिला अध्यक्ष भाजपा, पांढुर्णा

कविता पाटीदार, प्रदेश महामंत्री व राज्यसभा सांसद

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश की मोहन कैबिनेट ने सरकारी नौकरियों में महिलाओं को 35 फीसदी आरक्षण देने का फैसला किया है। इस फैसले से यह साफ हो गया है कि बीजेपी महिला वोटर्स पर अपनी पकड़ कमजोर नहीं होने देना चाहती। अगले महीने में संभावित बीजेपी के संगठन चुनाव में महिला नेत्रियां मंडल अध्यक्ष, जिला अध्यक्ष के चुनाव में दावेदारी करेंगी। 21 नवंबर को दिल्ली में बीजेपी के संगठन चुनाव को लेकर बैठक होगी। इस बैठक में एमपी के चुनाव अधिकारी विवेक शेजवलकर, सह चुनाव अधिकारी रजनीश अग्रवाल, जीतू जिराती, अर्चना चिटनीस, और डॉ. प्रभुलाल जाटव शामिल होंगे। इसी बैठक में मंडल अध्यक्ष, जिला अध्यक्ष और प्रदेश अध्यक्ष के चुनाव का शेड्यूल और टाइमलाइन जारी होगी।

14 से 20 नवंबर तक होंगे बूथ समितियों के चुनाव: बीजेपी ने 2 सितंबर से 15 अक्टूबर तक सदस्यता अभियान चलाया। इसके बाद सक्रिय सदस्यता का अभियान चला। अब बीजेपी के संगठन चुनाव की प्रक्रिया चल रही है। इसके तहत 14 नवंबर से 20 नवंबर तक एमपी में बूथ समितियों के चुनाव होंगे। इसमें बूथ अध्यक्ष सहित 11 सदस्यीय बूथ समिति का गठन किया जाएगा।

बूथ समिति में 3 महिलाओं को शामिल करना जरूरी

बीजेपी ने संगठन चुनाव को लेकर बनाई गई गाइडलाइन में यह तय किया है कि बूथ समिति में अनिवार्य रूप से 3 महिलाओं को शामिल किया जाए। बूथ समितियों के चुनावों को लेकर जिला स्तर से लेकर मंडल, शक्ति केंद्र स्तर तक कार्यशालाएं हो रहीं हैं। इसके बाद बूथ समितियों के चुनाव होंगे।

प्रदेश के 19 जिलों में ट्रायबल मल्टी-पर्पज मार्केटिंग सेंटर्स की स्थापना के लिये प्रस्ताव भेजा

धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान के तहत बनेंगे टीएमएमसी

भोपाल (नप्र)। जनजातीय कार्य, लोक परिसम्पत्ति प्रबंधन तथा भोपाल गैस त्रासदी राहत एवं पुर्नवास मंत्री डॉ. कुंवर विजय शाह ने कहा है कि देश के सभी जनजातीय बहुल गांवों के समग्र विकास एवं जनजातियों को देश में हो रहे चहुंमुखी विकास के प्रकाश का लाभ देने के लिये केन्द्र सरकार द्वारा धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान चलाया जा रहा है। इस अभियान में प्रदेश के 51 जिलों के 267 विकासखंडों में स्थित 11 हजार 377 जनजातीय बहुल गांवों का संर्वागीण विकास किया जायेगा। इन 51 जिलों में 43 जनजातीय समुदायों के 18 लाख 58 हजार परिवार निवास करते हैं, जिनकी कुल 93 लाख 23 हजार आबादी इस अभियान से सीधे तौर पर लाभान्वित होगी। जनजातीय कार्य मंत्री डॉ. शाह ने बताया कि अभियान में केन्द्र सरकार द्वारा देशभर में 100 ट्रायबल मल्टी-पर्पज मार्केटिंग सेंटर्स (टीएमएमसी) या कहें 'जनजातीय ग्रामीण हाट बाजार' तैयार करने की योजना है। इसमें 'पहले आयें-पहले पायें' की तर्ज पर केन्द्रीय जनजातीय कार्य मंत्रालय को जिस राज्य/केन्द्र शासित प्रदेश से सबसे पहले प्रस्ताव मिलेंगे, उन्हें प्राथमिकता से यह टीएमएमसी आवंटित किये जायेंगे। उन्होंने बताया कि मध्यप्रदेश सरकार ने इस दिशा में त्वरित एवं प्रगतिशील कदम उठाते हुए केन्द्रीय जनजातीय कार्य मंत्रालय के सचिव को वित्त वर्ष 2024-25 में प्रदेश के 19 जिलों में एक-एक टीएमएमसी स्थापित करने का अधिकृत प्रस्ताव भेज दिया है।

रीवा-इंदौर के लिए स्पेशल ट्रेन

6 नवंबर को रीवा, 7 को इंदौर से चलेगी; संत हिरदाराम नगर, भोपाल, आरकेएमपी पर हॉल्ट

भोपाल (नप्र)। रेलवे ने यात्रियों की सहूलियत के लिए इंदौर और रीवा के बीच स्पेशल सिंगल ट्रिप ट्रेन चलाने का फैसला लिया है। रीवा - इंदौर - रीवा के बीच एक-एक फेरे के लिए स्पेशल ट्रेन चलाई जा रही है। गाड़ी संख्या 02186/02185 रीवा-इंदौर-रीवा स्पेशल ट्रेन, रीवा से 6 नवंबर 2024 को और इंदौर से 7 नवंबर को एक-एक फेरे के लिए चलेगी। यह गाड़ी रीवा से चलकर सतना, मैहर, कटनी, जबलपुर, नरसिंहपुर, पिपरिया, इटारसी, नर्मदापुरम, रानी कमलापति, भोपाल, संतहिरदा रामनगर और उज्जैन होकर इंदौर स्टेशन पर पहुंचेंगी।

ऐसा है शेड्यूल

गाड़ी संख्या 02186 रीवा-इंदौर स्पेशल- रीवा से रात 8.45 बजे रवाना होगी। सतना 9.45 बजे, मैहर 10.13 बजे, कटनी 11.05 बजे पहुंचकर अगले दिन जबलपुर मध्यरात्रि 12.20 बजे, नरसिंहपुर 1.35 बजे, पिपरिया 2.40 बजे, इटारसी जंक्शन 4.20 बजे, नर्मदापुरम 5.00 बजे, रानी कमलापति 6.10 बजे, भोपाल 6.30 बजे, संत हिरदाराम नगर 7.00 बजे, उज्जैन 9.00 बजे पहुंचकर सुबह 11.10 बजे इंदौर स्टेशन पहुंचेगी। गाड़ी संख्या 02185 इंदौर-रीवा स्पेशल- इंदौर से दोपहर 1 बजे रवाना होगी। उज्जैन 2.25 बजे, शाम 5.20 बजे संत हिरदाराम नगर, शाम 5.50 बजे भोपाल पर हॉल्ट लेगी। रानी कमलापति स्टेशन पर शाम 6.07 बजे, नर्मदापुरम 7.13 बजे, इटारसी जंक्शन 8 बजे, पिपरिया 9.10 बजे, नरसिंहपुर 10.23 बजे, जबलपुर 11.40 बजे पहुंचकर अगले दिन कटनी मध्य रात्रि 1 बजे, मैहर 1.53 बजे, सतना 2.35 बजे पहुंचकर मध्य रात 3.45 बजे रीवा पहुंचेगी।

15 फीट हवा में उछला ढाई साल का मासूम, मौत

जबलपुर में स्कॉर्पियो ने मारी स्कूटी को टक्कर; परिजन का थाने के सामने धरना

जबलपुर (नप्र)। जबलपुर में मंगलवार देर रात स्कॉर्पियो ने स्कूटी को टक्कर मार दी। स्कूटी सवार दंपती में से पिता की गोद में बैठा ढाई साल का मासूम हवा में करीब 15 फीट ऊंचा उछला और जमीन पर आ गिरा। उसकी मौके पर ही मौत हो गई। दंपती घायल हैं। हादसा कोतवाली थाना इलाके के उखरी चौक पर देर रात करीब पौने 2 बजे का है। स्कॉर्पियो सवार गाड़ी लेकर मौके से भाग निकला। दंपती की शिकायत पर पुलिस ने अज्ञात वाहन के खिलाफ मामला दर्ज कर उसकी तलाश शुरू की। बुधवार सुबह करीब साढ़े 10 बजे स्कॉर्पियो गाड़ी जब्त कर ली गई लेकिन ड्राइवर फरार है। पुलिस के मुताबिक, तमरहाई निवासी सौरभ अग्रवाल, पत्नी सुरभि और ढाई साल के बेटे प्रणीत के साथ रिश्तेदारों से मिलने गए थे। लौटते में स्कूटी पत्नी चला रही थी। इसी दौरान तेज रफ्तार स्कॉर्पियो ने टक्कर मार दी। घायल माता-पिता बच्चे को लेकर विजय नगर स्थित निजी अस्पताल पहुंचे। यहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया।

प्रणीत

पुलिस पर लापरवाही का आरोप, थाने के सामने धरना: परिवार के लोगों ने पुलिस पर लापरवाही का आरोप लगाते हुए बुधवार सुबह कोतवाली थाने के सामने धरना दिया। उन्होंने कहा कि पुलिस के ढीले रवैये की वजह से स्कॉर्पियो चालक न केवल भागने में सफल रहा, बल्कि अब तक उसकी गिरफ्तारी भी नहीं हो सकी है।

20-30 की स्पीड में स्कूटी चला रही थी सुरभि: सौरभ ने कहा, हम दीनदयाल चौक से यादव कॉलोनी की ओर आ रहे थे। ई-स्कूटी सुरभि चला रही थी। बेटा प्रणीत दोनों के बीच में मेरी गोद में था। स्कॉर्पियो ने टक्कर मारी तो प्रणीत मेरे हाथों से छूटकर 15 फीट तक हवा में उछला। फिर 10 फीट दूर सड़क किनारे जा गिरा। टक्कर मारने के बाद स्कॉर्पियो ड्राइवर स्कूटी के ऊपर से गाड़ी चढ़ाते हुए भाग निकला। हम प्रणीत को अंधेरे में तलाशते रहे। थोड़ी देर बाद वह सड़क किनारे पड़ा दिखाई दिया। उसे लेकर फौरन निजी अस्पताल पहुंचे।

इकलौते बेटे की मौत से मां सदमे में: हादसे की जानकारी मिलते ही देर रात परिजन भी अस्पताल पहुंच गए। सुरभि से सुबह तक बच्चे की मौत की बात छुपाकर रखी गई। ढाई साल के बेटे की मौत का पता लगते ही वह बदहवास हो गई। परिजन ने बताया कि सौरभ और सुरभि की शादी को 14 साल हो गए हैं। शादी के 11 साल बाद कई जगह पूजा-पाठ और मन्नत मांगने पर प्रणीत का जन्म हुआ था। उसके आने से परिवार बहुत खुश था लेकिन अब आंसू नहीं थम रहे हैं।